A Daily News Magazine
भोपाल
बुधवार, 13 नवंबर, 2024

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-74 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

झारखंड : 'बांग्लादेशी घुसपैठ' का मुद्दा भाजपा के लिए कितना फायदेमंद?

विष्णुकांत तिवारी

छत्तीस साल की सरीना हांसदा संथाल आदिवासी हैं। उनके पति का नाम मोहम्मद एजाज़ है। दोनों झारखंड के साहिबगंज ज़िले के बरहेट गाँव में आमने-सामने रहते थे। दोनों को प्यार हुआ और 14 साल पहले उन्होंने शादी कर ली। सरीना अब मुखिया हैं। वो कहती हैं कि राज्य में चुनाव प्रचार के दौरान उनके पति समेत इलाक़े के मुसलमानों को जिस तरह से 'बांग्लादेशी घुसपैठिया' कहकर टारगेट किया जा रहा है, उससे वह दुखी हैं। सरीना कहती हैं, 'मैं एक आदिवासी महिला हूँ। मेरे पति मुस्लिम हैं।' चुनाव प्रचार के दौरान भारतीय जनता पार्टी लगातार कह रही है कि 'बांग्लादेशी घुसपैठिए' यहाँ की आदिवासी महिलाओं से शादी करके उनको मिलने वाले फ़ायदों का बेजा इस्तेमाल कर रहे हैं और उनके नाम की ज़मीन हड़प रहे हैं। इस पर सरीना कहती हैं, 'हमें आदिवासी होने का लाभ दिया जा रहा है, इसलिए हम लोग लाभ ले रहे हैं। मुझे इस अधिकार के तहत मुखिया का चुनाव लड़ने का मौक़ा मिला। इसका हमारी शादी से कोई लेना-देना नहीं है। हमें हमारा जीवन साथी चुनने का अधिकार है और इस पर राजनीति नहीं होनी चाहिए। सरीना के पति मोहम्मद एजाज़ कहते हैं,' हमारे यहां बार-बार इस चुनाव में भाजपा बांग्लादेशी घुसपैठ का मुद्दा उठा रही है लेकिन उन्हें यहाँ बांग्लादेशी नहीं मिलेंगे। चुनाव में भाजपा के पास कोई और मुद्दा नहीं है।

झारखंड में 13 और 20 नवंबर को दो चरणों में चुनाव है। भारतीय जनता पार्टी लगातार राज्य के इस इलाक़े में 'बांग्लादेशी घुसपैठ' का मुद्दा उठा रही है। 20 सितंबर को झारखंड में एक चुनावी रैली के दौरान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा था, 'एक बार झारखंड सरकार बदल दीजिए। मैं आपको वादा करता हूँ कि रोहिंग्या और बांग्लादेशी घुसपैठियों को चुन-चुनकर झारखंड के बाहर भेजने का काम भारतीय जनता पार्टी करेगी। ये हमारी सभ्यता को नष्ट कर रहे हैं। हमारी संपत्ति को हड़प रहे हैं।' हमारी बेटियों के साथ अलग-अलग प्रकार से नक़ली शादी रचा रहे हैं। हमारे रोज़गार को भी वो लूटने का काम करते हैं। झारखंड के अंदर कोई घुसपैठिए की जगह नहीं, ये बीजेपी की सरकार ही कर सकती है।

तब शाह के बयान पर बांग्लादेश के विदेश मंत्रालय ने कहा था, 'ज़िम्मेदार पदों पर बैठे लोगों की ओर से पड़ोसी देशों के नागरिकों पर की गई ऐसी टिप्पणियों से आपसी सम्मान और समझ की भावना कमज़ोर पड़ती है।' लेकिन अमित शाह ने एक बार फिर तीन नवंबर को राज्य में प्रचार के दौरान कहा, 'सोरेन सरकार ने झारखंड के दरवाज़े बांग्लादेशी घुसपैठियों के लिए खोल दिए हैं। हमारी सरकार राज्य में आएगी तो इन घुसपैठियों को चुन-चुनकर बाहर निकालेगी।'

माना जाता है कि राज्य में सत्ता की चाबी संथाल परगना के छह ज़िलों के वोटरों के हाथ में होती है और यहाँ से जो भी बढ़त बनाता है, उसकी सरकार बनाने की संभावना भी मज़बूत हो जाती है। ये क्षेत्र हेमंत सोरेन की झारखंड मुक्ति मोर्चा के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न है।

वहीं दूसरी ओर भाजपा के लिए ये इलाक़ा दोबारा सत्ता तक पहुंचाने में सबसे अहम सीढ़ी है और इसलिए भाजपा ने इस इलाक़े में चुनाव प्रचार की शुरुआत से ही आदिवासी अस्मिता, कथित बांग्लादेशी घुसपैठ से आदिवासियों को ख़तरा और इलाक़े की जनसांख्यिकी यानी कि डेमोग्राफी को मुद्दा बनाना शुरू किया है।

दिलचस्प बात ये है कि बांग्लादेशी घुसपैठ के मुद्दे पर केंद्र सरकार का कोर्ट में कुछ और ही कहना है। 'बांग्लादेशी घुसपैठ' को लेकर साल 2022 में जमशेदपुर के रहने वाले दानियाल दानिश ने झारखंड हाई कोर्ट में एक जनहित याचिका डाली थी। लेकिन कोर्ट में गृह मंत्रालय ने अपने जवाब में कहा है, 'झारखंड राज्य सहित देश में रहने वाले ऐसे अवैध प्रवासियों की संख्या के बारे में सटीक आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं।' वहीं दूसरी तरफ भाजपा नेता और राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की सदस्य आशा लाकड़ा के नेतृत्व में आयोग ने एक रिपोर्ट जारी की। इसमें दावा किया गया कि बीते लगभग सात दशक में झारखंड के संथाल परगना में जनसंख्या में हुए बदलाव का कारण कथित तौर पर बांग्लादेशी घुसपैठ है। इसी रिपोर्ट में साहिबगंज ज़िले की नौ पंचायतों का उदाहरण देते हुए 'बांग्लादेशी घुसपैठ' को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए ख़तरा बताया गया है।

लेकिन केंद्र सरकार ने कोर्ट में कहा, 'मौजूदा भूमि क़ानूनों में खामियों का दुरुपयोग करने के मामले सामने आए हैं, जैसे कि मुसलमानों द्वारा क्षेत्र में भूमि अधिग्रहण करने के लिए 'दानपत्र' (उपहार) के हलफ़नामे के माध्यम से आदिवासी भूमि को ग़ैर-आदिवासी को हस्तांतरित करना। इनमें से किसी भी भूमि संबंधी मामले में बांग्लादेशी प्रवासियों से संबंध स्थापित नहीं हो पाए हैं।'

जहाँ भारतीय जनता पार्टी के नेता दावे कर रहे हैं कि बांग्लादेशी घुसपैठ की वजह से संथाल परगना की डेमोग्राफ़ी ही बदल गई है। वहीं केंद्र सरकार ने 1951 और 2011 के जनसांख्यिकी की तुलना करते हुए ये बताया, 'वर्ष 1951 में संथाल परगना में अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या का हिस्सा 44.67 प्रतिशत था जो 2011 में घटकर 28.11 फ़ीसदी हो गया था। हालांकि बाहरी प्रवास, ईसाई धर्म अपनाने वाले आदिवासियों में कम शिशु जन्म दर और अन्य कारणों से जनजातीय आबादी में कमी की मात्रा का भी आकलन किया जाना चाहिए।'

पिछले विधानसभा चुनाव में झारखंड मुक्ति मोर्चा और कांग्रेस ने मिलकर संथाल परगना की 18 में से 13 सीटें जीती थीं जबकि भाजपा को सिर्फ़ 4 सीटें मिल पाई थीं। भाजपा को लग रहा है कि बांग्लादेशी घुसपैठ का मुद्दा उन्हें इलाक़े के आदिवासी समुदाय का वोट दिला सकता है। युवा भाजपा नेता सुनील ठाकुर का कहना है कि ये संथाली आदिवासी वोटरों को साधने के लिए मुद्दा बनाया जा रहा है। हमारे यहाँ दरअसल तीन वोट बैंक है। एक है हिंदू वोट जो भाजपा की ओर मुख्य तौर पर जाता है। एक है मुस्लिम वोट जो मुख्य तौर पर 'इंडिया' गठबंधन को जाता है। तीसरा वोट है संथाल आदिवासियों का। अभी जो बांग्लादेशी घुसपैठ का मुद्दा उठाया गया है, ये उसी लिए उठाया गया है कि जो हिंदू वोट है वो तो एकजुट रहे ही साथ ही संथाल आदिवासियों का वोट भी भाजपा को मिले। झारखंड में बांग्लादेशी घुसपैठ का मुद्दा भले ही चुनावी मंचों पर गरमाया हो, लेकिन ज़मीन पर रहने वाले लोगों के लिए असली चिंताएं आज भी रोज़गार, शिक्षा और बुनियादी सुविधाओं की हैं।

(बीबीसी हिन्दी में प्रकाशित रिपोर्ट के संपादित अंश)

'अघाड़ी' मतलब भ्रष्टाचार के सबसे बड़े खिलाड़ी...

● पीएम मोदी ने चिमूर की रैली में कांग्रेस को निशाने पर लिया ● 40 साल पुराने विज्ञापन के जरिए बताया आरक्षण का विरोधी ● पीएम मोदी ने कहा-महायुति की सरकार से होगी दोहरी तरक्की

मुंबई (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महाराष्ट्र के चिमूर में बीजेपी की चुनावी सभा को संबोधित करते हुए विपक्ष के गठबंधन महाविकास आघाडी (एमवीए) पर बड़ा हमला बोला। पीएम मोदी ने कहा कि कांग्रेस और अघाड़ी वाले देश को पीछे करने का, देश को कमजोर करने का कोई मौका नहीं छोड़ते। उन्होंने कहा कि ये भ्रष्टाचार के सबसे बड़े खिलाड़ी हैं। पीएम मोदी ने चिमूर की रैली आई भीड़ को संबोधित करते हुए केहा कि महाराष्ट्र में चुनाव के क्या नतीजे आने वाले हैं, ये आप लोगों ने आज ही दिखा दिया है। ये जनसैलाब बता रहा है कि महाराष्ट्र में महायुति की भारी बहुमत से सरकार बनने जा रही है। पीएम मोदी ने सभा में कांग्रेस के 1984 के विवादित विज्ञापन के मुद्दे को भी उठाया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि कांग्रेस ने 1984 के एक विज्ञापन को कोटा की आवश्यकता पर सवाल उठाया गया था। पीएम मोदी ने कहा कि मैं आज महाराष्ट्र बीजेपी को भी बधाई दूंगा, जिसने बहुत ही शानदार संकल्प पत्र जारी किया है। इस संकल्प पत्र में लाड़की बहनों के लिए, हमारे किसान भाई-बहनों के लिए, युवाशक्ति के लिए, महाराष्ट्र के विकास के लिए एक से बढ़कर एक शानदार संकल्प लिए गए हैं। पीएम मोदी ने कहा कि महायुति के साथ-साथ केंद्र में एनडीए की सरकार यानी महाराष्ट्र में डबल इंजन की सरकार, यानी विकास की डबल रफ्तार। महाराष्ट्र के लोगों पिछले 2.5 वर्षों में विकास की इस डबल रफ्तार को देखा है। आज महाराष्ट्र देश का वो राज्य है, जहां सबसे ज्यादा विदेशी निवेश हो रहा है। महाराष्ट्र का तेज विकास हो रहा है।

कालिदास समारोह में बोले उप राष्ट्रपति धनखड़

हमारे पास रहने के लिए दूसरी धरती नहीं

महाकवि कालिदास की रचनाएं हमारे देश की अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन में 66वें अखिल भारतीय कालिदास समारोह का शुभारंभ उप राष्ट्रपति जगदीश धनखड़ ने किया। उन्होंने अलग-अलग क्षेत्रों के कलाकारों को कालिदास राष्ट्रीय अलंकरण सम्मान दिए। उन्होंने जय महाकाल ने अपने भाषण की शुरुआत की। उन्होंने कहा कि भारत जैसा कोई दूसरा देश नहीं है, जहां ऐसी सांस्कृतिक विरासत हो। जो देश और समाज अपनी संस्कृति और सांस्कृतिक धरोहर को संभालकर नहीं रखता, वो ज्यादा दिन नहीं टिकता है। उपराष्ट्रपति ने जय महाकाल कहकर ही भाषण समाप्त किया।

कालिदास की रचनाओं में भावनाओं का संगम है- उप राष्ट्रपति ने कहा, कालिदास की अभिज्ञान शाकुंतलम, मेघदूतम और कुमारसंभव रचनाएं ऋतु और मार्ग का नियमित क्रम मानवीय भावनाओं का अद्भुत संगम है। ऐसा संगम है, जो हमारे लिए सदैव प्रेरणा का स्त्रोत रहेगा। इन रचनाओं में आप देखेंगे मानव और प्रकृति के बीच एक अटूट रिश्ता प्रेम की पवित्रता का मिलता है। मैं यही कहूंगा कि शरीर नश्वर है, परंतु कीर्ति सदैव अमर रहती है। यह वाक्य मेरे नहीं है, यह महाकवि कालिदास के हैं। यह हमारे जीवन दर्शन का मूल आधार होना चाहिए, आइए हम सब मिलकर महाकवि कालिदास की इस अमूल्य विरासत पर गर्व करें।

कालिदास की रचना में भी नारी शक्ति दिखती है- उप राष्ट्रपति ने कहा- कोई भी देश इस बात पर नहीं चलता कि हम अधिकारों पर जोर दें, हमें अपने दायित्वों से अधिकारों को संतुलित करना होगा। मन को टटोलिए, हम महान भारत के रहवासी हैं। राष्ट्र को सर्वोपरि रखते हैं। इसमें हर नागरिक को आहूति देनी है। आज की सरकार ने लोकसभा और राज्यसभा में एक तिहाई आरक्षण देकर महिला शक्तिकरण किया है। कालिदास की रचना में भी नारी शक्ति देखने को मिलती है। इन कृतियों में कुटुम्ब का ध्यान रखने की भी सीख छिपी हुई है। हमें पता होना चाहिए हमारे पड़ोस में और हमारे समाज में कौन है।

भारत जैसी सांस्कृतिक विरासत कही नहीं- उपराष्ट्रपति धनखड़ ने कहा- भारत जैसा कोई दूसरा देश नहीं है, जहां ऐसी सांस्कृतिक विरासत हो। जो देश और समाज अपनी संस्कृति और सांस्कृतिक धरोहर को संभालकर नहीं रखता, वो ज्यादा दिन नहीं टिकता है।

कालिदास की रचनाओं के बीच मानव और प्रकृति का अटूट रिश्ता- उपराष्ट्रपति ने कहा, कालिदास की रचनाओं के बीच मानव और प्रकृति का अटूट रिश्ता देखने को मिलता है। पर्यावरण आज की ज्वलंत समस्या है। इसका ज्ञान हमें महाकवि कालीदास की रचनाओं से मिलता है कि पर्यावरण संरक्षण जरूरी है।

सुप्रभात

तौबा क्या अफ़साना निकला
बादल भी परवाना निकला
आँसू साथ बहाने बैठा
वो मुझ सा दीवाना निकला
बाहर जिसमें खूब रवानी
भीतर से वीराना निकला
जिस ने रस्ता काटा मेरा
इक हमदर्द पुराना निकला
दस्तक में तो उम्मीदें थीं
वो दर ही अनजाना निकला
भोला-भाला दिखने वाला
अस्ल में खूब सयाना निकला
हमने परख कर ग़लती कर दी
हर कोई बेगाना निकला।

- डॉ.पूनम यादव

मोहन कैबिनेट में हुए महत्वपूर्ण फैसले

एमपी के गांवों में बनेंगे 3.50 लाख पीएम आवास

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि विजन डॉक्यूमेंट @ 2047 विकसित मध्यप्रदेश का आधार होगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। वर्ष 2047 तक मध्यप्रदेश को विकसित राज्य बनाने के उद्देश्य से 'विकसित मध्यप्रदेश @ 2047 विज़न डॉक्यूमेंट' तैयार किया जा रहा है। पिछले सप्ताह इस संबंध में नीति आयोग के सीईओ श्री बी.वी. आर. सुब्रमण्यम ने राज्य के प्रमुख अधिकारियों के साथ विस्तृत बैठक की थी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंत्रीगण को अपने-अपने विभागों में विजन डॉक्यूमेंट की तैयारी की समीक्षा करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि आगामी तीन माह में डॉक्यूमेंट का प्रारूप मंत्रि-परिषद के समक्ष प्रस्तुत किया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मंत्रि-परिषद की बैठक से पहले संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद की बैठक मंत्रालय में वंदे-मातरम् के गान साथ आरंभ हुई।

एमपी के ग्रामीण इलाकों में पीएम आवास योजना 2.0 के तहत 3.50 लाख मकान बनाए जाएंगे। एक मकान के लिए डेढ़ लाख रुपए की सरकारी मदद मिलेगी। डॉ. मोहन यादव की कैबिनेट ने मंगलवार को बैठक में इसकी मंजूरी दी है। कैबिनेट के फैसलों की जानकारी देते हुए स्कूल शिक्षा मंत्री उदय प्रताप सिंह ने बताया कि पीएम आवास योजना में एमपी को भी टारगेट मिला है। कैबिनेट बैठक में इस पर चर्चा हुई है। एमपी में आने वाले समय में पीएम आवास योजना के अंतर्गत शहरी व ग्रामीण इलाकों में समान काम किया जाएगा।

शहरी क्षेत्र में 2.50 लाख रुपए मिलेंगे

ग्रामीण क्षेत्र में पीएम आवास के पहले चरण की कैबिनेट में मंजूरी मिलने के बाद अब शहरी क्षेत्र के लिए भी कैबिनेट में प्रस्ताव आएगा। नगरीय विकास एवं आवास विभाग इसकी तैयारी कर रहा है। शहरी क्षेत्र के लिए पीएम आवास 2.0 की गाइड लाइन आ चुकी है। इसके मुताबिक चार स्तर पर काम होगा- 1. पहला -मकान के लिए आर्थिक मदद मिलेगी, 2. सरकार सस्ते मकान बनाकर देगी, 3. किराए पर भी मकान मिलेगा,4. होम लोन के ब्याज पर सब्सिडी दी जाएगी। शहरी क्षेत्र में ढाई लाख रुपए तक की आर्थिक मदद मिलेगी।

कैबिनेट में सोलर एनर्जी को लेकर हुए कई फैसले

- मुरैना में सोलर पावर स्टोरेज कैपेसिटी डेवलप की जाएगी।
- नर्मदापुरम जिले के बाबई में सोलर एनर्जी के लिए 214 एकड़ जमीन आरक्षित की गई है।
- अब और 311.44 एकड़ जमीन आरक्षित की गई है।
- इसके अलावा भोपाल जिले के भौंरी में भी सोलर एनर्जी के लिए 21.494 हेक्टेयर जमीन आरक्षित की गई है।
- रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव के पहले यह तैयारी की गई है। इसका भूमि पूजन सात दिसंबर को हो सकता है।

हिंदुत्व की पिच पर योगी की आक्रामक बैटिंग

● विधानसभा चुनाव में मास्टरस्ट्रोक साबित होगा 'बंटेंगे तो कटेंगे' का नारा ● पीएम मोदी और आरएसएस का भी मिला समर्थन,विपक्ष के दांव हुए फेल

लखनऊ (एजेंसी)। टीवी चैनलों से लेकर अखबारों और सोशल मीडिया के अलावा नुक्कड़-चौराहों पर होने वाली राजनीतिक बहस पर आप गौर करेंगे तो इन दिनों एक ही नारे की चर्चा आपको लगभग हर जगह मिलेगी। यह नारा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के द्वारा दिया गया 'बटेंगे तो कटेंगे' का है। अगस्त में जब बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना को अपना मुल्क छोड़ना पड़ा था और बांग्लादेश के हिंदू समुदाय पर हमले की खबरें सामने आई थी तब योगी आदित्यनाथ ने इस नारे को गढ़ा था। उसके बाद उत्तर प्रदेश में 9 सीटों के लिए हो रहे उपचुनाव और महाराष्ट्र और झारखंड के चुनाव तक में

इस नारे की गूंज सुनाई दे रही है। सोशल मीडिया के बेहद तेज रफ्तार वाले दौर में 'बटेंगे तो कटेंगे' के नारे को लेकर हो रही बयानबाजी को लेकर सपा और बीजेपी के बीच उत्तर प्रदेश में पोस्टर वार भी चल रहा है। सवाल यह है कि क्या यह नारा महाराष्ट्र और झारखंड के चुनाव और उत्तर प्रदेश और अन्य राज्यों के उपचुनाव में असर करेगा। इस नारे को लेकर कांग्रेस, सपा और अन्य विपक्षी दलों ने तो बीजेपी और योगी आदित्यनाथ की आलोचना की ही है, महाराष्ट्र में बीजेपी के सहयोगी दल एनसीपी (अजित पवार गुट) ने भी इस नारे से किनारा कर लिया है।

बीजेपी और हिंदुत्व के स्टार चेहरे बने योगी

पिछले कुछ सालों में योगी आदित्यनाथ हिंदुत्व के नए चेहरे के रूप में उभर कर सामने आए हैं। गोरखपुर में स्थित गोरक्ष पीठ के महंत योगी आदित्यनाथ ने 2017 में उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री की कुर्सी संभालने के बाद से ही कई राज्यों में बीजेपी के लिए धुआंधार चुनाव प्रचार किया है। उनकी न सिर्फ उत्तर भारत के राज्यों में बल्कि दक्षिण में भी बड़ी डिमांड है। बीजेपी ने योगी आदित्यनाथ को सुशासन के चेहरे के रूप में भी आगे किया है और दावा किया है उनके नेतृत्व में यूपी ने जबरदस्त तरक्की की है। खुद प्रधानमंत्री मोदी कई मौकों पर योगी आदित्यनाथ की खुलकर तारीफ कर चुके हैं। महाराष्ट्र और झारखंड के साथ ही उत्तर प्रदेश और अन्य राज्यों के उपचुनाव के नतीजे जब आएंगे तो इस बात का आंकलन जरूर होगा कि हिंदुत्व की राजनीति वास्तव में कितना असर करती है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 30 °c | न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ बुधवार, 13 नवंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

ट्रम्प ने चीन विरोधी माइक वॉल्ट्ज को बनाया एनएसए

- भारत से दोस्ती रखने के हैं हिमायती

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में जीत के बाद डोनाल्ड ट्रम्प ने फ्लोरिडा के सांसद माइक वॉल्ट्ज को देश का नेशनल सिक्योरिटी एडवाइजर नियुक्त करने का फैसला किया है। न्यूयॉर्क टाइम्स के मुताबिक, इस फैसले से परिचित दो सूत्रों ने ये जानकारी दी है। माइक वॉल्ट्ज को चीन-ईरान का विरोधी और भारत समर्थक माना जाता है। वे चीन पर अमेरिका की निर्भरता कम करने से जुड़े कई विधेयकों का समर्थन कर चुके हैं। वॉल्ट्ज अमेरिकी सेना की स्पेशल यूनिट फोर्स में ग्रीन बेरे कमांडो रह चुके हैं और तालिबान के साथ अफगानिस्तान में जंग भी लड़ चुके हैं।

झारखंड-बंगाल में वोटिंग से पहले ईडी की छापेमारी

17 जगहों पर सर्चिंग जारी

रांची (एजेंसी)। प्रवर्तन निदेशालय ने मंगलवार को झारखंड और पश्चिम बंगाल में 17 जगहों पर छापेमारी की। मामला बांग्लादेशी घुसपैठ, देह व्यापार और मनी लॉन्ड्रिंग से जुड़ा बताया जा रहा है। जानकारी के मुताबिक, ईडी की टीम कई लोगों और संगठनों की सीमापार घुसपैठ से जुड़ी वित्तीय गड़बड़ियों की जांच कर रही है। झारखंड विधानसभा चुनाव में कल यानी बुधवार को पहले चरण में 43 सीटों पर वोटिंग होनी है। वहीं, पश्चिम बंगाल की 6 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव होने हैं।

शाहरुख को धमकाने वाला वकील रायपुर से गिरफ्तार

रायपुर (एजेंसी)। शाहरुख खान को धमकी देने वाले आरोपी मोहम्मद फैजान खान को मुंबई पुलिस ने मंगलवार (12 नवंबर) को रायपुर से गिरफ्तार कर लिया। एक्टर की टीम ने धमकी देने वाले के खिलाफ बांद्रा पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज करवाई थी, जिसके बाद पुलिस जांच शुरू हुई थी। जिस नंबर से शाहरुख धमकी दी गई थी, वह रायपुर में रहने वाले वकील फैजान खान के नाम पर रजिस्टर्ड था। रिपोर्ट के अनुसार, मंगलवार सुबह मुंबई पुलिस के अजय सिंह और उनकी टीम ट्रांजिट रिमांड के लिए रायपुर पहुंची। यहां फैजान को उसके घर से गिरफ्तार किया गया। आज उसे कोर्ट में पेश किया जाएगा।

एससी में तत्काल सुनवाई के लिए बदल गए नियम

● नए चीफ जस्टिस ने आते ही कर दिया यह बदलाव ● कार्यभार के दूसरे दिन ही लिया गया है बड़ा फैसला

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के नए चीफ जस्टिस संजीव खन्ना ने मंगलवार को तत्काल सुनवाई के मामलों में चली आ रही पुरानी व्यवस्था को बदलने का आदेश दिया। अब मामलों की तत्काल सुनवाई के लिए मौखिक उल्लेख की अनुमति नहीं होगी। चीफ जस्टिस ने कहा कि अब कोई मौखिक उल्लेख नहीं होगा। तत्काल सुनवाई का कारण बताते हुए ईमेल या लिखित पत्र में इसका जिक्र करना होगा। उन्होंने वकीलों से इसके लिए ईमेल या लिखित पत्र भेजने की बात कही। आमतौर पर वकील दिन की कार्यवाही की शुरुआत में चीफ जस्टिस की अगुवाई वाली पीठ के समक्ष अपने मामलों पर तत्काल सुनवाई के लिए उनका उल्लेख करते थे। चीफ जस्टिस ने न्यायिक सुधारों के लिए नागरिक-केंद्रित एजेंडे की रूपरेखा तैयार की है और कहा है कि न्याय तक आसान पहुंच

सुनिश्चित करना और नागरिकों के साथ उनकी स्थिति की परवाह किए बिना समान व्यवहार करना न्यायपालिका का संवैधानिक कर्तव्य है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सोमवार को राष्ट्रपति भवन में 51वें प्रधान न्यायाधीश के रूप में न्यायमूर्ति खन्ना को शपथ दिलाई थी। चीफ जस्टिस ने सोमवार को अपने पहले बयान में कहा न्यायपालिका शासन प्रणाली का अभिन्न, फिर भी अलग और स्वतंत्र हिस्सा है। संविधान हमें संवैधानिक संरक्षक, मौलिक अधिकारों के रक्षक और न्याय के सेवा प्रदाता होने के महत्वपूर्ण कार्य को पूरा करने की जिम्मेदारी सौंपता है। समान व्यवहार के मामले में न्याय वितरण ढांचे में सभी को सफल होने का उचित अवसर प्रदान करना आवश्यक है, चाहे उनकी स्थिति, धन या शक्ति कुछ भी हो, और ये न्यायपूर्ण और निष्पक्ष निर्णय हो। ये हमारे मूल सिद्धांतों को चिह्नित करते हैं।

5 दिन का होगा एमपी विधानसभा का शीत सत्र

3 विधायकों की शपथ होगी, अनुपूरक बजट को मिलेगी मंजूरी

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश विधानसभा का शीतकालीन सत्र 5 दिन का होगा। यह सत्र 16 से 20 दिसंबर तक चलेगा। शीतकालीन सत्र की अधिसूचना विधानसभा सचिवालय ने जारी कर दी है।

16 दिसंबर से शुरू होने वाले सत्र के दौरान तीन नए विधायकों को शपथ दिलाई जाएगी। इनमें छिंदवाड़ा जिले के अमरवाड़ा विधायक कमलेश प्रताप शाह के अलावा 23 नवंबर को घोषित होने वाले बुधनी और विजयपुर विधानसभा उपचुनाव में निर्वाचित होने वाले विधायक शामिल होंगे।

बताया जाता है कि विधानसभा सत्र के दौरान राज्य सरकार के अनुपूरक बजट को मंजूरी दी जाएगी। इसके लिए सरकार ने सभी विभागों से प्रस्ताव मांग लिए हैं और वित्त विभाग इसका परीक्षण कर रहा है। इसके अलावा इस सत्र के दौरान दो से तीन विधेयकों को भी मंजूरी दिलाई जा सकती है।

अशासकीय संकल्प की सूचना 5 दिसंबर तक दे सकेंगे विधायक- सत्र के दौरान गैर सरकारी सदस्यों के विधेयकों और संकल्पों के लिए 20 दिसंबर की तारीख तय की है। अशासकीय विधेयकों की सूचना विधानसभा सचिवालय को 20 नवंबर तक दी जा सकेगी। अशासकीय संकल्प की सूचना 5 दिसंबर तक दी जा सकेगी।स्थगन प्रस्ताव, ध्यानाकर्षण सूचना, नियम 267 क के अधीन सूचना और कैबिनेट के अविश्वास की सूचना 10 दिसंबर से विधानसभा सचिवालय में कार्यालय समय में दी जा सकेगी।

प्रलय श्रीवास्तव कायस्थम भोपाल के अध्यक्ष बने

भोपाल। कायस्थ समाज में वैचारिक गतिशीलता लाने के उद्देश्य से गठित कायस्थम भोपाल, मध्य प्रदेश की कार्यकारिणी का गठन किया गया है। जनसंपर्क विभाग के सेवानिवृत संयुक्त संचालक एवं लेखक प्रलय श्रीवास्तव को साधारण सभा की बैठक में कायस्थम का अध्यक्ष चुना गया है ।इसके साथ ही कायस्थम संस्था की कार्यकारिणी भी घोषित कर दी गई है । आर.पी. श्रीवास्तव, सुरेश श्रीवास्तव भेल और विनोद श्रीवास्तव को उपाध्यक्ष, अभय श्रीवास्तव (mvm) को महासचिव, डॉ.रश्मि सक्सेना को सचिव, मुकुल अस्थाना को कोषाध्यक्ष तथा श्री अजय भटनागर (पत्रकार) को संयुक्त सचिव नियुक्त किया गया है ।कायस्थम संस्था में 11 कार्यकारिणी सदस्यों की नियुक्ति की गई है, जिनमें प्रसिद्ध भजन गायक रवि खरे, शिक्षाविद् डॉ. रेखा श्रीवास्तव, व्यवसायी अमितेंद्र श्रीवास्तव, पत्रकार अनुराग श्रीवास्तव,सुधीर निगम ,सुनील श्रीवास्तव, आदित्य श्रीवास्तव तथा आलोक श्रीवास्तव, डॉ . नीता खरे, श्रीमती वंदना खरे, डॉ.प्रियंका श्रीवास्तव शामिल हैं ।अजय निगम एवं नितिन सक्सेना को युवा समन्वयक (यूथ कार्डिनेटर)नियुक्त किया गया है ।

आईवीआरआई बरेली की रिपोर्ट

कोदो से ही हुई हाथियों की मौत

प्रिंसिपल साइंटिस्ट बोले- साइक्लोपियाजोनिक एसिड मिला, इसी से हुई मौत

भोपाल (नप्र)। उमरिया जिले के बांधवगढ़ नेशनल पार्क में 10 हाथियों की मौतों के मामले में भोपाल से लेकर दिल्ली तक हड़कंप मचा हुआ है। इन हाथियों की मौतों की असली वजह खोजने के लिए अलग-अलग स्तर पर जांच चल रही है। यूपी के बरेली में स्थित इंडियन वेटरनरी रिसर्च इंस्टीट्यूट (आईवीआरआई) की जांच में हाथियों की मौत के लिए कोदो को ही जिम्मदार माना गया है।

(आईवीआरआई) के प्रिंसिपल साइंटिस्ट डॉ. अभिजीत पावड़े ने इसकी पुष्टि की है। डॉ. पावड़े ने कहा, कोदो में सिप्लाजोनिक एसिड के मानकों के अनुसार जांच की गई। हाथियों ने जिस कोदो का सेवन किया। उसमें साइक्लोपियाजोनिक एसिड का पीपीबी लेवल 100 से ज्यादा पाया गया। इसी की विषाक्तता के कारण हाथियों की मौत हुई है।

कोदो में होता है विषाक्त पदार्थ- डॉ. अभिजीत पावड़े ने हाथियों की मौत को लेकर की गई जांच के बारे में बताते हुए कहा- बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में 10 जंगली हाथियों की मृत्यु हुई। ये मौतें किस कारण हुई इसके विभिन्न कयास लगाए गए। कयासों में कोदो की फसल ज्यादा मात्रा में खाए जाने की एक वजह बताई गई। कोदो जिसमें कोदुआ नाम का एक टॉक्सिन यानी विषाक्त पदार्थ होता है। जिसकी वजह से अमूमन मौतें बताई गईं हैं। ऐसे ही बोरिस नाम के वैज्ञानिक ने 1935 में हाथियों पर लिखी किताब में एक मरे हुए ईफाउलर का भी जिक्र किया है। उसका भी एक चैप्टर है। जिसमें लिखा गया है कि, कोदुवा 100 पीपीबी से ऊपर विषाक्तता होती है। इसमें हाथी एवं पालतू पशु की मौत हो सकती है।

साइक्लोपियाजोनिक एसिड मिला, मौत की यही वजह- डॉ. अभिजीत पावड़े ने आगे कहा - हाथियों की मौत की वजह जानने के लिए सैंपल्स का विभिन्न प्रयोगशालाओं में परीक्षण हुआ। सागर की फॉरेंसिक लेबोरेटरी में भी हुआ और जबलपुर के नाना जी देशमुख वेटरनरी विश्वविद्यालय में भी हुआ। हमको इसके सैंपल्स एक नवंबर को मिले। इसमें कैडरैड के टॉक्सिकोलॉजिस्ट डॉ. एजी तेलंग, संयुक्त निदेशक कैडरैड डॉ. सोहिनी डे, वन्य प्राणी केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. एम करिकलन दिवाली के दिन, भाई दूज और लगातार प्रयास करते रहे।

10 राज्यों की 31 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव आज

केरल की 1 लोकसभा सीट भी शामिल,प्रियंका लड़ रहीं चुनाव

नई दिल्ली (एजेंसी)। झारखंड में पहले फेज की 43 सीटों के साथ ही 10 राज्यों की 31 विधानसभा और केरल की वायनाड लोकसभा सीट पर बुधवार को उपचुनाव होंगे। सिक्किम की 2 सीटों पर 30 अक्टूबर को ही सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा के दोनों प्रत्याशियों को निर्विरोध विजयी घोषित कर दिया गया था। वायनाड लोकसभा सीट पर उपचुनाव राहुल गांधी के इस सीट को छोड़कर रायबरेली सीट चुनने की वजह से हो रहा है। उन्होंने रायबरेली और वायनाड दो सीटों से चुनाव लड़ा था और दोनों पर जीते थे। यहां से उनकी बहन प्रियंका गांधी वाड्रा कांग्रेस प्रत्याशी हैं। कांग्रेस का राज्य में गठबंधन है। भाजपा की ओर से नव्या हरिदास और लेफ्ट गठबंधन से सत्यन मोकेरी चुनावी मैदान में हैं। 10 राज्यों की 31 विधानसभा सीटों में से 28 विधायकों के लोकसभा चुनाव में सांसद बनने, 2 के निधन और 1 के दलबदल से उपचुनाव हो रहे हैं। इनमें 4 सीटें एससी और 6 सीटें एसटी के लिए आरक्षित हैं। 31 में से 18 सीटें विपक्ष ने जीती थीं। इनमें अकेले कांग्रेस के पास 9 सीटें थीं। वहीं, एनडीए ने 11 सीटें जीती थीं। इनमें से 7 विधायक भाजपा के थे। 2 विधायक अन्य दलों के थे।

गुजरात के अस्पताल ने बिना अनुमति की एंजियोप्लास्टी,2 की मौत

अहमदाबाद (एजेंसी)। अहमदाबाद के एक निजी अस्पताल ने गांव में हेल्थ कैम्प लगाया। वहां से लोगों को लाकर परिजन की जानकारी के बिना 19 लोगों की एंजियोग्राफी कर दी। 7 मरीजों की एंजियोप्लास्टी कर दी गई जिनमें से 2 की मौत हो गई। 5 मरीज फिलहाल आईसीयू में भर्ती हैं। आरोप है कि ये सभी ऑपरेशन अस्पताल के डॉ. प्रशांत वजीरानी ने किए। जानकारी मिलने पर गांव वालों ने अस्पताल में तोड़फोड़ कर दी। अस्पताल प्रबंधन फिलहाल फरार है। अहमदाबाद के ख्याति हॉस्पिटल ने कादी के बोरिसाना गांव में कैंप लगाया था। वहीं से लोगों को लाया गया था। ख्याति अस्पताल सरकारी योजना का फायदा उठाने के लिए पहले भी इस तरह इलाज करता है। वर्ष 2022 में भी यहां ऐसे ही मामले में 3 मरीजों को लाया गया बाद में इनसें से एक की मौत, हो गई थी। घटना की गंभीरता को देखते हुए अहमदाबाद नगर निगम के स्वास्थ्य विभाग के प्रमुख डॉ.भाविन सोलंकी, स्टैंडिंग कमेटी अध्यक्ष देवांग दानी और पूर्व उपमुख्यमंत्री नितिन पटेल पूरे मामले की जानकारी लेने के लिए ख्याति अस्पताल पहुंचे। कोई भी जिम्मेदार डॉक्टर मौजूद नहीं है।

नीदरलैंड्स के लेखक विश्वास दुबे के काव्य संग्रह का लोकार्पण

भोपाल। रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के प्रवासी भारतीय साहित्य एवं संस्कृति शोध केंद्र द्वारा नीदरलैंड्स के हिंदी साहित्यकार श्री विश्वास दुबे के काव्य संग्रह 'एहसासों की सिलवटें' का लोकार्पण कथा सभागार में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्रख्यात कवयित्री ममता तिवारी ने पुस्तक की विस्तृत समीक्षा प्रस्तुत की ।विशिष्ट अतिथि अंतरराष्ट्रीय हिंदी के निदेशक डॉक्टर जवाहर कर्णावट ने प्रवासी शोध केंद्र की गतिविधियों के साथ ही नीदरलैंड्स में हिंदी के विस्तार पर प्रकाश डाला । कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रति -कुलपति डॉ संगीता जौहरी ने की। विश्वास दुबे ने अपनी चुनिंदा का व्य रचनाओं का पाठ किया। प्रारंभ में प्रसिद्ध कला समीक्षक विनय उपाध्याय ने स्वागत वक्त दिया। कार्यक्रम का संचालन सुश्री श्रेया शर्मा ने किया एवं आईसेक्ट प्रकाशन की प्रबंधक ज्योति रघुवंशी ने आभार माना ।कार्यक्रम का संयोजन विश्व रंग के सचिव संजय सिंह राठौड़ ने किया।

एमपी में 22 दिन शीतलहर, पचमढ़ी सबसे ठंडा

- भोपाल-इंदौर, उज्जैन में रातें सर्द; दिसंबर-जनवरी में पड़ेगी कड़ाके की ठंड

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में इस बार दिसंबर-जनवरी में कड़ाके की ठंड का दौर आएगा। इन दो महीनों में 20 से 22 दिन कोल्ड वेव की स्थिति रह सकती है। नवंबर के 10 दिन में प्रदेश का इकलौता हिल स्टेशन पचमढ़ी सबसे ठंडा रहा है। यहां टेम्प्रेचर 10.6 डिग्री सेल्सियस पहुंच चुका है जबकि भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर और उज्जैन में भी सर्दी है।

सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. वेदप्रकाश सिंह की मानें तो नवंबर में पारा 10 से 15 डिग्री सेल्सियस के बीच बना रहेगा। इस साल पिछली बार से ज्यादा सर्दी पड़ेगी। ग्वालियर, उज्जैन और चंबल संभाग सबसे ज्यादा ठिठुरेंगे। यहां कोल्ड वेव यानी सर्द हवाएं भी चलेंगी।

दिसंबर-जनवरी में ही कड़ाके की ठंड क्यों?- मानसून के चार महीने (जून, जुलाई, अगस्त और सितंबर) में से दो महीने जुलाई-अगस्त महत्वपूर्ण रहते हैं। इन्हीं में 60 प्रतिशत या इससे अधिक बारिश हो जाती है। ठीक उसी तरह दिसंबर और जनवरी में कड़ाके की ठंड पड़ती है। इन्हीं दो महीने में प्रदेश में उत्तर भारत से सर्द हवाएं ज्यादा आती हैं इसलिए टेम्प्रेचर में गिरावट आती है। वहीं, सर्द हवाएं भी चलती हैं।

दिसंबर में टेम्प्रेचर में गिरावट, कोल्ड वेव चलेगी- डॉ. सिंह ने बताया कि दिसंबर की शुरुआत से ला नीना की स्थिति बनना शुरू हो जाएगी। इससे ग्वालियर-चंबल और बुंदेलखंड में ठंड जोर पकड़ेगी। हालांकि, कड़ाके की ठंड का दौर 20 दिसंबर से शुरू होगा।

पचमढ़ी सबसे ठंडा, बाकी शहरों में 13 से 18 डिग्री तापमान

इस समय पचमढ़ी को छोड़ दें तो बाकी के सभी शहरों में रात का टेम्प्रेचर 13 से 18 डिग्री सेल्सियस के बीच है। वहीं, अधिकतम तापमान भी 32 डिग्री या इससे अधिक बना हुआ है। भोपाल, इंदौर, उज्जैन, ग्वालियर-चंबल संभाग में दक्षिण-पश्चिमी हवाएं चल रही हैं, जो अरब सागर से नमी लेकर आ रही हैं। हवा का रुख उत्तर-पश्चिमी नहीं हो जाता, तब तक तेज सर्दी का अहसास नहीं होगा। दूसरी ओर, बंगाल की खाड़ी में बारिश का सिस्टम बना है। इस वजह से पूर्वी हिस्से में तेज ठंड की शुरुआत नहीं हो पाई है।

इस वजह से नवंबर में कम ठंड- वर्तमान में प्रशांत महासागर में अलनीलो-ला नीनो की स्थिति न्यूट्रल है। वहीं, आईओडी हिंद महासागर में न्यूट्रल है। इस वजह से नवंबर में ठंड का असर ज्यादा नहीं है। पूरे महीने ही ऐसा मौसम रहेगा। सामान्य से ज्यादा तापमान नहीं जाएगा।

1988 बैच के एसबीआई अधिकारियों का दीपावली मिलन समारोह

भोपाल (नप्र)। एसबीआई के 1988 बैच के अधिकारियों के ग्रुप 'स्टार्स 1988' का पारिवारिक दीपावली मिलन समारोह कोलार स्थित एक गार्डन में हुआ। यहां परिवार के सदस्यों ने गीत, संगीत, हास्य और तंबोला के साथ अंताक्षरी का आनंद लिया। ग्रुप के संयोजक यशवंत गोरे ने बताया कि 'स्टार्स 1988' ग्रुप 2015 से हर साल दिवाली मिलन समारोह आयोजित कर रहा है। इस ग्रुप में मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के 1988 बैच के 80 अधिकारी हैं। गौरतलब है कि भोपाल स्थित ग्रुप सदस्य हर महीने के पहले शनिवार को एक जगह एकत्रित होकर पोहा-जलेबी की पार्टी के साथ गीत-संगीत का आनंद लेते हैं।

21 बैगा बहुल एवं 12 भारिया बहुल बसाहटों के हेबिटेट राइट को मिली मान्यता

भोपाल (नप्र)। जनजातीय कार्य, लोक परिसम्पत्ति प्रबंधन एवं भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुनर्वास मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा वन अधिकार अधिनियम 2006 के तहत पीवीटीजी की बसाहटों का भी संरक्षण किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा डिण्डोरी जिले की 7 एवं मंडला जिले की 14, कुल 21 बैगा जनजाति बहुल बसाहटों के हेबिटेट राइट को मान्यता दे दी गई है। इसी प्रकार छिंदवाड़ा जिले में 12 भारिया जनजाति बहुल बसाहटों के हेबिटेट राइट को भी मान्यता प्रदान कर दी गई है। पर्यावास अधिकार (हेबिटेट राइट) मिलने से आशय यह है कि इस विशेष अधिकार से पिछड़ी जनजातियों को उनकी पारम्परिक आजीविका स्त्रोत और पारिस्थितिकीय ज्ञान को सुरक्षित रखने में भरपूर मदद मिलेगी। ये अधिकार इन पीवीटीजी समुदायों को खुद के विकास के लिए शासकीय योजनाओं और विकास नीतियों/कार्यक्रमों तक पहुंचने के लिए सशक्त बनाते हैं।

जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. शाह ने बताया कि हैबिटेट राइट्स की मान्यता मिलने के बाद ये पिछड़ी जनजातियां अपने जीवन में एक सकारात्मक बदलाव ला रही है। अब वे अपने परम्परागत जंगलों में अपनी आजीविका को बेहतर तरीके से चला रही हैं और अपनी आने वाली पीढ़ियों को यह धरोहर के रूप में भी सौंप सकते हैं। हेबिटेट राइट मिलने से ये जनजातियां अब न केवल अपने जल, जंगल, जमीन, जानवर का संरक्षण करने के लिए सक्षम हुए हैं, बल्कि अपनी पारम्परिक कृषि, औषधीय पौधों, जड़ी-बूटियों के संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के यथा आवश्यकतानुसार उपयोग को लेकर भी स्वायत्त धारणाधिकारी (स्वतंत्र) हो गई हैं।

उल्लेखनीय है कि प्रदेश के सुदूर वन क्षेत्रों में बसीं बैगा और भारिया जनजातियां लंबे समय से जंगलों और पहाड़ियों में अपनी परम्परागत जीवन शैली जीने की आदी हैं। पहले इन जनजातियों के पास न तो अपनी जमीन का अधिकार था, न ही जंगल पर अपना नियंत्रण। यही उनकी संस्कृति और अस्तित्व के लिए एक बड़ा अवरोध था। बैगा और भारिया जनजातियां मध्यप्रदेश की विशेष रूप से पिछड़े एवं कमजोर जनजातियों (पीवीटीजी) में आती हैं। इनकी जीवन शैली पूरी तरह से प्रकृति पर निर्भर करती है। इनके लिए जंगल केवल जीविका का साधन नहीं है, बल्कि यह उनकी परंपराओं, रीति-रिवाजों, और पहचान का अभिन्न हिस्सा है। ये समुदाय सरकार से अपने जंगल और जीवन पर अधिकार की सुरक्षा और अपनी देशज पुरा संस्कृति की सुरक्षा की मांग कर रहे थे। सरकार ने इनकी इस मांग को गंभीरता से लिया और 21 बैगा बसाहटों तथा 12 भारिया बसाहटों के पर्यावास अधिकार (हैबिटेट राइट्स) को मान्यता प्रदान कर दी। हैबिटेट राइट केवल एक कानूनी अधिकार ही नहीं है, बल्कि इन पीवीटीजी की मूल पहचान और प्राकृतिक संस्कृति को बचाने की दिशा में सरकार का एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम साबित हो रहा है।

पॉलिटेक्निक चौराहे पर कारोबारी से 20 लाख की लूट

शिकायत के बाद भी पुलिस ने नहीं लिखी एफआईआर

भोपाल (नप्र)। शहर के श्यामला हिल्स थाना क्षेत्र में लूट की एक घटना सामने आई है। पॉलिटेक्निक चौराहे पर लूट में कारोबारी से 20 लाख रुपए छीनकर युवक फरार हो गए। घटना 10 नवंबर रात करीब 8:30 की है जब अज्ञात बदमाशों ने कारोबारी से 20 लाख रुपए लूटकर फरार हो गए। बता दें कि पॉलिटेक्निक चौराहा सीएम हाउस से मात्र 400 से 500 मीटर दूर है।

नहीं हुई एफआईआर- घटना के तुरंत बाद कारोबारी ने पुलिस को इस मामले की सूचना दी। पुलिस की माने तो फिलहाल इस मामले में अभी एफआईआर ही नहीं की गई है। आरोपियों की तलाश की जा रही है। पुलिस के अधिकारियों की माने तो फरियादी के साथ मारपीट का भी जिक्र आवेदन में किया गया है। इलाके के सभी सीसीटीवी खंगाले जा रहे हैं।

निश्चित समयावधि में नागरिक सेवाओं की कानूनी गारंटी देने वाला देश का पहला राज्य है मध्यप्रदेश

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश नागरिकों को अधिसूचित सेवाएँ प्रदाय करने की कानूनी गारंटी देने वाला देश का पहला राज्य है। प्रदेश में 25 सितम्बर 2010 से लोक सेवाओं के प्रदाय की गारंटी अधिनियम प्रभावशील है। वर्तमान में अधिनियम अंतर्गत 748 सेवाएँ अधिसूचित की जा चूंकि है। इन सेवाओं में लोक सेवा केन्द्रों के माध्यम से नागरिकों के लिए 342 सेवाएँ ऑनलाईन प्रदाय की जा रही हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में सुशासन के लिए संकल्पबद्ध मध्यप्रदेश सरकार ने प्रशासन को जनोन्मुखी बनाया हैं। नागरिकों की सुविधा को दृष्टिगत रखते हुए समाधान एक दिन तत्काल सेवा, सीएम हेल्पलाईन 181 कॉल सेन्टर, महिला हेल्पलाईन, सीएम जन सेवा, दिव्यांग हेल्पलाईन समाधान ऑनलाइन कार्यक्रम जनोन्मुखी प्रशासन की गवाही देते है।

मध्यप्रदेश सरकार ने नागरिक अधिकारों को सशक्त बनाने और सेवा प्रणाली को प्रभावी बनाने के लिए सुशासन की दिशा में समय-समय पर अनेक कदम उठाएँ है। मध्यप्रदेश लोक सेवाओं के प्रदाय की गारंटी अधिनियम के बेहतर क्रियान्वयन के लिए पृथक से लोक सेवा प्रबंधन विभाग का गठन किया गया। वर्ष 2013 में राज्य लोक सेवा अभिकरण की स्थापना की गई। राज्य लोक सेवा अभिकरण में लोक सेवा प्रदाय गारंटी अधिनियम के क्रियान्वयन के साथ-साथ लोक सेवा केन्द्रों की स्थाना और संचालन का सीएम हेल्पलाईन कॉल सेंटर का संचालन और सीएम डेशबोर्ड का संचालन भी शामिल है।

लोकसेवा केन्द्रों के माध्यम से नगारिकों को एक समयावधि में सेवाएँ प्रदाय करने के लिए सभी तहसीलों में 439 लोकसेवा केन्द्रों की स्थापना की गई है, जिनके माध्यम से विभिन्न विभागों की अधिसूचित सेवाएँ नागरिकों को प्रदाय की जा रही हो। अधिनियम के अंतर्गत विभाग की अधिसूचित सेवा 'जाति प्रमाण पत्र प्रदाय' अभियान के तहत लोकसेवा केन्द्रों द्वारा प्रदेश भर के स्कूलों के छात्र-छात्राओं को जाति प्रमाण पत्र प्रदान करने का अभियान सफलतापूर्वक क्रियान्वयन किया जा रहा है। इस अभियान में अब तक लगभग 1 करोड़ 40 लाख डिजिटल हस्ताक्षरित रंगीन प्रमाण-पत्र प्रदान किए जा चुके है। प्रदेश में लोकसेवा गारंटी अंतर्गत अधिसूचित समस्त सेवाओं में 10 करोड़ 62 लाख आवेदनों का अब तक निराकरण किया जा चुका है।

लोक सेवा गारंटी अधिनियम 2010 अंतर्गत सेवाओं की प्रदाय की गारंटी हैं। प्रत्येक सेवा को प्रदाय करने की एक समयावधि भी तय की गई है। इसमें समय पर सेवा नहीं देने पर जिम्मेदार अधिकारी पर जुर्माना लगाने का प्रावधान भी है। अधिकारी वर्ग प्रतिदिन 250 रूपये से लेकर अधिकतम 5000 हजार रूपये तक की जुर्माना राशि जमा करने का प्रावधान है।

संयुक्त राष्ट्र संघ से मिली सराहना

मध्यप्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम अपनी तरह का पहला विशेष अधिनियम है जो निर्धारित समय-सीमा में नागरिकों को सार्वजनिक सेवाओं के प्रदान की गारंटी देता है। इसे वर्ष 2012 में अधिनियम को यूएनपीएसए पुरूस्कार प्राप्त हुआ। लोक सेवाओं के वितरण में सुधार वर्ग में इस अधिनियम को संयुक्त राष्ट्र का वर्ष 2012 को लोक सेवा पुरूस्कार भी प्राप्त हुआ है।

समाधान एक दिन तत्काल प्रदाय सेवा

नागरिकों को केवल एक दिन की समयावधि में सेवा उपलब्ध कराने की मंशा से मध्यप्रदेश शासन ने फरवरी 2018 में 'समाधान एक दिन तत्काल सेवा' व्यवस्था शुरू की। इस व्यवस्था में आवेदक द्वारा दोपहर पूर्व तक दिए गए आवेदन का निराकरण दोपहर पश्चात कर दिया जाता है। इस सेवा में डिजिटल हस्ताक्षरित प्रमाण पत्र व्हाटसअप, ई-मेल के माध्यम से भी आवेदकों को भेजे जा रहे है, जिससे आवेदक अपनी सुविधा अनुसार प्रमाण-पत्र समाधान एक दिन तत्काल सेवा व्यवस्था में अब तक दो करोड़ 63 लाख से अधिक आवेदन निराकृत किए गए है। समाधान एक दिन में दी जाने वाली 32 सेवाओं में आय प्रमाण-पत्र, स्थानीय निवासी प्रमाण-पत्र, ट्रेड लाइसेंस, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013 के अंतर्गत सम्मिलित पात्र परिवारों को डुप्लीकेट पात्रता पर्ची जारी चालू खसरा, बी-1 खतौनी चालू नक्शा, खसरा की प्रतिलिपि (खाते के समस्त), अभिलेखागार प्रतिलिपि, राजस्व प्रकरण में आदेश की प्रतिलिपि, भू-अधिकार पुस्तिका का प्रथम बार प्रदाय, जिला स्तरीय रिकॉर्ड रूम से पारित आदेश/अंतरिम आदेश आदि की सत्यप्रतिलिपि इत्यादि कई सुविधाएँ प्रदान की जाती है।

एमपी में फिर आधी रात को 26 आईएएस के तबादले

मुख्यमंत्री के दोनों प्रमुख सचिवों को हटाया; नीरज मंडलोई को पावर मैनेजमेंट का जिम्मा

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में एक बार फिर आधी रात को आईएएस अधिकारियों के थोकबंद तबादले किए गए हैं। सोमवार देर रात शासन की ओर से जारी आदेश में 26 आईएएस अफसरों के ट्रांसफर किए गए हैं। नीरज मंडलोई को ऊर्जा एवं पावर मैनेजमेंट का जिम्मा सौंपा गया है।

तबादला आदेश में अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव और सचिव स्तर के अधिकारियों के विभागों में फेरबदल किया गया है।

नीरज मंडलोई संजय शुक्ल राघवेंद्र कुमार सिंह

मुख्यमंत्री के दोनों प्रमुख सचिवों को हटाया

ट्रांसफर आदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के दोनों ही प्रमुख सचिवों को हटा दिया गया है। सीएम के प्रमुख सचिव के रूप में काम कर रहे संजय कुमार शुक्ला और राघवेंद्र कुमार सिंह अब अलग-अलग विभागों के प्रमुख सचिव होंगे। लेकिन सीएम सचिवालय के प्रमुख सचिव नहीं होंगे। यहां अब अपर मुख्य सचिव डॉ. राजेश राजौरा ही सीएम सचिवालय के प्रमुख अफसरों में रह गए हैं।

सोमवार देर रात जारी हुई तबादला सूची में मुख्य सचिव अनुराग जैन की कसावट भी देखने को मिली है। तबादला सूची में सीएम सचिवालय में बढ़ी अफसरों की भीड़ को संतुलित करने का काम किया गया है। दो प्रमुख सचिव और एक एसीएस स्तर के सीनियर अधिकारी सीएम सचिवालय में थे। जिसमें से अब एसीएस राजौरा ही काम करेंगे। राजौरा को पहले से सौंपी गई जिम्मेदारियों के साथ लोक सेवा प्रबंधन विभाग का जिम्मा भी सौंपा गया है।

बगैर प्रोग्राम के साइबर मुख्यालय पहुंचे मुख्यमंत्री

साइबर अरेस्ट घटना में क्विक एक्शन पर थपथपाई पीठ, हर जिले में खोलेंगे साइबर थाना

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में साइबर अरेस्ट और साइबर क्राइम की घटनाओं में पुलिस की सफलता को देखते हुए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव मंगलवार को कैबिनेट बैठक के बाद अचानक राजधानी के साइबर पुलिस मुख्यालय पहुंच गए। यहां उन्होंने दो दिन पहले साइबर अपराधियों द्वारा छह घंटे तक डिजिटल अरेस्ट कर बंधक बनाए गए विवेक ओबेरॉय से फोन पर बात की और मध्य प्रदेश की साइबर पुलिस के कार्य की सराहना की। इसके बाद मुख्यमंत्री ने घोषणा की कि प्रदेश के हर जिले में एक साइबर थाना खोला जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि ठग अब बेहद दुस्साहस दिखा रहे हैं। एमपी पुलिस साइबर अपराध रोकने के लिए लगातार प्रयास कर रही है और उन्हें सफलता भी मिल रही है।

उन्होंने विवेक ओबेरॉय के डिजिटल अरेस्ट का जिक्र करते हुए कहा कि ठगों ने ओबेरॉय को छुड़ाने की कोशिश में असली पुलिस से भी आईडी कार्ड की मांग की थी। यह देश की पहली घटना है, जब किसी को डिजिटल रूप में बंधक बनाकर लाइव बचाया गया हो। डिजिटल ठगी को रोकने के लिए प्रदेश के सभी जिलों में एक-एक साइबर थाना खोलने का निर्णय लिया गया है।

गृह विभाग के रिव्यू मीटिंग में साइबर डेस्क, थाना खोलने के निर्देश

मुख्यमंत्री ने पांच दिन पहले गृह विभाग की समीक्षा बैठक में पुलिस को 'फ्यूचर रेडी' रहने की आवश्यकता पर जोर दिया था। उन्होंने निर्देश दिए थे कि पुलिस साइबर अपराधों की रोकथाम के लिए सूचना प्रौद्योगिकी की नवीनतम तकनीकों का उपयोग करे। हर थाने में साइबर डेस्क, हर जिले में साइबर थाना, और राज्य स्तर पर एक कॉल सेंटर बनाया जाए। साइबर धोखाधड़ी से लोगों को बचाने के लिए एक सघन अभियान चलाने की भी योजना बनाई गई है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के दुरुपयोग से बचने के लिए पुलिस को सतर्क रहने का भी निर्देश दिया गया था।

एक साल से पेंडिंग है प्रस्ताव

अधिकारियों के अनुसार, साइबर हेल्प डेस्क बनाने का प्रस्ताव सरकार के पास एक साल पहले ही आ गया था, लेकिन बजट की कमी के कारण इस पर काम नहीं हो सका था। अब राज्य साइबर मुख्यालय ने इसके लिए बजट की मांग की है, और उम्मीद है कि यह सुविधा जल्द ही सभी जिलों में शुरू हो जाएगी।

दुबई के बिजनेसमैन का किया था डिजिटल अरेस्ट

भोपाल में दुबई के बिजनेसमैन को साइबर क्रिमिनल ने खुद को पुलिस बताकर 7 घंटे तक डिजिटल हाउस अरेस्ट कर रखा था। दोनों आरोपी उससे पैसे ऐंठ पाते, इतने में कारोबारी के कमरे में सीधे साइबर पुलिस आ गई। वीडियो कॉल के जरिए कारोबारी को डिजिटल अरेस्ट किए दोनों फ्रॉड असली पुलिस को देखकर पहले तो सक-पका गए, फिर कहने लगे, 'यह सीबीआई की कार्रवाई है, आप हमें जानते नहीं हैं, बीच में नहीं आइए।'

ये घटना 9 नवंबर को भोपाल की अरेरा कॉलोनी में रहने वाले विवेक ओबेरॉय (50) के साथ हुई। साइबर पुलिस शाम 7 बजे उनके घर पहुंची थी। विवेक दुबई में कॉर्पोरेट सेक्टर में बिजनेसमैन हैं।

मानस भवन में गीता सत्संग की छठवीं संध्या

स्वामी अनुभवानंदजी ने आत्म-संयम और अनुभव से सीखने की दी शिक्षा, 'त्रिपुरा रहस्य' का विमोचन

भोपाल (नप्र)। तुलसी मानस प्रतिष्ठान और महर्षि अगस्त्य वैदिक संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में मानस भवन स्थित पं. रामकिंकर उपाध्याय सभागार में छठवीं संध्या को आयोजित गीता सत्संग एवं उपनिषद चिंतन कार्यक्रम में स्वामी अनुभवानंदजी ने गीता की महत्ता और आत्म-संयम पर बातें साझा कीं।

स्वामीजी ने कहा, हमारे मन पर दुनिया के विषयों का आकर्षण बहुत अधिक होता है, लेकिन जब हम बिना समझे और बिना अभ्यास के अपने ऊपर नियंत्रण करने की कोशिश करते हैं, तो मन पर नियंत्रण नहीं मिलता। उन्होंने बताया कि मन की चंचलता को शांत करने के लिए हमें पहले विषयों के दोषों को पहचानना होगा। यदि हम विषयों में दोष नहीं देखेंगे, तो हम उन्हीं में लगे रहेंगे।

स्वामीजी ने यह भी कहा कि मन की अभिव्यक्ति शब्दों से होती है और एक शांत मन ही परमात्मा के पास पहुंचने का द्वार है। उन्होंने यह भी कहा कि मन की तपस्या मौन में होती है और जो व्यक्ति समत्व में स्थित रहता है, वही योगी होता है।

भोपाल में मंत्री कृष्णा गौर के बेटे से साइबर ठगी

लेबर सप्लाई का ठेका दिलाने जमा कराए 3 लाख, बैंक को फर्जी ईमेल से हुआ खुलासा

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश सरकार की मंत्री कृष्णा गौर के बेटे और पूर्व मुख्यमंत्री रहे स्वर्गीय बाबूलाल गौर के पोते के साथ ठगी का मामला सामने आया है। कृष्णा गौर के बेटे को साइबर ठगों ने लेबर सप्लाई का ठेका दिलाने के नाम पर 3 लाख 19 हजार रुपए की ठगी की है।

इस पूरे मामले में भोपाल साइबर क्राइम ब्रांच ने अज्ञात लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक भोपाल के 74 बंगले में कृष्णा गौर के साथ रहने वाले उनके बेटे आकाश गौर ने साइबर क्राइम को सूचना दी थी। इस मामले में साइबर क्राइम की टीम ने फर्जी ईमेल बनाकर बैंक के खाते को अन होल्ड करने के लिए मेल करने वाले आरोपी सैफ अली चाऊस को भोपाल से गिरफ्तार किया है। बता दें कि सैफ अली ने साइबर क्राइम की फर्जी मेल आईडी बनाकर बैंक को मेल किया था। बैंक ने जब इस मामले में पुलिस से जानकारी ली गई तब इसका खुलासा हुआ।

पुलिस ने बताया कि मामले की जांच में सामने आया कि जालसाज ने रकम पाने के लिए बैंक ऑफ इंडिया के एक खाते का उपयोग किया। शिकायत के बाद बैंक खाते को होल्ड कराने से पहले ही ठगी पैसा एक अन्य सहकारी बैंक के खाते में ट्रांसफर कर लिया गया। बाद में साइबर क्राइम की टीम ने सहकारी बैंक के बारे में जानकारी जुटाकर खाते को फ्रीज कर दिया।

महिंद्रा कंपनी में लेबर कॉन्ट्रैक्ट के नाम पर की ठगी

अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त शैलेंद्र सिंह चौहान ने बताया कि साइबर क्राइम भोपाल ने एक आरोपी को पकड़ा है। आरोपी ने साढ़े 3 लाख रुपए की फ्रॉड की राशि को अपने खाते में लेकर दूसरे आरोपी को देने का मामला है। साइबर क्राइम में कुछ दिनों पहले रिपोर्ट की गई थी। जिसमें महिंद्रा कंपनी में लेबर कॉन्ट्रैक्ट के नाम पर साढ़े 3 लाख की ठगी भोपाल के नागरिक के साथ की गई थी। जिसकी रिपोर्ट साइबर क्राइम में हुई थी। जिसको लेकर हमने पड़ताल की।

मुंबई के जिस खातेदार के अकाउंट में पैसे ट्रांसफर किए गए थे। उस खाते को हमने बंद कराया। खाता खुलवाने के लिए इस पीयूएस के संचालक ने क्राइम ब्रांच की नकली ईमेल आईडी बनाकर ईमेल भेजा था। इस ईमेल आईडी की जांच-पड़ताल करने पर फर्जी होने की जानकारी मिलने पर आरोपी पर मामला दर्ज कर गिरफ्तारी की गई है। इस मामले में यह पहली गिरफ्तारी हुई है। अन्य आरोपी को गिरफ्तार करने की प्रक्रिया जारी है। गिरफ्तार आरोपी ने पूछताछ में अन्य कई नामों का खुलासा किया है।

यूएसए की सामाजिक कार्यकर्ता पहुंची चिल्ड्रेन्स होप इंडिया गर्ल्स स्कूल

लक्ष्य के प्रति सजग रहना जितना जरूरी, उतना ही जीवन में जीवंतता का होना : अदिति

भोपाल (नप्र)। चिल्ड्रेन्स होप इंडिया गर्ल्स स्कूल, गांधी नगर भोपाल में सामाजिक कार्यकर्ता अदिति गुगनानी मल्होत्रा ने निरीक्षण किया। इस अवसर पर विद्यालय परिवार द्वारा अतिथि सम्मान में गरिमामय स्वागत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ संतजी, माँ सरस्वती और माँ भारती के छायाचित्रों के समक्ष दीप प्रज्वलन व माल्यार्पण के साथ हुआ। इस मौके पर छात्राओं द्वारा अतिथि सम्मान में सुंदर स्वागत गीत एवं रंगारंग नृत्य का आयोजन किया गया। बता दें कि अदिति सीएचआई-यूएसए में सामाजिक कार्यकर्ता के रुप में कार्य करती हैं। इस अवसर पर अदिति ने बच्चों के साथ मंच पर नृत्य में शामिल होकर अद्भुत समां बांध दिया। उन्होंने पर्यावरण की सुरक्षा के प्रतीक स्वरूप पौधारोपण भी किया। स्कूल पदाधिकारियों ने विशिष्ट अतिथि अदिति गुगनानी मल्होत्रा का पुष्पगुछ भेंट कर स्वागत किया।

जीव सेवा संस्थान के सचिव दयारामानी ने सभागार को संबोधित करते हुए उनका विस्तृत परिचय समस्त विद्यालय परिवार से करवाया। आपने अपने उद्बोधन में अतिथि द्वारा किए जाने वाले सेवा कार्यों व बालिकाओं की शिक्षा में उनके योगदान से सभी को परिचित कराया।

अदिति गुगनानी मल्होत्रा ने भी छात्राओं को संबोधित करते हुए उन्हें संदेश दिया कि सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता। लक्ष्य के प्रति हमें जितना सजग रहना है, उतना ही जीवन में जीवंतता बनाए रखना जरूरी है, व हमें अपने संस्कारों से जुड़े रहना है। हमारे हर सुख-दुख में ईश्वर की उपस्थिति अनिवार्य होना चाहिए। हमें जीवन के हर पल को पूर्ण आनंद के साथ जीना चाहिए। परिस्थितियां चाहे जैसी भी हो उन्हें मुस्कराते हुए स्वीकारना चाहिए।अदिति ने बच्चों के साथ मंच पर नृत्य में शामिल होकर अद्भुत समां बांध दिया। इस अवसर पर जीव सेवा संस्थान के सचिव महेश दयारामानी, नवयुवक परिषद के महासचिव थावर वरलानी, संस्था के अकादमिक निदेशक गोपाल गिरधानी एवं विद्यालय की प्राचार्या प्रिया जैन शर्मा ने विशिष्ट अतिथि अदिति गुगनानी मल्होत्रा का पुष्पगुछ भेंट कर स्वागत किया। प्राचार्या प्रिया जैन शर्मा ने अपने स्वागत उद्बोधन में विद्यालयीन गतिविधियों व छात्राओं की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

संपादकीय

मुबंई की बदलती जनसांख्यिकी ?

देश की आर्थिक राजधानी और सबसे बड़े महानगर मुंबई में बदलती जनसांख्यिकी और भविष्य के खतरों को रेखांकित करती टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस (टिस) की ताजा रिपोर्ट वाकई चिंतित करने वाली है। हालांकि विपक्ष ने इसे 'प्रायोजित'बताते हुए इसके जारी होने के टाइमिंग पर सवाल उठाया है। क्योंकि महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव हो रहे हैं और मुंबई महानगर क्षेत्र की 36 सीटें हैं। इन सीटों पर शिवसेना का काफी असर रहा है। विपक्ष को लगता है कि यह रिपोर्ट सत्तारूढ़ महायुति को चुनाव लाभ पहुंचाने के इरादे से जारी करवाई गई है। जबकि भाजपा ने इसे प्रामाणिक रिपोर्ट करार दिया है। बहरहाल इस रिपोर्ट की टाइमिंग पर सवाल हो सकता है, लेकिन यह एक अध्ययन रिपोर्ट है, जो आंकड़ों और वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर तैयार की गई है। वैसे भी टिस कोई सरकारी संस्थान नहीं है। इस प्रतिष्ठित संस्था न को सरकारी मान्यता प्राप्त है, लेकिन वह सरकारी पैसों से नहीं चलता। वहां अकादमिक अध्ययन लगातार चलते रहते हैं। यह रिपोर्ट भी उसी का हिस्सा है। रिपोर्ट बताया गया है कि मुंबई में जिस गति से मुस्लिमों की संख्या बढ़ रही है, अगर यही सिलसिला जारी रहा तो वर्ष 2051 में उनकी आबादी 30 फीसदी हो जाएगी और हिंदू महज 54 फीसदी रह जाएंगे। इस जनसांख्यिकी बदलाव के राजनीतिक परिणाम भी उसी अनुरूप होंगे। इसके लक्षण अभी से दिखने लगे हैं। रिपोर्ट में इसमें बंगलादेशी और रोहिंग्या घुसपैठिये के चलते मुंबई की राजनीति को प्रभावित करने का भी उल्लेख है। रिपोर्ट में कहा गया कि कुछ राजनीतिक संस्थाएं वोट बैंक की राजनीति के लिए इन अवैध अप्रवासियों का इस्तेमाल कर रही है, जो लोकतांत्रिक प्रक्रिया को बाधित कर सकती है। बिना दस्तावेज वाले अवैध अप्रवासी फर्जी वोटर आईडी हासिल कर रहे हैं, जो चुनावी निष्पक्षता और देश की लोकतांत्रिक प्रणाली के बारे में चिंताएं बढ़ाते हैं। अहम बात यह है कि मुसलमानों की यह जनसंख्या स्वाभाविक आबादी वृद्धि दर के कारण नहीं बल्कि अवैध घुसपैठियों के कारण ज्यादा बढ़ रही है। इस रिपोर्ट के अनुसार मुंबई में 1961 में हिंदू आबादी 88 प्रतिशत थी, जो 2011 में घटकर 66 फीसदी रह गई। 2011 तक हिंदुओं की आबादी मात्र 8 प्रतिशत बढ़ी। 1968 में मुस्लिम आबादी 8 फीसदी थी, वह 2011 में बढ़कर 21 फीसदी हो गई। अनुमान है कि 2051 तक हिंदू आबादी 54 प्रतिशत से कम होगी और मुस्लिम आबादी करीब 30 प्रतिशत बढ़ जाएगी। रिपोर्ट यह भी कहती है कि 50 प्रतिशत अवैध घुसपैठी महिलाएं व्यावसायिक रूप से देह व्यापार में संलिप्त हैं। ये शहर की सामाजिक-अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप स्थानीय लोगों में झुंझलाहट बढ़ रही है।

रिपोर्ट के अनुसार मुंबई की झुग्गियों में अवैध अप्रवासियों की भीड़ बढ़ गई है, जिससे शहर के इंफ्रास्ट्रक्चर पर असहनीय दबाव भी बढ़ रहा है। सरकार के पास इनका डेटा तक नहीं है। मुंबई के स्थानीय लोगों और अप्रवासी समुदायों के बीच आर्थिक असमानताओं की वजह से समाजिक तनाव और हिंसा की घटनाएं बढ़ी हैं। स्टडी में 50 प्रतिशत महिलाओं की तस्करी की बात सामने आई है, वे महिलाएं देह व्यापार में लगी थी, 40 प्रतिशत अप्रवासियों ने बांग्लादेश में अपने घर 10 हजार रुपये से 1 लाख रुपये हर महीने भेजे हैं। यहां सवाल यह भी है कि अगर अवैध बांगलादेशी और रोहिंग्या घुसपैठियों की संख्या बढ़ती जा रही है तो सरकार इसे रोकने के लिए क्या कर रही है? भाजपा यह मुद्दा तो जोरशोर से हर बार उठाती है, लेकिन कितने घुसपैठियों को अभी तक बाहर का रास्ता दिखाया गया है या ये सिर्फ वोट की राजनीति का हिस्सा है। अगर ऐसा है तो यह और भी चिंताजनक है।

नजरिया

तनवीर जाफ़री

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

ये अंग्रेज परस्त राजघराने

ईस्ट इण्डिया कंपनी के माध्यम से जब धीरे धीरे अंग्रेज़ों ने भारत में अपनी घुसपैठ शुरू की उस समय वे अपने साथ लाखों की फ़ौज लेकर नहीं आये। बल्कि उन्होंने अपने सहयोगी के रूप में भारत के ही उन्हीं रियासत प्रमुखों यानी राजा महाराजाओं का इस्तेमाल किया। इसके अलावा चूँकि पराधीन भारत में रोज़गार की भी भारी कमी थी इसलिये पुलिस से लेकर सेना तक में अधिकांशत: भारतीयों की ही भर्ती की गयी। इस तरह देश में ब्रिटिश काल में जहाँ भी आज़ादी के मतवालों या अन्य भारतीय नागरिकों पर ज़ुल्म ढाया जाता था या उन्हें अपमानित किया जाता था या उनकी हत्यायें की जाती थीं अथवा फांसी पर चढ़ाया जाता था तो इसके आदेश भले ही अंग्रेज़ अधिकारी देता था परन्तु ज़ुल्म व अत्याचार की घटना को अंजाम देने में अंग्रेज़ों का मातहत भारतीय ही अगुआकार की भूमिका निभाता था। इसी तरह अंग्रेज़ों के पिट्ठू व उनके रहमो-करम पर अपनी रियासत चलने वाले तमाम रजवाड़े भी अंग्रेज़ों की खुशामद करने व उनके इशारे पर भारतीयों पर ज़ुल्म करने में पेश रहा करते थे।

आज का हमारा स्वाधीन एकीकृत भारत स्वतंत्रता पूर्व लगभग 565 राजघरानों अथवा रियासतों का देश हुआ करता था। इनमें विभिन्न धर्मों व जातियों के अनेक भारतीय राजा -महाराजा - नवाब आदि अपनी अलग-अलग रियासतों में राज किया करते थे। इनमें से कई राजघराने ऐसे थे जिन्होंने अपनी रियासत को मुग़लों,आक्रांताओं या अंग्रेज़ों की मातहती से बचाने के लिये उनसे संघर्ष किया। जबकि अधिकांश रियासतों के प्रमुख ऐसे थे जिन्होंने या तो भयवश या लालच में आकर या फिर मौक़ा परस्ती के चलते या तो अँग्रेज़ी हुकूमत के आगे घुटने टेक दिए। बताया जाता है कि ईस्ट इण्डिया कंपनी के माध्यम से जब धीरे धीरे अंग्रेज़ों ने भारत में अपनी घुसपैठ शुरू की उस समय वे अपने साथ लाखों की फ़ौज लेकर नहीं आये। बल्कि उन्होंने अपने सहयोगी के रूप में भारत के ही उन्हीं रियासत प्रमुखों यानी राजा महाराजाओं का इस्तेमाल किया। इसके अलावा चूँकि पराधीन भारत में रोज़गार की भी भारी कमी थी इसलिये पुलिस से लेकर सेना तक में अधिकांशत: भारतीयों की ही भर्ती की गयी। इस तरह देश में ब्रिटिश काल में जहाँ भी आज़ादी के मतवालों या अन्य भारतीय नागरिकों पर ज़ुल्म ढाया जाता था या उन्हें अपमानित किया जाता था या उनकी हत्यायें की जाती थीं अथवा फांसी पर चढ़ाया जाता था तो इसके आदेश भले ही अंग्रेज़ अधिकारी देता था परन्तु ज़ुल्म व अत्याचार की घटना को अंजाम देने में अंग्रेज़ों का मातहत भारतीय ही अगुआकार की भूमिका निभाता था। इसी तरह अंग्रेज़ों के पिट्ठू व उनके रहमो-करम पर अपनी रियासत चलने वाले तमाम रजवाड़े भी अंग्रेज़ों की ख़ुशामद करने व उनके इशारे पर भारतीयों पर ज़ुल्म करने में पेश रहा करते थे।

ठीक इसके विपरीत इन्हीं 565 राजघरानों में कुछ ऐसे राजा -महाराजा भी थे जिन्होंने अपने व देश के स्वाभिमान से समझौता न करते हुये अंग्रेज़ों के सामने अपने घुटने नहीं टेके। हालांकि ऐसे कुछ राजघरानों को उसकी क़ीमत भी चुकानी पड़ी। निःसंदेह देश ऐसे बलिदानी राजघरानों के समक्ष आज भी नतमस्तक है तथा उनका नाम इतिहास में सुनहरे अक्षरों में दर्ज है। ऐसी ही एक शहीद वीरांगना का नाम था झाँसी की रानी अथवा रानी लक्ष्मीबाई। रानी लक्ष्मीबाई ने 29 वर्ष की उम्र में 1857 की क्रान्ति में अंग्रेज़ साम्राज्य की सेना से युद्ध किया और रणभूमि में वीरगति को प्राप्त हुई। बताया जाता है कि युद्ध के दौरान उनके सिर पर तलवार लगने के कारण वह शहीद हुई। परन्तु आश्चर्य की बात तो यह है कि ब्रिटिश काल में जो राजघराने अंग्रेज़ों की ख़ुशामद परस्ती में लगे रहते थे उन्हीं में अनेक राजघराने स्वतंत्रता के बाद भी यहाँ तक कि आज़ाद भारत में राज शाही की व्यवस्था समाप्त हो जाने के बावजूद आजतक न केवल सत्ता

के केंद्र में बने रहने में सफल रहे हैं बल्कि काफ़ी हद तक अपना शाही रहन सहन व वैभव बरक़रार रखने में भी कामयाब रहे हैं। और इससे भी बड़े आश्चर्य की बात तो यह है कि आज भी ऐसे राजघरानों के अंतर्गत रहने वाली जनता स्वयं को आज़ाद भारतीय नहीं बल्कि राजा की रियाया समझती है। मैंने स्वयं ऐसे अनेक राजघराने देखे हैं जहाँ के लोग अपने राजा या राजकुमार को देवता तुल्य समझते हैं।

रानी लक्ष्मीबाई से जुड़े कई ऐसे क़िस्से हैं जिनसे पता चलता है कि जब वह अपने मासूम बच्चे को अपनी पीठ पर बाँध कर अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ युद्धरत थीं उसी समय ग्वालियर का सिंधिया राजघराना उन्हीं अंग्रेज़ों की ख़ुशामद परस्ती में व्यस्त था। कुछ इतिहासकार तो यहाँ तक लिखते हैं कि 1857 के विद्रोह में जहाँ तात्या टोपे व नाना साहब के साथ झांसी की सेना के कई वीर सैनिकों ने अंग्रेज़ों से लोहा लिया वहीं उसी दौर के ग्वालियर के महाराजा जयाजीराव सिंधिया पर यह आरोप लगता रहा है कि उन्होंने उस समय रानी लक्ष्मीबाई की बजाय अंग्रेज़ों का साथ दिया। प्रसिद्ध कवित्री सुभद्रा कुमारी चौहानने झांसी की रानी पर लिखी अमर कविता में लिखा भी था कि - अंग्रेज़ों के मित्र सिंधिया ने छोड़ी राजधानी थी। बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी। खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी। सिंधिया परिवार पर अंग्रेज़ों का पिट्ठू होने का लेबल सिंधिया घराने के कांग्रेस के क़रीब होने के समय भाजपा के नेता लगाया करते थे जबकि अब ज्योतिरादित्य सिंधिया के भाजपा में शामिल होने पर यही इलज़ाम कांग्रेस या अन्य भाजपा विरोधी दलों की तरफ़ से लगाया जा रहा है। हालाँकि ज्योतिरादित्य सिंधिया अपने परिवार पर अंग्रेज़ों का पिट्ठू होने के आरोप का खंडन करते रहे हैं। परन्तु सच तो यह है कि बिना आग लगे धुंआ नहीं उठता।

गत वर्ष 1857 की क्रांति पर आधारित व इतिहासकार तेजिंदर वालिया द्वारा लिखित व संकलित एक पुस्तक 'अम्बाला की दास्तां 1857' की प्रस्तावना लिखने का मौक़ा मिला। उस पुस्तक में उल्लिखित कई दस्तावेज़ों में चौंकाने वाली हक़ीक़त सामने आई। ऐसे ही कुछ दस्तावेज़ों से पता चला कि जब ब्रिटिश अधिकारी पंजाब के इलाक़े में भारतीयों पर अत्याचार कर दिल्ली की तरफ़ कूच करते थे और उन्हें इसबात का डर सताता था कि कहीं रास्ते में आम जनता उन पर हमला न कर दे या कहीं सेना विद्रोह न कर दे तो ऐसे में वे अंग्रेज़ अधिकारी पटियला व जींद जैसे राजघरानों से अपनी सुरक्षा संबंधी सहायता लिया करते थे। इस सहायता में कभी पटियाला व जींद के महाराजा अपनी सेना व घुड़सवार भेजते तो ज़रूरत पड़ने पर कभी ख़ुद भी हाज़िर हो जाते। कितना आश्चर्य होता है कि इस तरह के दर्जनों राजघराने जो कल सत्ता सुख की ख़ातिर अंग्रेज़ परस्ती में जीते थे वे आज भी सत्ता की राजनीति करने में वैसे ही माहिर हैं। और हमारे देश की भोली भाली जनता इन अंग्रेज़ परस्त राजघरानों को तब भी सम्मान देती थी जब वे अंग्रेज़ों से 'राय बहादुर' जैसी पदवियाँ व रियासत के विस्तार हेतु अधिक से अधिक इलाक़े हासिल करते थे और आज भी उन्हें वैसा ही सम्मान देती है जब वे स्वतंत्र भारत में चुनाव लड़ते हैं या जीतने के बाद मंत्रिमंडल में शोभायमान होकर देश के उज्जवल भविष्य की योजनाएं बनाते हैं। दरअसल अंग्रेज़ों के ऐसे ख़ुशामद परस्तों को उस समय और भी बल मिल जाता है जब उन्हें अंग्रेज़ परस्ती की विचारधारा रखने वाले राजनैतिक दलों का साथ मिल जाता है।

पर्यावरण

ललित गर्ग

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

गंगा का मैल सख्ती व जवाबदेही से ही दूर होगा

गंगा की सफाई, उसे प्रदूषण मुक्त करने एवं नदियों के माध्यम से आर्थिक विकास, धार्मिक आस्था एवं पर्यटन की संभावनाओं को तलाशने की दृष्टि से वर्तमान उत्तरप्रदेश सरकार एवं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के तमाम प्रयासों के बावजूद गंगा आज भी मैली क्यों है? यह सवाल सरकार के नदियों को स्वच्छ बनाने के लिए लंबे समय से चल रही तमाम योजनाओं और कार्यक्रमों की पोल खोलते हैं। सरकार की ओर से घोषणाएं करने में शायद ही कभी कमी की जाती है, मगर उन पर अमल को लेकर कहां चूक या लापरवाही बरती जा रही है, इस पर गौर करना कभी जरूरी नहीं समझा जाता। यह गौर करना राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण की उस टिप्पणी के कारण भी जरूरी हो गया है, जिसमें कहा गया है कि प्रयागराज में गंगा का पानी इतना प्रदूषित हो गया है कि वह आचमन करने लायक भी नहीं रह गया है। एनजीटी का यह खुलासा इसलिये भी चिंता बढ़ाने वाला है क्योंकि कुछ ही माह बाद यानी जनवरी 2025 की पौष पूर्णिमा से प्रयागराज में महाकुंभ की शुरुआत होने वाली है।

कुंभ मेले की तैयारियां अंतिम चरण में हैं और अखाड़ों की सक्रियता बढ़ गई है। महाकुंभ को लेकर देश ही नहीं विदेश में भी खूब चर्चा होती है। यदि गंगाजल की गुणवत्ता को लेकर ऐसे ही सवाल उठते रहे तो देश-दुनिया में अच्छा संदेश नहीं जाएगा। सवाल इस बात को लेकर भी उठेंगे कि विभिन्न सरकारों द्वारा शुरू की गई अनेक महत्वाकांक्षी व भारी-भरकम योजनाओं के बावजूद गंगा को साफ करने में हम सफल क्यों नहीं हो पाए हैं। आखिर कौन है गंगा को प्रदूषित करने के गुनहगार? सरकारों को यह समझना होगा कि उसे केवल गंगा को साफ ही नहीं करना, बल्कि उसकी निर्मलता एवं अविरलता के लिये एक अनूठा उदाहरण भी पेश करना है। ऐसा करके ही देश की अन्य नदियों को भी प्रदूषणमुक्त करने की दिशा में सकारात्मक वातावरण निर्मित किया जा सकेगा। यह जानकारी भी सामने आई कि उत्तरकाशी में सुरंग के निर्माण के कारण ढ़ेर बने मलबे एवं कचरे को गंगा नदी के किनारे डाल दिया गया। औद्योगिक कारखानों का जहरीला कचरा ही नहीं बल्कि सरकार की अन्य विकास योजनाएं ही गंगा को प्रदूषित करने का जरिया बन रही है, जो अधिक शर्मनाक एवं चिन्ताजनक है। गंगा नदी एवं अन्य नदियों में उद्योगों से विभिन्न रसायन, चीनी मिल, भट्टी, ग्लिस्रिन, टिन, पेंट, साबुन, कताई, रेयान, सिल्क, सूत, प्लास्टिक थेलियां-बोतले आदि जहरीला कचरा बड़ी मात्रा में सरकार की चेतावनियों के बावजूद मिल रहा है।

गंगा कायाकल्प का दृष्टिकोण 'अविरल धारा' (सतत प्रवाह), 'निर्मल धारा' (प्रदूषणरहित प्रवाह) को प्राप्त करके और भूगर्भीय और पारिस्थितिक अखंडता को सुनिश्चित करके नदी की अखंडता को बहाल करने की समग्र योजना और रखरखाव के बावजूद गंगा लगातार प्रदूषित हो रही है। जबकि सरकार क्रॉस-सेक्टोरल सहयोग को प्रोत्साहित करने वाली नदी बेसिन रणनीति को लागू करके गंगा नदी के प्रदूषण को समाप्त करने और पुनरोद्धार को सुनिश्चित करने की दिशा में काम कर रही है। यह पानी की गुणवत्ता और पारिस्थितिक रूप से जिम्मेदार विकास को बनाए रखने की दृष्टि से गंगा नदी में न्यूनतम जैविक प्रवाह भी सुनिश्चित करता है। वर्ष 2014 से गंगा की सफाई का महत्वाकांक्षी अभियान 'नमामि गंगे' में अब तक करीब चालीस हजार करोड़ की लागत से गंगा की सफाई की करीब साढ़े चार सौ से अधिक परियोजनाएं आरंभ भी की गई हैं। इस परियोजना के अंतर्गत गंगा के किनारे स्थित शहरों में सीवर व्यवस्था को दुरुस्त करने, उद्योगों द्वारा बहाये जा रहे अपशिष्ट पदार्थों के निस्तारण के लिये शोधन संयंत्र लगाने, गंगा तटों पर वृक्षारोपण, जैव विविधता को बचाने, गंगा घाटों की सफाई के लिये काफी काम तो हुआ लेकिन अपेक्षित परिणाम सामने नहीं आए हैं। जो हमें बताता है कि जब तक समाज में जागरूकता नहीं आएगी और नागरिक अपनी जिम्मेदारी का अहसास नहीं करेंगे, गंगा मैली ही रह जाएगी। अधिकारियों की लापरवाही या फिर गड़बड़ियों की वजह से किसी बड़ी और बेहद महत्वपूर्ण पहलकदमी का भी हासिल शून्य कैसे हो सकता है, इसका उदाहरण गंगा का प्रदूषण है।

दरअसल, लगातार बढ़ती जनसंख्या का दबाव और गंगा तट पर स्थित शहरों में योजनाबद्ध ढंग से जल निकासी व सीवरेज व्यवस्था को अंजाम न दिये जाने से समस्या विकट हुई है। गंगा को साफ करने के लिये जरूरी है कि स्वच्छता अभियान एक निरंतर प्रक्रिया हो। एक बार की सफाई निष्प्रभावी हो जाएगी यदि हम प्रदूषण के कारकों को जड़ से समाप्त नहीं करते। इसके लिये गंगा के तट वाले राज्यों में पर्याप्त जलशोधन संयंत्र युद्ध स्तर पर लगाए जाने चाहिए। साथ ही गंगा सफाई अभियान की नियमित निगरानी होनी चाहिए। इसमें आधुनिक तकनीक का भी सहारा लिया जाना चाहिए। लोगों को बताया जाना चाहिए कि गंगा सिर्फ नदी नहीं है यह खाद्य श्रृंखला को संबल देने वाली तथा हमारी आध्यात्मिक यात्रा से भी जुड़ी है। गंगा में जहरीला कचरा बहाने वाले उद्योगों पर भी आर्थिक दंड लगाना चाहिए। इसी से यह उम्मीद की जा सकती है कि इसके जरिए मानव सभ्यता के लिए एक बेहद जरूरी नदी में फिर से जीवन भर सकेगा। वास्तव में गंगा एक संपूर्ण संस्कृति की वाहक रही है, जिसने विभिन्न साम्राज्यों का उत्थान-पतन देखा, किंतु गंगा का महत्व कम न हुआ। आधुनिक शोधों से यह भी प्रमाणित हो चुका है कि गंगा की तलहटी में ही उसके जल के अद्भुत और चमत्कारी होने के कारण मौजूद है। यद्यपि औद्योगिक विकास ने गंगा की गुणवत्ता को दूषित किया है, किन्तु उसका महत्व यथावत है। उसका महात्म्य आज भी सर्वोपरि है। गंगा स्वयं में संपूर्ण संस्कृति है, संपूर्ण तीर्थ है, उन्नत एवं समृद्ध जीवन का आधार है, जिसका एक गौरवशाली इतिहास रहा है।

यह खबर आई थी कि सरकार 2022 तक गंगा नदी में गंदे नालों के पानी को गिराने से पूरी तरह रोक देगी और इस मसले पर एक मिशन की तरह काम चल रहा है। लेकिन ताजा स्थितियां एवं गंगा का प्रदूषण बताता है कि इस नदी के निर्मलीकरण के लिए चलाई जाने वाली योजनाओं की उपलब्धि वास्तव में कितनी है? नीतियों और योजनाओं के बरक्स उन पर अमल की यह तस्वीर राजनीति इच्छाशक्ति एवं प्रशासनिक लापरवाही को ही दर्शाती है। अन्यथा क्या कारण है कि नदियों के प्रदूषण को दूर करने के क्रम में सबसे ज्यादा जोर गंगा को स्वच्छ बनाने पर ही दिया गया, मगर इसका हासिल आज भी संतोषजनक नहीं है। सही मायनों में आज गंगा के उद्धार के लिये सरकार के साथ-साथ हर भारतीय को भगीरथ जैसा दायित्व निभाना होगा। तभी सदियों से अविरल बह रही जीवनदायी गंगा की प्रतिष्ठा एवं पवित्रता भी फिर से स्थापित हो सकेगी। फिर एनजीटी को यह न कहना पड़ेगा कि फलां जगह का गंगाजल आचमन करने लायक नहीं रह गया है।

आरोप-प्रत्यारोप सक्रिय राजनीति का पैमाना नहीं

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

लेखक स्तंभकार हैं।

राजनीति में पद की गरिमा को ताक पर रखकर तर्क-वितर्क का स्थान कुतर्क ने ले लिया है। वह समय अब नहीं रहा जब राजनीति में उच्चस्तरीय आदर्शों का परिपालन किया जाता रहा था। आए दिन राजनीतिज्ञों के उलजलूल बयानों से लोकतंत्र में राजनीतिक मर्यादाएं तार-तार होती जा रही है। अनर्गल प्रलापों का सिलसिला निरंतर जोर पकड़ता जा रहा है। राजनीति में शुचिता और पवित्रता बीते दौर की बात होती जा रही है। येन-केन-प्रकारेण सत्ताप्राप्ति की चाहत में नैतिक मूल्यों को ताक पर रख दिया गया है। निराधार आरोप तथा आधार सहित आरोप मैं कोई अंतर नहीं रह गया है। हवा में तैरते आरोप हर एक को संदेह के दायरे में लिए हुए हैं। लगभग यही स्थिति सामाजिक जनजीवन में स्पष्ट तौर पर दिखाई देती है।

अलग-अलग परंपराएं व रीति-रिवाजों को अपने अपने पूर्वाग्रह के आधार पर आकलित किया जा रहा है। राजनीति और समाज में विचारधाराएं भी अस्त-व्यस्त होती नजर आती है। व्यावहारिक धरातल पर आम नागरिकों का राजनीतिक दृष्टिकोण जातीय तथा क्षेत्रीय आधार पर निर्धारित हो रहा है। राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नागरिकों का इतना ध्यान केंद्रित नहीं है कि वह बड़ी सोच को लेकर चल सके। ऐसे में छोटे-छोटे कारण ही बड़े परिवर्तन के जनक सिद्ध होते रहे हैं। जो जिसका नेतृत्व करता है, वह उसे अपने तौर तरीके से हांक रहा होता है। उथली सोच के आधार पर नेतृत्व का चयन, राजनीति में उच्चस्तरीय आदर्शों की स्थापना में बाधक सिद्ध हो सकता है।

ऐसे में राजनीतिज्ञों द्वारा आए दिन बोले जा रहे अनर्गल बोलो पर लगाम लगाना अत्यंत आवश्यक प्रतीत होता है। अन्यथा आरोप-प्रत्यारोप का ही सिलसिला चलता रहा तो आम नागरिकों से वास्तविकता का टूटता नाता नकारात्मक परिस्थिति का कारक सिद्ध हो सकता है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के चलतेअनर्गल प्रलापों का सिलसिला निरंतर विस्तार पाता जा रहा है। स्वस्थ राजनीति एवं समाज की संरचना में मतभिन्नता बाधक होकर अनावश्यक विवाद की जनक सिद्ध हो रही है विकसित भारत की परिकल्पना को साकार सिद्ध करने के लिए राजनीति का शुद्धिकरण समय की मांग है। इन दिनों राजनीति में सच को झूठ और झूठ को सच सिद्ध करने की होड़ सी चल रही है।

ऐसे वैसे-चाहे जैसे जनमत का समर्थन पाना राजनेताओं का परम लक्ष्य बन गया है। लक्ष्य को पाने के लिए नैतिक-अनैतिक का भेद नहीं किया जाता। यह स्थिति लोकतंत्र के भविष्य के लिए ठीक नहीं कही जा सकती। निरंकुश राजनेताओं ने मात्र अनर्गल प्रलाप के माध्यम से राजनीतिक परिस्थितियों को दूषित कर रखा है। इन परिस्थितियों के चलते आम नागरिक राजनीतिक दृष्टि से भ्रमजाल में उलझा हुआ दिखाई देता है। लोकतंत्र के भविष्य की दृष्टि से यह स्थिति चिंताजनक ही है। अपने-अपने राजनीतिक स्वार्थों के चलते इन विचारणीय पहलुओं पर गौर नहीं किया जाना, गहन चिंता का विषय है। दरअसल राजनीति में विरोधाभासी विचारधाराएं कालांतर में समाज में गुठली संघर्षों को भी जन्म दे सकती है।

विकसित भारत की परिकल्पना को साकार सिद्ध करने के लिए राजनीति के शुद्धिकरण की दिशा में ठोस कदम उठाना आवश्यक है। इस दिशा में सर्वप्रथम आवश्यकता इस बात की है कि अनर्गल आरोप-प्रत्यारोप पर विराम लगाया जाए। निश्चित रूप से जब तक आम नागरिक अपना विषय विशेष पर स्पष्ट अभिमत नहीं रखेंगे, तब तक लोकतंत्र की परिपक्वता में संदेह बना रहेगा। ऐसे में यह जरूरी है कि राजनीति में प्रामाणिक तथा नैतिक मूल्यों की स्थापना की दिशा में कारगर कदम उठाया जाए। निश्चित रूप से जब राजनीति में निराधार को आधार नहीं बनाया जा सकेगा तब ही नागरिकों की राजनीतिक जागृति, सकारात्मक परिणाम दे सकेगी।

बेहतर हो यदि राजनीतिक तथा सामाजिक नेतृत्व उन विषयों को चिन्हित करें, जिस पर की सर्वमान्य स्थिति होना राष्ट्र एवं समाज के लिए परम आवश्यक प्रतीत होता हो। अन्यथा गंभीर से गंभीर विषय पर भी मतभिन्नता की स्थिति राष्ट्र एवं समाज को भारी पड़ सकती है। यह निश्चित है कि मतभिन्नता की स्थिति में अलग-अलग वर्ग एवं समूह की शारीरिक एवं मानसिक श्रम शक्ति अनावश्यक रूप से जाया होती रहती है। अनावश्यक टकराव की स्थिति समाज में कानून और व्यवस्था के सम्मुख भी चुनौती बना करती है। ऐसे में जरूरत इस बात की है कि राजनीति हो या समाज, लेकिन नेतृत्व को सर्वसम्मत विषयों पर आम सहमति बनाने का प्रयास अवश्य करना चाहिए। ऐसा होने पर भ्रमजाल में उलझे आम नागरिक महत्वपूर्ण विषयों पर अपनी स्पष्ट राय बना सकेंगे।

कुल मिलाकर मुद्दे की बात यह कि इस समय देश-प्रदेश में राजनेताओं को चिंतनशील होने की नितांत आवश्यकता हैं। राजनीतिक सफलता प्राप्त करने के लिए आक्रामक होना कोई जरूरी बात नहीं होती। विचारों की गहराई और ऊंचाइयों के आधार भी राजनीतिक सफलता प्राप्त की जा सकती है। देश-प्रदेश में शैक्षणिक जागृति के साथ-साथ राजनीतिक जागृति साफ तौर पर दिखाई देती है, इसके बावजूद राजनीति का स्तर दिनोंदिन गिर रहा है। यही कारण है कि आजकल राजनेताओं की बात उतनी गंभीरता से नहीं ली जाती - जितनी गंभीरता से लोकतंत्र की राजनीति में नागरिकों को लेना चाहिए। एक प्रकार से अधिकांश राजनेता अपनी प्रामाणिकता खोते जा रहे हैं।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

प्रदीप औदिच्य

लेखक व्यंग्यकार हैं।

समोसे की सुरक्षा में सरकार

मैं कई दिनों से परेशान था कि क्या मैगी पास्ता मोमोज की हवा में समोसा भारत की धरती से लुप्तहो जायेगा। इस देश के सबसे लाडले, चहते और गांव से लेकर अंतरिक्ष तक धूम मचाने वाले खाद्य पदार्थ का क्या भविष्य है,,?

लेकिन मैं अब आश्वस्त हूं कि ये धरती वीरों से खाली नहीं हुई है कोई तो है जो अभी समोसे के लिए अपनी सत्ता का इस्तेमाल कर सकता है।कोई तो है जो अपने खोए हुए समोसे को ढूंढने में बड़े होनहार योग्य पुलिस अधिकारियों के लिए दौड़ा सकता है।

बधाई हिमाचल के मुख्यमंत्री को दिल से कढ़ाई भर के बधाई।वाकई मुख्यमंत्री जी समोसा चीज़ ही ऐसी है।चीनी खाने ने भारत में चारों तरफ पैर पसारे है पर इस तिकोने आइटम की प्रसिद्धि को कम नहीं कर पाया है।इसके दीवाने आम आदमी से लेकर मुख्य मंत्री तक हैं।दिल्ली वाले मुख्यमंत्री तो एक साल में कई करोड़ के समोसे खा गए।

लेकिन ये अद्भुत है,बड़ा मामला है आखिर मुख्यमंत्री के समोसे गए कहां ? इसकी जांच होनी चाहिए,पुलिस को ये पहली फुर्सत में उस चटोरे आदमी को ढूंढ निकालना चाहिए जो मुख्यमंत्री के समोसे को खा गया।

राज्य की सुरक्षा ,नागरिक सुरक्षा तो बाद में होती रहेगी,,उसका क्या है नागरिक कोई पुलिस के भरोसे पर चल रहे है क्या? ज्यादा से ज्यादा क्या होगा कुछ दिन नागरिक बिना हेलमेट के निकल जाएंगे । मर्डर क्या पुलिस रोक लेती है जो होना है वह होता रहेगा..। यही ईश्वर का विधान है पर राज्य के विधि और विधान को समोसे के आसपास होना चाहिए।

समोसे का सवाल है..वो समोसा राज्य अतिथि का दर्जा प्राप्त था,एक तो पांच सितारा होटल से आया और फिर मुख्यमंत्री का प्रेम था। सुक्खू जी आप ने अपने पचास से ज्यादा अधिकारी समोसे की तलाश में लगा दिए, मै दिल से आपका आभारी हूं। दिल चाहता है मैं आपके हाथ चूम लूं, आपके राज्य की जनता को आपका नागरिक अभिनंदन करना चाहिए। लेकिन साहब जनता को अपनी पड़ी है उसे तो पुलिस से ट्रैफिक जाम से मुक्ति चाहिए ,वह समझती ही नहीं है आज तक ऐसा कोई व्यक्ति है जो जाम में फंस कर चार पांच दिनों तक घर नहीं जा पाया हो सब निकल ही जाते है..चार पांच घंटे में।

मैं इस देश के नागरिक से पूछना चाहता हूं..चलो दो चार लोग मर भी गए तो क्या होगा तुम्हे सरकार चार पांच लाख रुपए दे देगी । मुख्यमंत्री जी के समोसे की सुरक्षा जरूरी है..।

मैने समोसे के दीवाने देखे है मै खुद भी समोसे से अगाध प्रेम करता हूं..ठेले पर खड़े होकर समोसे खाए है,कढ़ाई में झूमते नाचे समोसे एक अद्भुत दृश्य पैदा करते है। एक बार ठेले वाले ने मुझसे पहले समोसे एक अन्य व्यक्ति को दे दिए मैने उस समय भी विरोध जताया था, इसकी सीआईडी जांच की मांग की थी। उस में सब मुझ पर हंस रहे थे,आज वह खुद पर हंस रहे होंगे देखा एक दिन ऐसा भी आ गया।

जांच होनी चाहिए उस समोसे चोर को जल्दी से पकड़ा होना चाहिए, उसे ऐसी सजा मिलनी चाहिए कि कोई दुनिया में उस से उसकी प्रिय वस्तु को अलग न कर सके।

माननीय मुख्यमंत्री जी मैं जानता हूं जब किसी व्यक्ति को ये पता चले कि उसकी प्रिय चीज उस तक आते आते रास्ते से कही निकल गई..किसी और को मिल गई जो उस चीज का असली हकदार नहीं था..उस पर क्या बीतेगी? उसका मन तपड़ कर रहे जाएगा। किसी भी सरकारी मीटिंग में नहीं लगेगा।

समोसा प्रेमी ही इस बात को अच्छे से समझ सकता है कि आप मीटिंग में बैठे-बैठे इस बात का इंतजार कर रहे है कि बस अभी समोसा आते होंगे। उसके स्वाद का विचार कर आपके मुंह में पानी स्खलित हो रहा होगा..तभी ये पता चले कि वह तो बाहर के बाहर ही गायब हो गए स्टाफ का कोई आदमी खा गया सिस्टम के फेलियर का इस से बड़ा कोई उदाहरण नहीं हो सकता।

सुक्खू जी आप एक कठोर निर्णय लीजिए दो साल तक स्टाफ के नाश्ते से समोसे न देने का आदेश दीजिए । आप समोसा टैक्स लगाइए इतना बड़ा टैक्स लगाइए कि हिमाचल की जनता को ये पता चलना चाहिए कि हमारे मुख्यमंत्री न खाएंगे न खाने देंगे।

पुष्कर मेले में जीवंत होती है लोक संस्कृति

आयोजन विशेष
रमेश सर्राफ धमोरा
लेखक पत्रकार हैं।

राजस्थान में त्यौहारों, पर्वो एवं मेलों की अनूठी परम्परा एवं संस्कृति है वैसी देश में अन्यत्र कहीं मिलना कठिन है। यहां का प्रत्येक मेला एवं त्यौहार लोक जीवन की किसी किवदन्ती या किसी ऐतिहासिक कथानक से जुड़ा हुआ है। इसलिए इनके आयोजन में सम्पूर्ण लोक जीवन पूरी सक्रियता से भाग लेता है। इन मेलों में राजस्थान की लोक संस्कृति जीवन्त हो उठती है। इन मेलों के अपने गीत हैं, जिनके प्रति जन साधारण की गहरी आस्था दृष्टिगोचर होती है। इससे लोग एकता के सूत्र में बंधें रहते हैं। राजस्थान में अधिकांश मेले पर्व व त्यौहार के साथ जुड़े हुए हैं।

मेलों का महत्व देवताओं एवं देवियों की आराधना को लेकर भी है क्योंकि देर्वाचन से मानव को शान्ति प्राप्त होती है। वैसे तो राजस्थान के विभिन्न भागों में बहुत बड़ी संख्या में मेले आयोजित किए जाते हैं, परन्तु कुछ गिने-चुने मेलों का अपना ही महत्व होता है। यहां के धार्मिक मेलों में सम्बंधित धर्म अनुयायियों के अतिरिक्त अन्य धर्म के लोग एवं अन्य जाति के लोग भी खुलकर भाग लेते हैं।

अजमेर से लगभग 11 कि.मी. दूर हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल पुष्कर है। यहां पर कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता है, जिसमें बड़ी संख्या में देशी-विदेशी पर्यटक आते हैं। पुष्कर मेला कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक लगता है। मेलों के रंग राजस्थान में देखते ही बनते हैं। ये मेले मरुस्थल के गांवों के कठोर जीवन में एक नवीन उत्साह भर देते हैं। लोग रंग-बिरंगे परिधानों में सज-धजकर जगह-जगह पर नृत्य गान आदि समारोहों में भाग लेते हैं। यहां पर काफी मात्रा में भीड़ देखने को मिलती है। लोग इस मेले को श्रद्धा, आस्था और विश्वास का प्रतीक मानते हैं। पुष्कर मेला थार मरुस्थल का एक लोकप्रिय व रंगों से भरा मेला है। पुष्कर झील भारतवर्ष में पवित्रतम स्थानों में से एक है। प्राचीनकाल से लोग यहां पर प्रतिवर्ष कार्तिक मास में एकत्रित हो भगवान ब्रह्मा की पूजा उपासना करते हैं।

पुष्कर मेले का एक रोचक अंग ऊंटों का क्रय-विक्रय है। निस्संदेह अन्य पशुओं का भी व्यापार किया जाता है। परन्तु ऊंटों का व्यापार ही यहां का मुख्य आकर्षण होता है। मीलों दूर से ऊंट व्यापारी अपने पशुओं के साथ में पुष्कर आते हैं। सम्भवतः यह ऊंटों का संसार भर में सबसे बड़ा मेला होता है। कार्तिक के महीने में यहां लगने वाला ऊंट मेला दुनिया में अपनी तरह का अनूठा तो है ही साथ ही यह भारत के सबसे बड़े पशु मेलों में से भी एक है। मेले के समय पुष्कर में कई संस्कृतियों का मिलन सा देखने को मिलता है। एक तरफ तो मेला देखने के लिए विदेशी सैलानी बड़ी संख्या में पहुंचते हैं, तो दूसरी तरफ राजस्थान व आसपास के तमाम इलाकों से आदिवासी और ग्रामीण लोग अपने-अपने पशुओं के साथ मेले में शरीक होने आते हैं।

मेला रेत के विशाल मैदान में लगाया जाता है। ऊंट मेला और रेगिस्तान का नजदीकी रिश्ता है। इसलिए ऊंट तो हर तरफ देखने को मिलते ही हैं। लेकिन कालांतर में इसका स्वरूप एक विशाल पशु मेले का हो गया है। इसलिए लोग ऊंट के अलावा घोडे, हाथी, और बाकी मवेशी भी बेचने के लिए आते हैं। सैलानियों को इन पर सवारी का लुत्फ मिलता है।

मेला स्थल से परे पुष्कर नगरी का माहौल एक तीर्थनगरी सरीखा होता है। कार्तिक में स्नान का महत्व हिंदू मान्यताओं में वैसे भी काफी ज्यादा है। इसलिए यहां साधु भी बडी संख्या में नजर आते हैं। मेले के शुरुआती दिन जहां पशुओं की खरीद-फरोख्त पर जोर रहता है। वहीं बाद के दिनों में पूर्णिमा पास आते-आते धार्मिक गतिविधियों का जोर हो जाता है। श्रद्धालुओं के सरोवर में स्नान करने का सिलसिला भी पूर्णिमा को अपने चरम पर होता है।

पुष्कर मेले के दौरान इस नगरी में आस्था और उल्लास का अनोखा संगम देखा जाता है। पुष्कर को इस क्षेत्र में तीर्थराज कहा जाता है और पुष्कर मेला राजस्थान का सबसे बड़ा मेला माना जाता है। पुष्कर मेले की प्रसिद्धि का अनुमान इस बात से ही लगाया जा सकता है कि ऐतिहासिक धरोहरों के रूप में ताजमहल का जो दर्जा विदेशी सैलानियों की नजर में है। ठीक वही महत्व त्यौहारों से जुडे पारम्परिक मेलों में पुष्कर मेले का है।

पुष्कर को इस क्षेत्र में तीर्थराज कहा जाता है। क्योंकि यहां समूचे ब्रह्मांड के रचयिता माने जाने वाले ब्रह्मा जी का निवास है। पुष्कर के महत्व का वर्णन पद्मपुराण में मिलता है। इसके अनुसार एक समय ब्रह्मा जी को यज्ञ करना था। उसके लिए उपयुक्त स्थान का चयन करने के लिए उन्होंने धरा पर अपने हाथ से एक कमल पुष्प गिराया। वह पुष्प अरावली पहाडियों के मध्य गिरा और लुढ़कते हुए दो स्थानों को स्पर्श करने के बाद तीसरे स्थान पर ठहर गया। जिन तीन स्थानों को पुष्प ने धरा को स्पर्श किया वहां जलधारा फूट पड़ी और पवित्र सरोवर बन गए। सरोवरों की रचना एक पुष्प से हुई इसलिए इन्हें पुष्कर कहा गया। प्रथम सरोवर कनिष्ठ पुष्कर, द्वितीय सरोवर मध्यम पुष्कर कहलाया। जहां पुष्प ने विराम लिया वहां एक सरोवर बना, जिसे ज्येष्ठ पुष्कर कहा गया। ज्येष्ठ पुष्कर ही आज पुष्कर के नाम से विख्यात है। पुष्कर में लगभग चार सौ मंदिर है। इसीलिए इसे मंदिर नगरी भी कहा जाता है।

कई आस्थावान लोग पुष्कर परिक्रमा भी करते हैं। सुबह और शाम के समय यहां आरती होती है। वह दृश्य अत्यंत मनोहारी होता है। इतनी विशेषताओं के कारण पुष्कर को तीर्थराज कहने के अलावा देश का पांचवां धाम भी कहा जाता है। पुष्कर सरोवर में कार्तिक पूर्णिमा पर पर्व स्नान का बडा महत्व माना गया है। क्योंकि कार्तिक पूर्णिमा पर ही ब्रह्मा जी का वैदिक यज्ञ संपन्न हुआ था। तब यहां सम्पूर्ण देवी-देवता एकत्र हुए थे। उस पावन अवसर पर पर्व स्नान की परम्परा सदियों से चली आ रही है। जिस प्रकार प्रयाग को तीर्थराज कहा जाता है उसी प्रकार से इस तीर्थ को पुष्करराज कहा जाता है।

महाभारत में पुष्कर राज के बारे में लिखा है कि तीनों लोकों में मृत्यु लोक महान है और मृत्यु लोक में देवताओं का सर्वाधिक प्रिय स्थान पुष्कर है। चारों धामों की यात्रा करके भी यदि कोई व्यक्ति पुष्कर सरोवर में डुबकी नहीं लगाता है तो उसके सारे पुण्य निष्फल हो जाते हैं। यही कारण है कि तीर्थ यात्री चारो धामों की यात्रा के बाद पुष्कर की यात्रा जरूर करते हैं। तीर्थ राज पुष्कर को पृथ्वी का तीसरा नेत्र भी माना जाता है। पुष्कर नगरी में विश्व का एकमात्र ब्रह्मा मंदिर है तो दूसरी तरफ दक्षिण स्थापत्य शैली पर आधारित रामानुज संप्रदाय का विशाल वैकुंठ मंदिर। इनके अलावा सावित्री मंदिर, वराह मंदिर के अलावा अन्य कई मंदिर हैं। पास में ही एक छोटे से मन्दिर में नारद जी की मूर्ति। एक मन्दिर में हाथी पर बैठे कुबेर तथा नारद की मूर्तियां हैं।

ब्रह्मवैवर्त पुराण में उल्लिखित है कि अपने मानस पुत्र नारद द्वारा सृष्टिकर्म करने से इन्कार किए जाने पर ब्रह्मा ने उन्हें शाप दे दिया कि तुमने मेरी आज्ञा की अवहेलना की है। अतः मेरे शाप से तुम्हारा ज्ञान नष्ट हो जाएगा और तुम गन्धर्व योनि को प्राप्त करके कामिनियों के वशीभूत हो जाओगे। तब नारद ने भी दुःखी पिता ब्रह्मा को शाप दिया कि आपने बिना किसी कारण मुझे शाप दिया है। अतः मैं भी आपको शाप देता हूं कि तीन लोक में आपकी पूजा नहीं होगी और आपके मंत्र, श्लोक कवच आदि का लोप हो जाएगा। तभी से ब्रह्मा जी की पूजा नहीं होती है। मात्र पुष्कर क्षेत्र में ही वर्ष में एक बार उनकी पूजा-अर्चना होती है।

हिन्दुओं के लिए पुष्कर एक पवित्र तीर्थ व महान पवित्र स्थल है। वर्तमान समय में इसकी देख-रेख की व्यवस्था सरकार ने सम्भाल रखी है। अतः तीर्थस्थल की स्वच्छता बनाए रखने में भी काफी मदद मिली है। यात्रियों की आवास व्यवस्था का विशेष ध्यान रखा जाता है। यहां आने वाला हर तीर्थयात्री यहां की पवित्रता और सौंदर्य की मन में याद संजो कर ही लौटता है।

अनोखा संगम

जीवन
रमेश रंजन त्रिपाठी
लेखक स्तंभकार हैं।

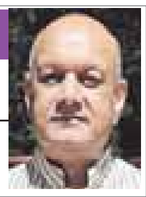

वे उस पुराने जमाने के थे जब पानी खरीदकर नहीं पीना पड़ता था, शौकिया घर से बाहर खाना खाने नहीं जाते थे। उन दिनों स्वीगी या जोमैटो से खाने-पीने की वस्तुएँ नहीं मंगाई जाती थीं, बल्कि गर्मी के दिनों में शाम को कुल्फी, आइसक्रीम वाला, सर्दियों में गरम समोसेवाला और सभी मौसमों में खोमचेवाला घर-पहुँच सेवा मुहैया कराया करते थे। फिल्में देखने टॉकीज जाना पड़ता था, जिसमें फिल्म शुरू होने से पहले सरकारी न्यूज रील दिखाई जाती थी। सामाजिक मनोरंजन के लिए सालाना मेलों का इंतजार होता था और गाने सुनने का साधन ग्रामोफ़ोन या रेडियो होते थे। देर रात तक कवि सम्मेलन में जागना आम बात थी।

अधिकांश स्कूल सरकारी होते थे जिनमें टाट-पट्टी पर बैठना अच्छी सुविधा मानी जाती थी। ऐसे मास्साब अजूबा होते थे जो विद्यार्थियों के कान खींचना, मुर्ग़ा बनाना या छड़ी से हथेली लाल करने में यकीन नहीं करते थे। ट्यूशन पढ़नेवाले बच्चों को पढ़ाई लिखाई में कमजोर समझा जाता था। पत्र लिख लेना और रामायण पढ़ लेना लड़कियों के पूर्ण शिक्षित होने का प्रमाण हुआ करता था। संदेश भेजने का एकमात्र साधन चिट्ठी होती थी जिसे सरकारी पोस्ट ऑफिस के जरिए भेजा जा सकता था। प्रेमपत्र लिखने का हुनर टीन एज आते ही अपने आप आ जाता था। जरूर किसी ग्रंथि से लवलेटर लिखने वाले हार्मोन का स्राव शुरू हो जाता होगा। यह एकतरफ़ा आकर्षण बरसाती मेंढक की तरह अल्प समय के लिए अपना प्रभाव दिखाकर शनैः शनैः विलुप्त होने लगता था। अधिकांश मामलों में अरेंज मैरिज हुआ करती थी जिसमें दूल्हा-दुल्हन के परिजन पता नहीं किस जमाने की अपनी दबी कुचली हसरतों को पूरा करने के लिए सारे पैंतरे आजमाया करते थे। ऐसे अवसरों पर फूफा का मुंह फुलाना अनिवार्य होता था अन्यथा अपशकुन मान लिया जाता।

उस पुराने जमाने के बंदे का जन्मदिन इस नए जमाने के लोग मना रहे थे जो कुछ मीठा हो जाए के नाम पर केक, पेस्ट्री या चॉकलेट खाते हैं, सिनेमाहाल में मूँगफली नहीं पॉपकॉर्न चबाते हैं। पुराने जमाने के बुजुर्ग को अटपटा लग रहा था, लेकिन गनीमत थी कि अधिकांश मेहमान उन्हें बधाई और उपहार देकर अपने ग्रुप में खाते-पीते मशरूफ हो जाते थे। बहुत से लोग इस मौके का फायदा उठाकर जरूरी मसलों पर बातचीत को निपटाने के अभियान में जुट हुए थे। उनका मानना था कि दुनिया में अच्छे-बुरे, राजनीति और व्यापार, जंग और शांति को लेकर उनकी समझ सबसे बेहतर है।

बुजुर्गवार को समझ में नहीं आ रहा था कि उनके जन्मदिन पर लोगों के इतना खुश होने की वजह क्या है? क्या पिछले साल की इसी तारीख के बाद तीन सौ पैंसठ दिन और जीवित रहना इतनी बड़ी बात है? या असली कारण वह अनिश्चितता है जिसमें पता नहीं रहता कि अगले बर्थडे पर केक खाने को मिलेगा भी या नहीं? अथवा इतने सब लोग, जिनमें से अनेक उन्हें ठीक से जानते भी नहीं, सचमुच उनके शुभचिंतक हैं? वे कन्फ्यूज होकर माया मैडम और उसके साथी मोह के जाल में उलझने के बजाय नॉर्मल इंसान बने रहना चाहते थे। इस काम में काम आया उनके सीनियर सिटिजन होने का तजुर्बा। उन्होंने घर जाकर सूट उतारा और अपना पसंदीदा कुर्ता पजामा पहनकर कुछ देर असमय साथ छोड़ गई धर्मपत्नी की फोटो के पास खड़े रहे। वे पहले भी कई महत्वपूर्ण मौक़ों पर इसी पोज़ीशन में अपने बच्चों की माँ के साथ मूक वार्तालाप किया करते थे। फिर वे वापस पार्टी में आ गए। उन्होंने सिर्फ कपड़े नहीं बदले थे बल्कि अपनी व्यग्रता से भी मुक्त हो गए थे। उन्होंने अपने भीतर प्रवाहित हो रही निर्मल पवित्र गंगा रूपी संस्कारों में आधुनिक सोच की यमुना और बुद्धिमती अदृश्य सरस्वती को समाहित कर लिया था। अब वे जन्मदिन की पार्टी के बहाने स्वाभाविक और रिलैक्स भाव से मेहमानों का साथ एन्जॉय कर रहे थे। पुराने और नए जमाने के इस अनोखे संगम में सभी आनंद की डुबकी लगा रहे थे।

नशे का फैलता व्यापार और जघन्य अपराध

मुद्दा
डॉ. आरके पालीवाल
लेखक गांधीवादी विचारक हैं।

नशे का व्यापार पूरी दुनिया में संगीन अपराध माना जाता है इसलिए उससे जुड़ने में किसी भी देश के सामान्य नागरिक हिचकिचाते हैं। स्थानीय स्तर पर छोटे छोटे अपराधी और नशे की लत के शिकार लोग अपनी दैनिक जरूरतें पूरी करने के लिए नशीली वस्तुओं के स्थानीय स्तर पर वितरण में तो शामिल हो जाते हैं लेकिन नशे की सामग्री के उत्पादन और उसे बड़े पैमाने पर प्रादेशिक, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाने के काम में संगठित राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय गिरोह सक्रिय होते हैं। विगत कुछ दशकों में विभिन्न आतंकवादी संगठनों का नशे के व्यापार में लिप्त होना वर्तमान दौर की गंभीर वैश्विक समस्या बन चुकी है। बहुत से देशों की सरकार और खुफिया एजेंसी भी एक तीर से कई निशाने साधने के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से नशे के कारोबार को बढ़ावा देती हैं। दुश्मन देश के नागरिकों को नशे की लत डालकर कमजोर करने के साथ साथ इस धंधे से मिलने वाली मोटी रकम से भारी मात्रा में खतरनाक हथियार खरीदे जा सकते हैं और बड़ी संख्या में आतंकियों को भाड़े पर नियुक्त किया जा सकता है। हमारे देश में नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो, पुलिस, सीमा सुरक्षा बल और कस्टम्स आदि विभागों के अधिकारी और कर्मचारी अपने अपने स्तर पर नशे से जुड़े लोगों की धरपकड़ भी करते हैं लेकिन संगठित अपराधी इन एजेंसियों को चकमा देने के लिए नए नए तरीके ईजाद करते रहते हैं। यही कारण है कि नशे का कारोबार निरंतर बढ़ रहा है और यह बीमारी अब महानगरों से लेकर गांवों तक पैर पसार चुकी है।

कुछ समय पहले मध्य प्रदेश में राजधानी भोपाल के पास नशीली सामग्री बनाने की एक फैक्ट्री से सोलह सौ करोड़ कीमत की ड्रग्स की जब्ती से यह संकेत मिलता है कि नशे के व्यापारी अब नए नए अड्डे तलाश रहे हैं क्योंकि इसके पहले भोपाल के आसपास कभी भारी मात्रा में ऐसी सामग्री की खेप नहीं पकड़ी गई। इसके बाद मध्य प्रदेश के आदिवासी अंचल से भी ऐसी सामग्री की धरपकड़ ने मध्य प्रदेश को भी पंजाब जैसे राज्यों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया जहां नशे का संगठित कारोबार होता है। इस मामले मे पकड़े गए अपराधी का नाम भाजपा और कांग्रेस के नेताओं के साथ भी जोड़ा गया है। प्रदेश के उप मुख्यमंत्री के साथ उसके फोटो से यह साबित होता है कि इन अपराधियों की पहुंच उच्च पदों पर आसीन लोगों तक है जिसका उपयोग ये स्थानीय स्तर पर अपना रुतबा जमाने के लिए करते हैं।

गांधी ने अपने विविध रचनात्मक कार्यों में नशामुक्ति को भी प्राथमिकता दी थी और इस काम में महिलाओं को आगे किया था। उन दिनों नशे के खतरनाक रसायनों का ऐसा संगठित कारोबार नहीं था जैसा वर्तमान दौर में है। इधर नशे की व्यापकता में भी खासी वृद्धि हुई है। स्कूल कॉलेज के छात्र छात्राओं की पार्टियां हों या बॉलीवुड और कॉरपोरेट जगत के उच्च आय वाले एग्जीक्यूटिव नशे के बगैर कम ही पार्टी संपन्न होती हैं।महिलाओं के खिलाफ हुए अधिकतर जघन्य यौन अपराधों में नशे में लिप्त युवाओं की संलिप्तता के प्रमाण से नशे और संगीन अपराधों का चोली दामन का संबंध साफ दिखता है। कुछ समाजसेवी संस्थाएं नशा मुक्ति केंद्र चला रही हैं लेकिन एक तो उनकी संख्या बहुत कम है दूसरे बहुत से लोग इन केंद्रों तक नहीं पहुंच पाते। लोकलाज के कारण बहुत से लोग अपने परिजनों की नशे की लत पर पर्दा भी डालते हैं ताकि उनकी बदनामी न हो। बहुत से घर में अधिकांश लोग कोई न कोई नशा करते हैं, ऐसे घरों में नशे को तब तक बुरा नहीं माना जाता जब तक कोई नशेड़ी बड़ा कांड नहीं करता।नशा मुक्ति केंद्र चलाने वाले समाजसेवियों के लिए ऐसे परिवारों का इलाज करना टेढ़ी खीर है। नशे से विशेष रूप से युवा पीढी को बचाना सबसे जरूरी है। बचपन और युवपन में लगी नशे की लत ताउम्र परेशान करती है। व्यापक जन अभियान ही युवा पीढी को नशे से बचा सकता है।

‘मीडिया से राजनीतिक कार्टूनों का गायब होते जाना सुविचारित षड्यंत्र है’

देश और खासकर मराठी जगत के जाने माने कार्टूनिस्ट विवेक मेहेत्रे इन दिनो मीडिया में राजनीतिक कार्टून्स के गायब होते जाने को एक सोचा समझा षड्यंत्र मानते हैं। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि राजनीतिज्ञों और उनके अंध समर्थकों का कार्टून्स को लेकर असहिष्णु होना राजनीतिक कार्टून विधा के लिए दुखद ही नहीं चिंताजनक है। इस परिस्थितियों के चलते मुझे डर है कि कहीं आने वाले समय में कार्टून परिदृश्य से राजनीतिक कार्टून जैसी और महत्वपूर्ण विधा विलुप्त ही ना हो जाए।

चिंता
संदीप राशिनकर

प्रसिद्ध व्यंग्य चित्रकार विवेक मेहेत्रे ने यह चिन्ता उनसे हुई चर्चा में जाहिर की। वे इंदौर से विगत 25 वर्षो से प्रकाशित हो रहे मराठी लोकप्रिय दिवाली अंक श्री सर्वोत्तम के रौप्य महोत्सव में शिरकत करने के लिए इंदौर आए थे। पारिवारिक, सामाजिक और राजनीतिक विषयों की विसंगतियों पर कटाक्ष करते उनके आज तक 75 हजार से अधिक व्यंग्यचित्र प्रकाशित होकर देश विदेश में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुके है।

चर्चा के दौरान व्यंग्यचित्र विधा में रुचि निर्माण और प्रशिक्षण की बात करने पर वे कहते हैं कि जीवन के पल पल में व्यंग्यचित्रों की व्यापक उपस्थिति होने के बावजूद इस विधा के विधिवत प्रशिक्षण की शैक्षणिक व्यवस्था और कोर्स का ना होना दुखद है। इसी कमी को कुछ हद तक दूर करने की दृष्टि से वे आज तक कार्टून विधा प्रशिक्षण की देश विदेश में न सिर्फ कई कार्यशालाएं कर चुके हैं वरन दूरदर्शन और टीवी चैनल पर उनके कार्टून बनाने के रोचक प्रशिक्षण देने वाले कार्यक्रम काफी लोकप्रिय रहे हैं।

विवेकजी कहते है कि इस विधा की संभावनाओं के बारे में लोग अनभिज्ञ है। लेकिन आपको जानकर आश्चर्य होगा कि फोर्ब्स की अमीर लोगों की सूची में कई कार्टूनिस्ट भी मौजूद रहे हैं। यह भी कम आश्चर्यजनक नहीं है कि इतनी भारत जैसे इतनी बड़ी जनसंख्या वाले अपने राष्ट्र में सक्रिय व्यंग्य चित्रकारों की संख्या 150 से भी कम है, और उनमें भी आज मात्र एक महिला कार्टूनिस्ट है ।

अपने व्यंग्यचित्रों पर मिली उत्साहवर्धक प्रतिक्रिया संबंधी प्रश्न के उत्तर में वे कहते है कि बाला साहेब ठाकरे जैसे वरिष्ठ व्यंग्य चित्रकार ने उनकी पसंद के कार्टूनिस्टो के बारे में पूछे जाने पर सिर्फ दो का उल्लेख किया था , जिसमें एक मैं था। विवेकजी ने ने अपने एक कार्टून का उल्लेख करते हुए कहा कि उसमें शिवसेना के किसी अभियान की विसंगतियों पर कटाक्ष था, जिसे स्वयं बाला साहेब की प्रशंसा मिली थी। विवेक मेहेत्रे न सिर्फ बाला साहेब ठाकरे जैसे शीर्षस्थ कार्टूनिस्ट के चहेते हैं वरन महाराष्ट्र में दिए जाने वाले श्रेष्ठ कार्टूनिस्ट पुरस्कार के अब तक नौ बार हकदार बने है।

एक अन्य प्रश्न के जवाब में विवेकजी बताते हैं कि उन्होंने प्रयत्न पूर्वक व्यंग्यचित्रकारों का एक अभिनव सम्मेलन आयोजित किया था जिसे न सिर्फ शिवसेना के मुख्यालय सेना भवन में आयोजित किया गया था वरन स्वयं बाला साहेब अपनी राजनीतिक छबि को परे रख दिन भर

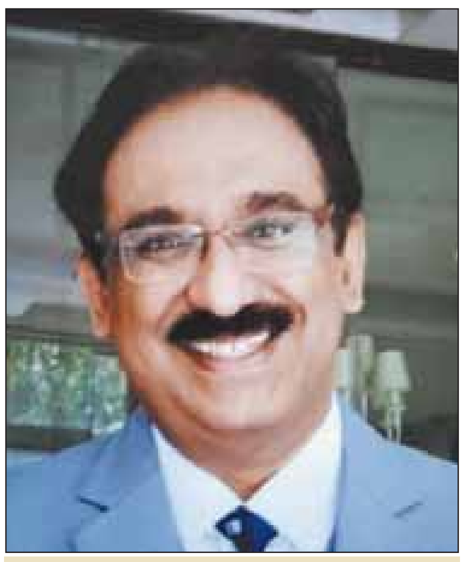

विवेक मेहेत्रे

कार्टूनिस्ट साथियों के साथ विमर्श करते रहे। इस दौरान बनाए गए व्यंग्य चित्रकारों के संगठन को उन्होंने ‘कार्टूनिस्ट कंबाइन’ का नाम दिया था। इसी कड़ी में आगे चलकर ठाणे में एक विशद अखिल भारतीय व्यंग्य चित्रकार सम्मेलन का आयोजन किया था, जिसमें विवेकजी सम्मेलाध्यक्ष थे।

उल्लेखनीय है कि विगत तीस वर्षों से देश परदेश में किया जानेवाला उनका कार्यक्रम ‘हास्य कॉर्नर’ लोगों के मनोरंजन के साथ उनमें व्यंग्यचित्रों के बारे में समृद्ध रुचि का निर्माण भी कर रहा है।

अपने लोकप्रिय ‘राशि वर्ष’ कार्यक्रम के बारे में पूछने पर विवेकजी ने बताया कि चीनी ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन करने के बाद उस पर केन्द्रित यह एक बेहद मनोरंजक कार्यक्रम है। इसके बाद उन्होंने 19 देशों की ज्योतिष पद्धतियों का अध्ययन कर ‘राशिंच्या संगतिने, आयुष्य जगु या गमतीन’ कार्यक्रम बनाया जिसे लोगों ने काफी पसंद किया। कार्टून के माध्यम से लाखों लोगों के चेहरे पर वर्षो से हंसी लाने वाले विवेकजी लोगों के जीवन को सुखी और सफल बनाने के लिए लाइफ कोच, मोटिवेशनल स्पीकर, व्यक्तित्व विकास, टाइम मैनेजमेंट, जीवन साफल्य, स्पीड रीडिंग, यश विवेक जैसे 26 विविध विषयों पर रोचक कार्यक्रमों का अभिनव सृजन कर उसके सैकड़ों सफल प्रयोग कर चुके है। विवेकजी बहुआयामी प्रतिभा के धनी हैं। वे निष्णात लेखक भी हैं। कंप्यूटर, इंटरनेट, ई कॉमर्स, यू ट्यूबर, एआई जैसी आई टी विषयों पर लिखी उनकी अनेकों रोचक शैक्षणिक पुस्तकें प्रशंसित और पुरस्कृत हो चुकी है। उन्होंने कहा कि उनके द्वारा इंटरनेट विषय पर आयोजित विस्तृत शैक्षणिक कार्यक्रमों के परिप्रेक्ष्य में टाइम्स ऑफ इंडिया ने उन्हें ‘नेट मसीहा’ सम्मान से सम्मानित किया था।

कार्टूनिस्ट विवेक मेहेत्रे सिविल इंजीनियरिंग में एम. ई., MBA और MDT कर चुके एक सफल प्रकाशक भी है। उनकी प्रकाशन संस्था ‘उद्वेली’ द्वारा अब तक विविध विषयों पर तकरीबन 500 सुरुचिपूर्ण पुस्तकें , प्रकाशित हो चुकी है। तीन लोकप्रिय दीपावली अंकों के संपादन का कार्य भी उनकी प्रतिभा के आयाम को विस्तारित करता है। प्रतिष्ठित अखबारों,पत्रिकाओं के लिए कार्टून स्तंभ, फीचर के साथ ही वे दूरदर्शन, और अन्य चैनलों पर लगातार कार्यक्रम, संचालन में भी अपनी प्रतिभा दिखा रहे हैं।

बाइक सवार ने चार महिलाओं को मारी टक्कर, दो गंभीर, बाइक सवार की गिरने से मौत

बैतूल। पूजा करके लौट रही चार महिलाओं को बाइक सवार ने टक्कर मार दी। टक्कर के बाद बाइक सवार खुद गिरकर घायल हो गया। जिससे उसकी मौत हो गई, जबकि दो घायलों को भोपाल रेफर किया गया है। घटना बाजार थाना क्षेत्र के छाता गांव की है। घटना में घायल महिला संगीता के बेटे ने बताया कि वे लोग बैतूल के गौठान इलाके के रहने वाले है। सोमवार को उसकी मां और तीन लोग अपनी रिश्तेदार कचना देशमुख और जयश्री के गांव छाता पूजन करने गए थे। यहां से लौटते समय तेज रफ्तार बाइक चला रहे व्यक्ति ने चारों को टक्कर मार दी। बाइक की टक्कर में उर्मिला (40) का जबड़ा टूट गया। वहीं, कंचना देशमुख (30) भी गंभीर रूप से घायल हो गई। दोनों को भोपाल रेफर किया गया है। जबकि, दो अन्य घायल संगीता (35) और जयश्री (28) को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अस्पताल पुलिस चौकी के मुताबिक बाइक सवार रमेश मरकाम (40) अर्जुनवादी का रहने वाला था। वह शराब के नशे में बाइक ड्राइव कर बैतूल से गांव जा रहा था। महिलाओं को टक्कर मारने के बाद वह भी आगे जाकर गिर गया। सिर में आई गहरी चोट के बाद उसे जिला अस्पताल लाया गया। जहां उसकी मौत हो गई। अस्पताल पुलिस चौकी ने मृतक का पीएम कर शव परिजनों को सौंप दिया है।

मासिक बैठक के बाद दीपावली मिलन समारोह में डॉक्टरों का किया सम्मान

जिला आयुष कार्यालय में समारोह संपन्न

बैतूल। जिला आयुष अधिकारी कार्यालय टिकारी में मासिक बैठक और दीपावली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जिले के समस्त औषधालयों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। मासिक बैठक के दौरान सभी कार्यों की समीक्षा के साथ

आगामी योजनाओं पर भी चर्चा की गई। बैठक के बाद दीपावली मिलन समारोह में सभी ने एक-दूसरे को शुभकामनाएं दीं। डॉ. रविंद्र पाटिल और डॉ. भावना पाटिल के पंडित खुशीलाल शर्मा स्नातकोत्तर आयुर्वेद महाविद्यालय एवं चिकित्सालय, भोपाल में चयन होने पर विशेष रूप से उन्हें सम्मानित किया गया। डॉ. रविंद्र पाटिल को शल्य क्रिया विशेषज्ञता में स्नातकोत्तर के लिए प्रवेश मिला है, जबकि डॉ. भावना पाटिल ने स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञता में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में प्रवेश प्राप्त किया है। इस अवसर पर कार्यालय के समस्त स्टाफ ने उन्हें बधाई और शुभकामनाएं दीं, साथ ही उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

नदी पर नहाने गए दो बच्चों की डूबने से मौत

बैतूल। डूबने से दो बच्चों की मौत हो गई। बच्चे नदी पर नहाने गये हुए थे। घटना चोपना थाना क्षेत्र के मालवार गाँव की है। जानकारी के अनुसार गाँव के कुछ बच्चे पास की मालवार नदी में नहाने गए थे। इनमें से 8 वर्षीय नवीन धुर्वे और 13 वर्षीय नेहा धुर्वे गहरे पानी में चले गये और डूबने लगे। जब उनके साथ नहा रहे बच्चों ने घटना देखी, तो उन्होंने तुरंत गाँव के लोगों को इसकी सूचना दी। ग्रामीणों ने भी बिना समय गँवाए चोपना पुलिस को सूचित किया। सूचना मिलते ही चोपना थाना प्रभारी सरविन्द धुर्वे अपनी टीम के साथ मौके पर पहुँचे। एएसआई राजेश कलम, प्रधान आरक्षक ज्ञानसिंह टेकम और आरक्षक नितेश के साथ ग्रामीणों की मदद से पुलिस ने दोनों बच्चों के शवों को पानी से बाहर निकाला। चोपना थाना प्रभारी ने बताया कि बच्चों की नदी में नहाते समय डूबने से मौत हो गई। दोनों शवों को पुलिस ने कब्जे में लेकर पंचनामा तैयार किया और पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। हादसे के बाद गाँव में शोक का माहौल है। फिलहाल पुलिस हादसे की जांच कर रही है।

दृष्टिबाधित शोधार्थी शिवकुमार को मिली पीएचडी

बैतूल। बैतूल निवासी दृष्टिबाधित शोधार्थी शिवकुमार बनखेड़े को शोध उपरांत बरकतउल्ला विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई है। सेवानिवृत्त रेलवे कर्मचारी फत्तु बनखेड़े के पुत्र शिवकुमार बनखेड़े जेएच कॉलेज बैतूल के पूर्व प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग एवं प्रभारी प्राचार्य डॉ.खेमराज मगरदे के शोध निर्देशन में हिंदी विषय से साहिर लुधियानवी के गीतों का मूल्यांकन विषय पर शोध कार्य पूर्ण किया। जिस पर उन्हें बरकतउल्ला विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई है। वर्तमान में बैंक ऑफ बड़ौदा जबलपुर में प्रबंधक राजभाषा के पद पर पदस्थ शिवकुमार बनखेड़े की इस उपलब्धि पर कॉलेज स्टाफ, इष्टमित्रों और परिजनों ने बधाई दी है।

कल नगर भ्रमण करेगी गजानन पालकी यात्रा

16 को शेगांव के लिए प्रस्थान

बैतूल। श्रीसंत गजानन सेवा मंडल के तत्वावधान में बैतूल से शेगांव संत गजानन धाम तक जाने वाली पालकी यात्रा कल 14 नवंबर गुरूवार को नगर भ्रमण करेगी। समिति अध्यक्ष अध्यक्ष पंडित संतोष कमाविसदार ने बताया कि कल पालकी यात्रा प्रातः 8 बजे संत गजानन मंदिर मराठी मोहल्ला, शिवाजी वार्ड कोठी बाजार से नगर भ्रमण के लिए निकलेगी जो दुर्गा मंदिर, कृष्ण मंदिर, थाना रोड, मोती वार्ड साई मंदिर वापस नाग मंदिर अखाड़ा चौक बजरंग मंदिर टिकारी, लिंक रोड, डॉ.राठी के सामने से, चांदनी चौक टिकारी, इसाई चौक, लल्ली चौक, गांधी चौक, ज्योति टॉकीज के सामने से स्टेडियम चौक, शिवाजी चौक, शनि मंदिर के बाजू से जेएच कॉलेज रोड, गंज धर्म शाला रात्रि विश्राम करेगी इसके पश्चात15 नवम्बर को शेगांव के लिए निकलेगी। श्री कमाविसदार ने सभी से पालकी पूजन का लाभ लेने का आग्रह किया है।

ग्यारस के चलते बड़ी संख्या में बिकने आये थे गन्ने, बोर-भाजी और आंवला

धूमधाम से मनाई देवउठनी ग्यारस, अब सुनाई देगी शहनाई

बैतूल। देवउठनी ग्यारस मंगलवार को जिलेभर में धूमधाम से मनाई गई। ग्यारस के साथ ही मांगलिक कार्यों का शुभारंभ भी हो गया। अब शहनाई की गूंज भी सुनाई देगी। इसे लेकर अभी से मैरिज गार्डन और डीजे और बैण्ड बाजे बुक होना शुरू हो गये है। मान्यता अनुसार इस दिन चौमासा के चार मास का शयन समाप्त कर भगवान विष्णु योग निद्रा से उठते हैं। भगवान विष्णु के शयन के कारण आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक चार महीनों तक शादी-विवाह और मांगलिक कार्यक्रम निषेध रहते हैं। देवउठनी ग्यारस से शादी-विवाह और मांगलिक कार्यक्रमों की शुरूआत होती है। घरों, मंदिरों और सार्वजनिक स्थलों पर तुलसी- शालिग्राम का विवाह कराया जाता है। जिसके बाद विवाह कार्यक्रम भी शुरू हो जाते है। विवाह कार्यक्रमों को लेकर अभी से लोगों ने मुहूर्त निकालकर मैरिज गार्डन, होटल, लाईटिंग, बैण्ड बाजे सहित अन्य की एडवांस बुकिंग कराना शुरू कर दिया है। बता दे कि जिला मुख्यालय सहित ग्रामीण क्षेत्रों में देवउठनी ग्यारस को दीपावली के बाद उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस

वजह से मंगलवार को शहर के प्रमुख बाजारों में काफी चहल-पहल देखने को मिली। जिनके यहां पर शादियों का सिलसिला शुरू होने को है वह लोग खरीदी करते दिखाई दिए।

गन्ना, बेर-चने की भाजी और आंवले की लगी दुकानें- शहर के बाजारों में मंगलवार देवउठनी ग्यारस पर बड़ी संख्या में किसान गन्ना लेकर पहुंचे। इसके अलावा बेर, चने की भाजी और आंवले की दुकानें शहर के प्रमुख चौराहों एवं बाजार में सज गई थी। देवउठनी ग्यारस जिले भर में दीवाली की तरह ही मनाया जाता है। इस दिन प्रत्येक घर के आंगन में तुलसी का विवाह रचाया गया। घरों में एक दिन पहले से ही वृंदावनों को सजाने का सिलसिला भी शुरू हो गया था। ग्यारस के दिन आंगन एवं तुलसी के सामने सुंदर रंगोली सजाई गई।

ग्यारस के चलते बाजार में बिकने आया गन्ना - देवउठनी ग्यारस मंगलवार को मनाई गई। देवउठनी ग्यारस को लेकर बाजार में बड़ी संख्या में गन्ने बिकने के लिए आये थे। जगह-जगह दुकानदारों ने गन्ने के ढेर लगाए थे। बाजार में 100 रुपये के 5 गन्ने मिल रहे थे। इस वर्ष गन्ने के भी रेट में बढ़ोत्तरी हो गई। हालांकि छोटे गन्ने कम कीमत में भी उपलब्ध हो रहे थे, लेकिन बड़े गन्ने की कीमत अधिक थी। ग्यारस के चलते बाजार में चने की भाजी और आंवले भी बिकने के लिए आए। लोगों ने गन्ने और बेर, भाजी, आंवले की जमकर खरीददारी होगी।

देवउठनी एकादशी को शहर में वितरित किए तुलसी पौधे

बैतूल। हर साल कार्तिक मास की एकादशी तिथि को तुलसी विवाह कराया जाता है और देवउठनी एकादशी मनाई जाती है। कहते है इस दिन से सारे शुभ कार्य प्रारंभ होते है। शुभ कार्य का प्रारंभ करते हुवे मंगलवार मां शारदा सहायता समिति,बैतूल द्वारा अभिनव आयोजन किया गया जिसमे आधा सैकड़ा लोगो को तुलसी का पौधा प्रदान किया गया। माता मंदिर गंज में माता मंदिर गंज समिति के अध्यक्ष प्रवीण बिहारे, समाजसेवी प्रकाश माकोड़े, शैलेंद्र बिहारिया, निमिष मालवीय, दीप मालवीय, समाजसेवी राजेश मदान, तूलिका पचोरी, बिल्लो पवार के

आतिथ्य में सर्वप्रथम तुलसी पूजन कर गंज और विकास नगर क्षेत्र में तुलसी के पौधे वितरित किए गए। इस अवसर पर नीति मालवीय को जन्मदिन पर तुलसी का पौधा उपहार में दिया गया और उनके हाथों तुलसी पौधे वितरित कराए गए। इस अवसर पर प्रवीण बिहारे ने कहा भारतीय संस्कृति में तुलसी पौधा सौभाग्य और सकारात्मकता, पवित्रता का प्रतीक माना जाता है। इस पौधे को प्रत्येक घर में होना चाहिए तुलसी पौधे वितरण से शुभ कार्य करने की शुरुआत करना शारदा समिति का अभिनव प्रयास है। स्वास्थ्य विभाग से जुड़े प्रकाश माकोड़े ने कहा तुलसी से इम्यूनिटी बढ़ती है। तुलसी से सर्दी-खांसी और श्वसन संक्रमण जैसी बीमारियों में आराम मिलता है। तुलसी से पाचन में सुधार होता है, तुलसी से तनाव कम होता है। तुलसी से हृदय रोग का खतरा कम होता है। शैलेंद्र बिहारिया ने कहा प्रत्येक सामाजिक कार्यक्रम, विवाह, गृहप्रवेश, जन्मदिन पर माता तुलसी का पौधा भेंट करना चाहिए जिससे पर्यावरण भी सुरक्षित रहेगा, साथ ही प्रत्येक घर में तुलसी के पौधे की पहुंच होगी। कार्यक्रम में पूजा मालवीय, देवी डोंगरे ने महिलाओं को तिलक कर तुलसी पौधे भेंट किए।

उल्लास नवभारत साक्षरता मूल्यांकन परीक्षा में बैतूल अव्वल

राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा दिए गए लक्ष्य के विरुद्ध 98 प्रतिशत नवसाक्षरों को परीक्षा में किया शामिल

बैतूल। उल्लास नवभारत साक्षरता मूल्यांकन परीक्षा में राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा दिए गए लक्ष्य 46508 के विरुद्ध 45716 (98 प्रतिशत) नवसाक्षरों को परीक्षा में शामिल किया गया। इस अवसर पर राज्य शिक्षा केंद्र के संचालक द्वारा बैतूल कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी एवं

पूरे जिले की टीम को सम्मानित किया गया। उक्त उपलब्धि कलेक्टर, सीईओ जिला पंचायत बैतूल के मार्गदर्शन में एवं डीपीसी जितेंद्र भनारिया के नेतृत्व में जिले ने प्राप्त की है। डीपीसी जितेंद्र भनारिया ने बताया कि हमारे जिले में पूरी टीम वर्क के तहत यह कार्य किया, जिसमे जिला सह समन्वयक श्री धाड़से, समस्त बी.आर.सी, संकुल सह समन्वयक और हमारे शिक्षक, अक्षर साथी के साथ अन्य विभागीय अमले ने भी भरपूर सहयोग प्रदान किया।

तापी ज्ञानेश्वर से नर्मदा परिक्रमा यात्रा के लिए रवाना हुए साधक

ताप्ती तट पर हुआ साधकों का भव्य स्वागत

बैतूल / मुलताई- मुलताई के ताप्ती तट से भोलेनाथ का अभिषेक कर तापी ज्ञानेश्वर से नर्मदा परिक्रमा यात्रा के लिए साधक रवाना हुए। मप्र रोजगार बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष हेमंत विजयराव देशमुख, यात्रा प्रबंधक विनोद ठाकरे और सह प्रबंधक अमित पवार के मार्गदर्शन में साधकों का दल मां नर्मदा की परिक्रमा यात्रा के लिए रवाना हुआ। शिवा खंडेलवाल ने बताया कि आज सभी यात्री सुबह ज्ञानेश्वर शिव मंदिर में भोलेनाथ का अभिषेक करने के बाद सुबह 9 बजे ताप्ती सरोवर पहुंचे जहां पूरे विधि विधान के साथ भगवान भोलेनाथ का अभिषेक किया गया। नर्मदा यात्रा में शामिल होने आए सभी अतिथि एवं यात्रियों ने मां ताप्ती का भी दर्शन किया और यात्रा की सफलता की कामना की बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने इस यात्रा का जगह-जगह पुष्प वर्षा कर स्वागत किया । मां नर्मदा परिक्रमा यात्रा को लेकर सभी तैयारी पहले ही पूरी हो चुकी थी रविवार को साधकों ने भोलेनाथ का अभिषेक करने के साथ यात्रा के संबंध में विस्तार से जानकारी दी । मां ताप्ती का पूजन कर सरोवर की परिक्रमा लगाते हुए

ओंकारेश्वर की लिए यात्रा रवाना हुई। जहाँ भोलेनाथ और मां नर्मदा का अभिषेक कर परिक्रमा यात्रा शुरू की जाएगी। हेमंत विजय राव देशमुख ने बताया कि आने वाले दिनों में गृह गोचर की विपरीत स्थिति के प्रभाव से सभी की सुरक्षा, शांति, समृद्धि और विश्वकल्याण की कामना को लेकर मां नर्मदा की परिक्रमा की जा रही है। ताप्ती नगरी से पहली बार भक्तों का जत्था मां नर्मदा जी की परिक्रमा के लिए रवाना हुआ है।28 नवंबर को मां नर्मदा की परिक्रमा पूरी कर ओंकारेश्वर में यात्रा का समापन होगा।

ब्राह्मण रत्न से सम्मानित हुए पं. कांतू दीक्षित

बैतूल। रविवार को शहर के विकास नगर में ब्राह्मण समाज का विप्र प्रतिभा सम्मान समारोह (बढ़ते कदम 2024) एवं दीपावली मिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मयूर भार्गव, करण पांडे एवं सभी मंचासीन अतिथियों के द्वारा पंडित कांतू दीक्षित को शॉल श्रीफल और स्मृति चिन्ह एवं तुलसी का पौधा देकर ब्राह्मण रत्न के सम्मान से सम्मानित किया गया। पंडित कांतू दीक्षित शहर के प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित ज्योतिषाचार्य होने के साथ-साथ एक शिक्षाविद् भी है। वे ऐसे विरले व्यक्ति है जिन्होने विभिन्न विषय में सर्वाधिक डिग्री हासिल की है। उनके पास आठ एमए की डिग्री है। वे हमेशा सौम्य और समाज को मार्गदर्शन देने वाले व्यक्ति रहे है। एक शैक्षणिक संस्थान में करीब 35 वर्ष सेवाएं देने के बाद वे समाज और धार्मिक कार्यों में हमेशा मार्गदर्शन और सहयोग के लिए तत्पर रहते है। उन्होने ब्राह्मण समाज में भी सजगता और एकजुटता के लिए हमेशा अपना योगदान दिया है। वे समाज को अपनी परंपरा और संस्कारों के प्रति जागरूक रखने के लिए हमेशा क्रियाशील रहते है। कार्यक्रम के अंत में वरिष्ठ पत्रकार पं. सुनील द्विवेदी ने उनकी सफलता पर बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना किया।

कुंए में तैरते मिला माँ-बेटे का शव, पुलिस कर रही जांच

बैतूल। कोतवाली थाना क्षेत्र के उड़दन गांव के मां- बेटे का शव कुएं में तैरते मिला। मृतक पिछले दो-तीन दिनों से लापता थे। जिसका शव घर से करीब 100 मीटर की दूरी पर स्थित कुएं में मिला है। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शवों को बाहर निकालकर पोस्ट मार्टम के लिए भेज दिया। मंगलवार की सुबह जब लोगों ने कुएं में दो शव तैरते हुए देखे तो इसकी सूचना पुलिस को दी। पुलिस और एसडीईआरएफ की टीम मौके पर पहुंची और शव को कुएं से निकाला। कोतवाली थाना प्रभारी देवकरण डेहरिया ने बताया कि मृतक महिला का नाम संगीता

(45) और उसके पुत्र का नाम सीताराम (28) है। दोनों रविवार से लापता थे। कोतवाली टीआई देवकरण डेहरिया ने बताया कि बेटा सीताराम मजदूरी करता था और शराब पीने का आदी था। इसी आदत के कारण मां बेटे में विवाद होता रहता था। फिलहाल पुलिस घटना की जांच कर रही है।

प्रज्ञा मंडल संयोजकों की कार्यशाला आयोजित

बैतूल। गायत्री परिवार जिला समन्वय समिति द्वारा जिले के प्रज्ञा मंडल संयोजकों की कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में गायत्री परिवार के जिला समन्वयक डॉ कैलाश वर्मा, जिला सह समन्वयक रविशंकर पारखे, हरवंश आहुजा, जिला प्रज्ञा मंडल प्रभारी डॉ टीसी अनघोरे ने मार्गदर्शन दिया। इस कार्यशाला में डॉ.कैलाश वर्मा ने कहा कि गायत्री परिवार के प्रत्येक सदस्य को प्रज्ञा मंडल का सदस्य होना अनिवार्य है। प्रज्ञा मंडलों के द्वारा गांवों में मिशन का विस्तार किया जाएगा। डॉ.टीसी अनघोरे ने प्रज्ञा मंडल गठन की प्रक्रिया बताई व कहा कि इसमें 20 से 25 सदस्य होना चाहिए। इसका पंजीयन शांतिकुंज से होगा। रविशंकर पारखे ने कहा कि प्रत्येक ग्राम पंचायत स्तर पर प्रज्ञा मंडलों का गठन किया जाएगा। शक्ति पीठ पर प्राकृतिक चिकित्सा शिविर के लिए डॉ राजन तुमाने व योग शिक्षक श्री मोखेडे ने जानकारी दी। इस अवसर पर सुरेश पांसे, योगेश साहू, शशि जागरे, यादवराव निंबालकर, नारायण देशमुख, देवेंद्र साहू, बुधीराम सुजाने, चंद्रमुल रजने, लखन गढेकर, शुभम सोलंकी, सुश्री कांति गुलबासे, इंदिरा रजने सहित परिजन उपस्थित थे।

सकल पंच फूलमाली समाज 15 नवंबर को निकालेगा नगर में भगवान श्रीराम की शोभायात्रा

अन्नकूट महोत्सवः वाद विवाद स्पर्धा के साथ हुई फैंसी ड्रेस-रंगोली स्पर्धा

धार। श्री सकल पंच फूलमाली समाज धार द्वारा अन्नकूट महोत्सव का आयोजन 15 नवंबर को किया जाएगा। महोत्सव के तहत पौ चौपाटी स्थित भगवान श्रीराम मंदिर से भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी। इस वर्ष अन्नकूट महोत्सव के दगड़ीबाई जांगड़े द्वारा भगवान श्रीराम को पोषाख व छप्पन भोग लगाया जाएगा। वहीं समाजजनों के लिए महाप्रसादी का आयोजन भी इसी दिन समाज के भवानी माता बाग गार्डन में किया जाएगा।

समाज के मीडिया प्रभारी ताराचंद पटेल ने बताया कि अन्नकूट महोत्सव के तहत नवयुवक मंडल व महिला मंडल द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जा रहे है। अन्नकूट महोत्सव के तहत गत दिवस समाज के बच्चों के लिए निबंध व मेहंदी प्रतियोगिता समाज की पौ चौपाटी स्थित धर्मशाला में आयोजित की गई थी। वहीं 11 नवंबर को रंगोली, फैंसी ड्रेस स्पर्धा का आयोजन किया गया। जिसमें समाज के नन्हें-मुन्ने बच्चों ने उत्साह के साथ भाग लिया। 12 नवंबर को समाज की महिलाओं व युवतियों के लिए गरबों का आयोजन किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में समाज अध्यक्ष मोतीलाल रत्नागर भूतपूर्व सैनिक, माणक पटेल, अनिल गेहलोत, रामायण मंडल अध्यक्ष छोटेलाल देवड़ा,कैलाशचंद्र परमार, दुलीचंद बानीवाल मौजूद थे। सर्वप्रथम अतिथियों ने महात्मा ज्योतिबा फूले व सावित्रीबाई फूले के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम की शुरूआत की। कार्यक्रम में नवयुवक मंडल अध्यक्ष रवि मौर्य, रवि नागर, ऋषि जांगड़े, सोमेश बिंजवा, मनोज देवड़ा, त्रिलोक टांक, यश डोड व महिला मंडल से दीपिका नागर, तरूणा पारोद, गौरी जांगड़े, पूजा देवड़ा, योगिता गेहलोत आदि मौजूद थे। अंत में आभार महिला मंडल अध्यक्ष ऋतु देवड़ा ने माना।

पुरस्कार वितरण के साथ होगा विद्यार्थियों का सम्मान

अन्नकूट महोत्सव 15 नवंबर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम में विजेता रहे समाज के बच्चों को अतिथियों द्वारा पुरस्कार वितरण किया जाएगा। वहीं इस दौरान सकल पंच द्वारा समाज के वरिष्ठों का सम्मान समारोह भी किया जाएगा। समाज के कक्षा 12वीं व 10वीं में उच्च अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का मंच से सम्मान भी किया जाएगा।

सीएमओ करेंगे 15 वार्डो की सफाई का निरीक्षण

सुबह सवेरे सोहागपुर। नगरपालिका अधिकारी राकेश मिश्रा करेगें नगर के समस्त 15 वार्डो की सफाई व्यवस्था का निरीक्षण।

नगर के विभिन्न वार्डो से निरंतर मिल रही सफाई संबंधित शिकायतों पर त्वरित कार्रवाई करते हुए मुख्य नगर पालिका अधिकारी राकेश मिश्रा प्रातः 6 बजे से ही वार्डों में निरीक्षण के लिए निकले। इस दौरान आपने अलग-अलग वार्डों की सफाई व्यवस्था का निरीक्षण कर सफाई कर्मचारी एवं प्रभारी वार्ड मुकदम को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। वहीं नागरिकों से भी स्वच्छता संबंधी जानकारी ली । मुख्य नगरपालिका अधिकारी राकेश मिश्रा ने बताया कि वार्डों से निरंतर स्वच्छता संबंधी शिकायतें प्राप्त हो रही थी । इसी कारण वार्डो का निरीक्षण किया गया है ।नगर के समस्त 15 वार्डो का निरीक्षण मेरे स्वयं के द्वारा किया जाएगा। तथा शिकायत प्राप्त होने वाली शिकायतों का तुरंत ही निराकरण किया जाना निश्चित है।

छात्रा राधिका भोपाल में खेलेगी राज्य स्तरीय हॉकी में

सुबह सवेरे सोहागपुर। शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्रा राधिका कुशवाहा का चयन अंडर 17वीं राज्य स्तरीय हॉकी प्रतियोगिता के लिए हुआ है। खेल प्रभारी पवनकुमार खरे ने बताया कि इसी वर्ष दूसरी बार शासकीय कंन्या उच्चतर माध्यमिक शाला की छात्रा राज्य स्तरीय पर प्रतिनिधित्व करेगी। प्राचार्य श्रीमती सुनीता गढ़वाल, हेमराजसिंह नागा, पवन खरे, अश्विन सरोज, मुकेश रघुवंशी एवं शाला के शिक्षकों ने छात्रा के उज्जवल भविष्य की कामना की है। छात्रा राधिका 14 नवंबर तक मेजर ध्यानचंद हॉकी स्टेडियम भोपाल में अपनी उत्कृष्ट हॉकी का प्रदर्शन करेंगी। सोहागपुर एवं शासकीय कन्या शाला के लिए गर्व की बात है।

पिता को डंडे से पीट-पीटकर मार डाला

बोला- बचपन में मुझे मारता था, बड़ा हुआ तो पसंद की लड़की से शादी भी नहीं कराई

छतरपुर (नप्र)। छतरपुर के गढ़ीमलहरा में सोमवार रात को एक युवक ने डंडे से पीट-पीटकर अपने पिता की हत्या कर दी। मृतक के छोटे बेटे ने घटना की सूचना पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजकर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। बता दें, कि आरोपी हाल ही में हत्या के एक मामले में 14 साल बाद जेल से बाहर आया है।

शुरुआती पूछताछ में उसने पुलिस को बताया कि पिता उसे बचपन में पीटता था। पसंद की लड़की उसकी शादी भी नहीं कराई। इस बात को लेकर उसे नाराजगी थी, इसीलिए वारदात को अंजाम दिया।

हत्या कर शव को मवेशियों के बाड़े में फेंका

गढ़ीमलहरा के वार्ड नंबर 12 स्थित चतुर्भुज मोहल्ला निवासी पूरन रैकवार (65) की सोमवार रात 11 बजे उसके बेटे नरेन्द्र रैकवार ने डंडे से पीट-पीटकर हत्या कर दी। इसके बाद शव को मवेशियों के बाड़े में फेंक दिया। वारदात को अंजाम देने के बाद आरोपी नरेन्द्र सुबह 7 बजे पिता की टैक्सी लेकर बाजार में घूम रहा था, जहां छोटे भाई भगवानचरण रैकवार ने उसे देख लिया।

पिता अपनी टैक्सी नहीं देते थे, इससे शक हुआ

भगवानचरण ने बताया कि उसके पिता किसी को भी अपनी टैक्सी नहीं देते थे। जिससे उसको अपने भाई नरेन्द्र पर शक हुआ। इसके बाद उसने पिता को फोन लगाया। कई बार फोन लगाने के बाद भी जब कॉल रिसीव नहीं उठा तो वह घर पहुंचा, जहां उसे पिता का खून से लथपथ शव पड़ा मिला।

इसके बाद भगवानचरण ने पुलिस को फोन लगाकर घटना की जानकारी दी। सूचना मिलते ही नौगांव एसडीओपी चंचलेश मरकाम और गढ़ीमलहरा थाना प्रभारी सुरभि शर्मा पुलिस बल, एफएसएल टीम और डॉग स्क्वॉड के साथ घटना स्थल पर पहुंचे।

भाई बोला- अक्सर डंडा लेकर घूमा करता था

शव को कब्जे में लेने के बाद पुलिस ने आरोपी नरेन्द्र रैकवार को लुगासी रोड से गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने बताया कि 15 साल पहले काली माता मंदिर से घंटा चोरी करने के बाद आरोपी का पुजारी से विवाद हुआ था। जिसमें नरेंद्र ने पुजारी की हत्या कर दी थी। वो तीन महीने पहले ही इस मामले में सजा काटकर जेल से बाहर आया है। पुजारी के मर्डर के बाद नरेंद्र की पत्नी बच्ची को लेकर मायके चली गई थी। उसके बाद से वह मायके में रह रही है। भगवानचरण ने बताया कि उसका भाई नरेन्द्र सनकी प्रवृत्ति का है और अक्सर डंडा लेकर घूमा करता था। जिस कारण लोग उससे डरते थे। इससे पहले घटना की अशंका को लेकर थाने सहित एसपी ऑफिस में शिकायत भी की थी। एसपी अगम जैन ने कहा- आरोपी पर हत्या सहित तीन अपराध पहले से दर्ज हैं। 2007 में वारदात के बाद आरोपी सजा काटकर 15 अगस्त 2024 को जेल से बाहर आया। पूछताछ में उसने बताया कि पूरन बचपन में उसे पीटता था। शादी भी मर्जी के ?खिलाफ कराई। नाराज होकर आरोपी ने उसकी हत्या की।

साइबर फ्रॉड में गई धनराशि वापसी हेतु पुलिस द्वारा प्रारंभ किया गया ऑपरेशन साइबर

फ्रॉड होने के मात्र 5 दिवस में लौटाए 2,21,000 रुपये

देवास/मोहन वर्मा। साइबर फ्रॉड की तत्काल सूचना देने हेतु डायल-100 और डायल-1930 के प्रयोग हेतु जनता को किया जा रहा पुलिस चौपाल के द्वारा जागरूक , फ्रॉड की सूचना प्राप्त होते ही तत्काल एक्शन में आयेगा साइबर-तंत्र, फ्रॉड गई राशि को होल्ड करवाकर माननीय न्यायालय से राशि पुनः आवेदक के खाते में लौटाने तक पुलिस करेगी सतत मॉनिटरिंग।

जी हाँ, देवास पुलिस अधीक्षक श्री पुनीत गेहलोद द्वारा 360-पुलिसिंग के अन्तर्गत ज़िलेवासियों को साइबर फ्रॉड से राहत प्रदान करने हेतु ऑपरेशन साइबर प्रारंभ किया है ।इस अभियान के अंतर्गत सर्वप्रथम ज़िला स्तरीय साइबर सेल के माध्यम से प्रत्येक थाना पर पदस्थ दो-दो पुलिसकर्मियों को साइबर-मित्र के रूप में चिह्नित कर उन्हें साइबर फ्रॉड संबंधी मामलों में त्वरित कार्यवाही हेतु प्रशिक्षित किया गया है । प्रत्येक थाना स्तर पर प्रतिदिन पुलिस चौपाल आयोजित कर पुलिस गाँव-मोहल्ला-क़स्बा-वॉर्ड में जनता को साइबर फ्रॉड से बचने के उपाय और साइबर फ्रॉड होने पर तत्काल 1930 या 100 नंबर पर अपनी शिकायत दर्ज कराने हेतु प्रेरित कर रही है ।

इसी अनुक्रम में 5 नवंबर 2024 को आवेदक आनंद जानपुरा निवासी विश्वकर्मा नगर देवास , थाना सिविल लाईन ने क्रेडिट कार्ड फ्रॉड के ज़रिए 2,44,058 रुपये ठगे जाने की शिकायत दर्ज कराई थी ।जिस पर त्वरित कार्यवाही करते हुवे थाना सिविल लाइन पर पदस्थ साइबर मित्र द्वारा आवेदक से चर्चा कर फ्रॉड संबंधित जानकारी निर्धारित फॉर्मेट में प्राप्त की एवं ज़िला साइबर सेल को प्रेषित की जहां से उक्त जानकारी एनसीआरपी पोर्टल पर दर्ज की गई और सतत मॉनिटरिंग की गई ।

सिविल लाइन साइबर मित्र और ज़िला स्तरीय साइबर सेल द्वारा की गई त्वरित कार्यवाही द्वारा आवेदक की फ्रॉड गई राशि में से कुल 2,21,000 की राशि को होल्ड करवाने में सफलता प्राप्त की गई और उक्त राशि को आवेदक के खाते में पुनः लौटाया गया । आवेदक आनंद जानपुरा ने 2,21,000/- की बड़ी धनराशि पुनः लौटाने पर देवास पुलिस को धन्यवाद ज्ञापित किया।

देवास पुलिस अधीक्षक श्री पुनीत गेहलोद ने बताया कि जहां एक तरफ़ साइबर फ्रॉड से बचने हेतु अनजान कॉलर को कोई भी निजी जानकारी शेयर ना करना और किसी भी अनजान लिंक पर क्लिक ना करना ही सर्वोत्तम उपाय है, वहीं दूसरी तरफ़ साइबर फ्रॉड होने पर तत्काल साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 या डायल 100 पर कॉल कर शिकायत दर्ज कराने की अपील भी देवास जिलेवासियों से की है।

उल्लेखनीय है कि जिलेवासियों को साइबर फ्रॉड से बचाने हेतु पुलिस अधीक्षक देवास श्री पुनीत गेहलोद द्वारा जारी ऑपरेशन साइबर के तहत ज़िला पुलिस साइबर सेल ने 1 नवंबर 2024 से लेकर आज दिनांक तक कुल 2,23,000/- लाख रुपये की ठगी गई राशि वापस करवाई है एवं विभिन्न शिकायतों मे 5,50,366/- लाख रुपये की राशि को होल्ड भी कराया है जिसे अग्रिम वैधानिक कार्रवाई कर आवेदकों को लौटाया जाएगा।

पुलिस अधीक्षक श्री पुनीत गेहलोद के नेतृत्व में ज़िले में साइबर फ्रॉड के प्रत्येक मामले पर विशेष ध्यान देकर तत्काल फ्रॉड गई राशि को ना सिर्फ़ फ्रीज़ करवाया जा रहा है बल्कि विस्तृत रिपोर्ट बनाकर माननीय न्यायालय में पेश करते हुवे फ्रॉड गई राशि को पुनःआवेदक के खाते में भी लौटाया जा रहा है ।

पुलिस कप्तान ने बताया कि 1 नवंबर 2024 से जारी ऑपरेशन साइबर के तहत अब तक कुल 50 साइबर फ्रॉड शिकायतें प्राप्त हुई हैं, जिनमे त्वरित कार्यवाही करते हुवे कुल 19 मामलो में पुलिस ने राशि होल्ड करवाने में सफलता प्राप्त की है । इस प्रकार साइबर फ्रॉड मामलो में रिकॉर्ड 38त्न सक्सेस-रेट प्राप्त करते हुवे देवास पुलिस लगातार पेशेवर रूप में आगे बढ़ रही है ।

विशेष भूमिकाः 1.उनि कपिल नरवले 2.प्रआर शिवप्रताप सिंह 03.सचिन चौहान 04.गीतिका कानूनगों 05.निशा पटोरिया का सराहनीय योगदान ।

डरा-धमकाकर रुपये ऐंठने वाले आदतन अपराधियों को पुलिस ने किया गिरफ्तार

देवास/ पुलिस अधीक्षक श्री पुनीत गेहलोत के निर्देश पर शहर में भय फैलाने और छिनाछपटी करने वाले बदमाशों पर कड़ी कार्रवाई की जा रही है। इस अभियान के तहत, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री जयवीरसिंह भदौरिया और नगर पुलिस अधीक्षक श्री दीशेष अग्रवाल ने औद्योगिक क्षेत्र के प्रभारी निरीक्षक शशिकांत चौरसिया को विशेष निर्देश दिए।

दिनांक 11.11.2024 को हर्षित पिता दिनेश लाड उम्र 20 वर्ष निवासी दौड़वा थाना भीकनगांव, जिला खरगोन अपनी बहन को सनफार्मा कंपनी देवास में इंटरव्यू दिलाने आया था। जब हर्षित अपनी बहन को कंपनी के बाहर छोड़कर बावडिया चौराहे पर खाना खाने गया, तब दो व्यक्ति उससे मिले। बातचीत में उन्होंने हर्षित से गांव में रिश्तेदारी का हवाला दिया और स्वयं को सलमान शाह पिता मुस्ताख शाह और अनिल पिता विरमसिंह मालवीय निवासी देवास बताया। बातों-बातों में उन्होंने खुद को देवास का दादा बताते हुए कहा कि उनके खिलाफ 10 अपराध दर्ज हैं और वे मर्डर भी कर सकते हैं। इसके बाद वे हर्षित को एक सुनसान जगह पर ले गए और उसे धमकाया कि अगर उसने उन्हें पैसे नहीं दिए, तो वे उसे जान से मार देंगे। युवक ने डर के मारे ऑनलाइन 8100 रुपये भेज दिए।

उक्त आरोपियों के विरुद्ध अपराध क्रमांक 1188/24 धारा 308(2),351(3),3(5) बीएनएस के तहत मामला दर्ज किया गया। पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए सलमान शाह उम्र 27 वर्ष निवासी त्रिवेणी नगर बीमा रोड देवास एवं अनिल मालवीय उम्र 24 वर्ष निवासी राजीव गांधी नगर देवास को गिरफ्तार कर लिया। दोनों के खिलाफ क्रमशः 07 और 04 अपराध पहले से दर्ज हैं। दोनों आरोपियों को माननीय न्यायालय में पेश किया जा रहा है, जहां से पुलिस रिमांड प्राप्त कर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

गिरफ्तार आरोपियों के नाम

1. सलमान शाह पिता मुस्ताक शाह उम्र 27 वर्ष निवासी त्रिवेणी नगर बीमा रोड देवास 2. अनिल पिता विरमसिंह मालवीय उम्र 24 वर्ष निवासी राजीव गांधी नगरदेवास

सराहनीय कार्य- सराहनीय कार्य में निरीक्षक शशिकांत चौरसिया थाना प्रभारी, औद्योगिक क्षेत्र देवास उप निरीक्षक गोविन्द बड़ोलिया,प्रधान आरक्षक शैलेन्द्र, आरक्षक अमित की महत्वपूर्ण

गुरुद्वारा मिनी मार्केट में गुरुनानक जयंती पर कार्यक्रम

अमृतवेला के संगत के द्वारा गुरु का नाम स्मरण और सुखमनी साहिब का हुआ पाठ

भोपाल (नप्र)। गुरुद्वारा मिनी मार्केट में ब्रह्मलीन साध्वी द्रोपदी धनवानी के आशीर्वाद से हर साल की तरह इस बार भी श्री गुरु नानक जयंती धूमधाम से मनाई गई। कार्यक्रम की शुरुआत प्रातः 4 बजे से अमृतवेला के संगत के द्वारा गुरु का नाम स्मरण और श्री सुखमनी साहिब के पाठ से हुई। इस मौके पर विशेष पूजा अर्चना और धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

गुरुद्वारे की देखरेख और सेवा का कार्य पूरी तरह से महिलाओं द्वारा संचालित किया जा रहा है और इस गुरुद्वारे में 24 घंटे लंगर भी चलता है। साध्वी द्रोपदी धनवानी जी के वचन के अनुसार, जो भी श्रद्धालु 40 दिन तक सच्चे दिल से गुरु का नाम स्मरण करते हैं और श्री सुखमनी साहिब जी का पाठ करते हैं, उनकी मनोकामनाएं पूरी होती हैं।

साध्वी दीदी जी के आशीर्वाद से यहां गरीबों और जरूरतमंदों के लिए निरंतर सेवा कार्य चल रहे हैं। अनाज वितरण और बच्चों की पढ़ाई के लिए विशेष सहायता की जा रही है। इस अवसर पर गुरुद्वारे में सामाजिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए, जिसमें विशेष रूप से श्रीमती सोनी लालवानी जी, भाविका सीरवानी, मनीषा अरतानी, लता गंगवानी, आशा वासवानी, भावना आसवानी, और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

साध्वी दीदी की शिष्य सोनी लालवानी ने बताया कि इस गुरुद्वारे में धार्मिक कार्यक्रमों के साथ-साथ समाजसेवा की दिशा में भी कई प्रयास जारी हैं। हमारा उद्देश्य गुरु की कृपा से समाज के हर वर्ग की मदद करना है और यह सेवाएं 24 घंटे जारी रहती हैं।इस अवसर पर सिंधी पंचायत के अध्यक्ष माधू चाँदवानी, महासचिव नन्द दादलानी, उपाध्यक्ष जगदीश आसवाणी सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

श्री सांवरिया सेठ मंदिर धार में 18 महापुराण समिति द्वारा आयोजित सप्तम महापुराण श्री मार्कंडेय महापुराण का समापन

धार। त्रिमूर्ति नगर स्थित श्री सांवरिया सेठ मंदिर धार पर 18 महापुराण समिति के तत्वावधान में आयोजित 18 महापुराण की श्रृंखला में सप्तम महापुराण श्री मार्कंडेय महापुराण का समापन हुआ। समापन दिवस के अवसर पर आज अंतिम दिवस कथा वाचक भागवत आचार्य पंडित रमाकांत व्यास ने मार्कंडेय पुराण में देवी शक्तियों का वर्णन करते हुए महाकाली महालक्ष्मी ,मां स्वरूप एवं नवरात्रि पूजन विधि के महत्व को विस्तार से दर्शित किया।

कथा समापन के अवसर पर 18 महापुराण समिति की ओर से व्यास पीठ पर विराजित पंडित रमाकांत जी व्यास एवं मंच पर उपस्थित कलाकारों का स्वागत समिति की ओर से किया गया। इस वर्ष समिति की ओर से नवीन परंपरा का निर्वहन करते हुए कथा श्रवण करने हेतु पधारे सभी भक्तों का भी स्वागत किया गया। स्वागत भाषण समिति अध्यक्ष स्वयं प्रकाश सोनी के द्वारा दिया गया । मंच का संचालन श्री दशरथ जी सिग्गा के द्वारा किया गया । इस अवसर पर 18 महापुराण समिति के सदस्य संतोष जी पांडे एवं ओम प्रकाश जी सोलंकी का भी सम्मान कर समिति की ओर से उन्हें सम्मान पत्र भेंट किया गया। सम्मान पत्र का वाचन समिति प्रमुख अशोक मनोहर जोशी द्वारा किया गया सम्मान पत्र की रचना भी उनके द्वारा ही की गई थी ।कार्यक्रम में समिति के सभी सदस्य परिवार सहित उपस्थित रहे । कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में भारतीय जनता पार्टी के जिला महामंत्री एवं भाजपा कार्यालय के प्रभारी जगदीश जी जाट उपस्थित रहे। रोटरी क्लब धार सेंट्रल के संस्थापक अध्यक्ष अरुण वर्मा उपस्थित रहे उनका भी व्यासपीठ से स्वागत किया गया। जानकारी पुराण समिति के मीडिया प्रभारी डॉ.अशोक शास्त्री एवं समिति प्रमुख अशोक मनोहर जोशी के द्वारा दी गई । कथा समापन के अवसर पर पूरा मंदिर धर्म प्रेमी जनता से भरा पड़ा था कथा समापन के अवसर पर श्री सांवरिया सेठ को छप्पन भोग अर्पित किए गए महाआरती हुई तथा रात्रि आरती पश्चात समिति की ओर से महाप्रसादी का आयोजन रखा गया,जिसमे में नगर के गणमान्य लोग एवं धर्मप्रेमी जनता उपस्थित रही।

मप्र हाई कोर्ट चीफ जस्टिस की तल्ख टिप्पणी: तो उज्जैन नगर निगम का शासन अधिग्रहण कर लें

इंदौर (नप्र)। इंदौर हाईकोर्ट में मंगलवार को एक ठेकेदार को भुगतान नहीं करने के मामले में सुनवाई हुई। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस ने उज्जैन नगर निगम को चार सप्ताह में ठेकेदार को पूरा भुगतान करने का आदेश दिया है। इतना ही नहीं कोर्ट ने यह तक कहा है कि अधिकारियों का वेतन आधा कर भुगतान किया जाए।

ठेकेदार विमल जैन की याचिका पर चीफ जस्टिस सुरेश कुमार कैत ने कहा कि महाकाल की नगरी उज्जैन में निगम अधिकारी अकाल ढा रहे हैं। सरकार जांच करें। अगर वास्तव में उज्जैन नगर निगम की आर्थिक स्थिति इतनी बदहाल है कि वह ठेकेदार को भुगतान नहीं कर पा रहा है तो सरकार इसे अपने अधीन ले ले।

तालाब सौंदर्यीकरण पर खर्च हुए थे 70 लाख रुपए- याचिकाकर्ता के वकील लक्की जैन ने कोर्ट को बताया कि साल 2020 में उज्जैन के गंधर्व तालाब के सौंदर्यीकरण का काम किया था। जिस पर 70 लाख रुपए खर्च हुए थे। बाद में नगर निगम ने फंड की कमी बताकर काम ड्रॉप कर दिया। साथ ही ठेकेदार को भुगतान भी नहीं किया गया।

2020 से ही पेमेंट नहीं दिया। ऑडिट हो गया था। जनवरी 2024 में याचिका लगाई गई। तब भी फंड की कमी नगर निगम ने बताई। अभी तक 5 सुनवाई हो चुकी है। जवाब नगर निगम की तरफ से फाइल नहीं किया गया। निगम कमिश्नर की तरफ से शपथ पत्र दिया गया। जिसमें फंड की बात कही।

अधिकारियों का वेतन आधार कर दिया जाए- मामले में चीफ जस्टिस ने अपने फैसले में कहा कि जब तक ठेकेदार को भुगतान नहीं हो जाता तब तक अधिकारियों का वेतन आधार कर दिया जाए। नगर निगम चार सप्ताह में ठेकेदार को पूरा भुगतान करें। वरना उज्जैन नगर निगम कमिश्नर के खिलाफ अवमानना का मामला चलेगा। अगर सही में फंड की कमी है तो शासन मामले की देखरेख करे और नगर निगम को अपने अधिग्रहण में ले ले।

राइट क्लिक

महाराष्ट्र : असल मुकाबला दो सियासी चाणक्यों पवार व शाह के बीच

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के वरिष्ठ संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

महाराष्ट्र में भाजपानीत महायुति और कांग्रेसनीत महाविकास आघाड़ी के लिए इस बार का विधानसभा चुनाव जीतना राजनीतिक जीवन मरण का प्रश्न बन गया है। भाजपा ने शुरू में यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को महाराष्ट्र लाकर 'बंटेंगे तो कटेंगे' के नारे का असर टेस्ट किया। लेकिन लगता है जल्द ही पार्टी को समझ आ गया कि इसका असर नकारात्मक भी हो सकता है। यही वजह है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उसकी जगह 'एक हैं तो सेफ हैं' को ज्यादा तवज्जो देना शुरू कर दिया है। हालांकि कुछ लोग मोदी द्वारा इस नारे में संशोधन को योगी की बढ़ती लोकप्रियता पर लगाम लगाने की कोशिश के रूप में भी देख रहे हैं। लिहाजा सोमवार को महाराष्ट्र के मीडिया में दिए गए भाजपा के विज्ञापनों में भी 'बंटेंगे तो कटेंगे' की जगह यही नारा दिखाई पड़ा। इसका अर्थ यही है कि 'कटेंगे' के सकारात्मक राजनीतिक असर को लेकर भाजपा पूरी तरह आश्वस्त नहीं है। वैसे भी महाराष्ट्र का चुनाव हकीकत में दो सियासी चाणक्यों शरद पवार और अमित शाह के बीच परोक्ष मुकाबला है। जो भी जीतेगा, वह देश की भावी राजनीति की दिशा तय करेगा। हालांकि भाजपा का एक तबका मान कर चल रहा है कि 'बंटेंगे तो कटेंगे' का हिंदुओं पर धीरे-धीरे असर हो रहा है और गहरे मानस मंथन के साथ वो भाजपा के पक्ष गोलबंद हो रहे हैं। लेकिन किस हद तक, इस सवाल का जवाब मिलना बाकी है। हरियाणा विस चुनाव में यह नारा कुछ हद तक चला। लेकिन महाराष्ट्र की राजनीतिक तासीर अलग है। यहां तीन दशकों से कोई भी सियासी पार्टी अपने दम पर बहुमत नहीं पा सकी है। ऐसे में कोई भी दांव कब निशाने पर जा लगे या फिर उलटा पड़ जाए, कहना मुश्किल है। उधर राज्य में कांग्रेस और महाविकास आघाडी लगातार 'संविधान बचाने', जातिगत जनगणना और आरक्षण की सीमा 50 फीसदी से ज्यादा करने के साथ-साथ स्थानीय मुद्दे जैसे सोयाबीन उत्पादक किसान को हुए नुकसान भी उठा रही है। मआवि का मानना है कि महायुति सरकार के खिलाफ आम जनता में नाराजी है और वो सत्ता परिवर्तन के पक्ष में वोट करेगी। उद्धव ठाकरे और उनकी पार्टी तो प्रतिशोध की भावना से चुनाव लड़ रही है। उनकी और अजित पवार की पार्टी के लिए यह चुनाव राजनीतिक अस्तित्व का सवाल भी है। ऐसे में भाजपा को डर है कि हिंदू एकता के नारे पर कहीं लोकसभा की तरह 'दलित मुस्लिम' एकता भारी न पड़ जाए। इसके अलावा मराठा आरक्षण के लिए कई सालों से आंदोलन कर रहे मनोज जरांगे का फैक्टर भी अहम है। जरांगे ने ऐन वक्त पर विस चुनाव न लड़ने का फैसला कर के महायुति को तगड़ा झटका दिया है। इसके पीछे सलाह किसकी होगी, यह समझा जा सकता है। भाजपा जरांगे के प्रभाव क्षेत्र मराठवाड़ा में मराठों के खिलाफ ओबीसी को लामबंद करने की कोशिश कर रही है। इसमें कितनी सफलता मिलती है, यह देखने की बात है। ऐसे में महिलाओं को सीधे आर्थिक लाभ पहुंचाने वाली 'लाडकी बहिण योजना' और बूथ मैनेजमेंट पर ही भाजपा की जीत का काफी दारोमदार है। दूसरे, राहुल गांधी के संविधान बचाओ अभियान पर पलटवार करते हुए केन्द्रीय मंत्री अमित शाह ने राहुल के हाथों में लाल किताब को 'कोरी किताब' कहा था। इसका दलितों में कैसा संदेश गया है, कहना मुश्किल है। हालांकि भाजपा और संघ के कुछ नेताओंका मानना है कि 'कटेंगे तो... और लाडकी बहिण' योजना का धमाका नतीजों में दिखेगा। लोगों को इसका अंदाज नहीं है। वैसे इस चुनाव में मतदाताओंका एक तबका ऐसा भी है, जो सभी पार्टियों के रवैए से निराश है। ऐसे में वोटिंग प्रतिशत अगर घटा तो नुकसान सबसे ज्यादा महायुति को होगा। हालांकि भाजपा इस खतरे को लोकसभा चुनाव के बाद से समझ चुकी है। उसके वोट गिरें, इसकी पुरजोर कोशिश होगी।

इस बीच राजनीतिक प्रेक्षक इस बात का गहराई से अध्ययन कर रहे हैं कि योगी के 'बंटेंगे तो कटेंगे' नारे का महाराष्ट्र में बहुसंख्यंक हिंदू समुदाय के मानस पर कितना असर हो रहा है और इसकी राजनीतिक परिणति क्या होगी? क्या योगी का यह नारा राज्य में फिर से हिंदू समाज को महायुति के पक्ष में एकजुट कर पाएगा, खासकर वक्फ बोर्ड संशोधन विधेयक के विरोध में मुस्लिम समाज में हो रही आक्रामकता एकता के संदर्भ में।

वैसे योगी के जिस 'बंटेंगे तो कटेंगे' नारे को हिंदू एकजुटता के परिप्रेक्ष्य में रामबाण उपाय के रूप में देखा जा रहा था, वह महाराष्ट्र और झारखंड चुनाव प्रचार के शबाब पर आते आते शंका के घेरे में जरूर आ गया है। जबकि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इस नारे का खुलकर समर्थन किया था। लेकिन महाराष्ट्र में इस मुद्दे पर खुद महायुति और राष्ट्रीय स्तर एनडीए भी बंटता नजर आ रहा है। कांग्रेस तो पहले ही इसे नकारात्मक और साम्प्रदायिक सोच का नतीजा बता रही है, जबकि योगी और भाजपा इसे बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओंपर हो रहे अत्याचार की मिसाल देकर सही ठहरा रहे हैं। इसमें यह चेतावनी भी छिपी है कि अगर जनसांख्यिकीय बदलाव यूं ही होते रहे तो भारत में भी बहुसंख्यक हिंदुओं की वैसी ही हालत होने में देर नहीं लगेगी। इसीलिए झारखंड और अब मुंबई में भी मुसलमानों की बढ़ती आबादी, उसकी वजह से हो रहे जनसांख्यिकीय बदलाव तथा उसकी राजनीतिक परिणति को लेकर भी भाजपा नेता लगातार आगाह कर रहे हैं।

इसमें शक नहीं कि योगी के 'कटेंगे तो बंटेंगे' नारे ने विपक्षी खेमे में खलबली मचा दी है। इस नारे की गूंज कनाडा के ब्रैम्पटन में भी सुनाई दी, जहां खालिस्तानी सिखों ने हिंदू मंदिर पर हमला किया था। 'कटेंगे तो' नारे को खारिज करने के लिए अलग-अलग प्रति नारे गढ़े जा रहे हैं। यूपी में नौ सीटों पर हो रहे विधानसभा उपचुनाव के मद्देनजर समाजवादी पार्टी ने इन नारे में निहित खतरे को भांपा और इसके जवाबी नारे गढ़ने की कोशिश की। शुरू में सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा कि इस नारे को ध्यान में रखकर पीडीए समीकरण को एकजुट रहना चाहिए और उपचुनाव में भाजपा को सबक सिखाना चाहिए। लेकिन लगता है कि उससे बात नहीं और योगी के नारे के जवाब में 'जीतेंगे तो जुड़ेंगे' और जैसे नारे गढ़े गए। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने भाजपा पर जवाबी हमला करते हुए कहा कि 'तुम ही कटोगे और तुम ही बंटोगे।' महाराष्ट्र में विपक्षी महाविकास आघाड़ी के घटक शिवसेना (उद्धव) के प्रमुख उद्धव ठाकरे ने चुनौती के स्वर में कहा कि हम महाराष्ट्र में किसी को न तो लूटने देंगे और न ही लुटने देंगे। लेकिन महाराष्ट्र में इस पर सत्तासीन महायुति के घटक राकांपा नेता अजित पवार ने भाजपा से अलग लाइन लेते हुए इस नारे को यह कहकर खारिज किया कि महाराष्ट्र का स्वभाव इस तरह बांटने का नहीं है। इसी झारखंड में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने नया नारा दिया 'डरोगे तो मरोगे' तो भीम आर्मी पार्टी के चंद्रशेखर रावण ने कहा कि 'पढ़ेंगे तो बढ़ेंगे।

अगर योगी के नारे का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया जाए तो इसकी पहली पंक्ति 'बंटेंगे तो कटेंगे भले ही नकारात्मक लगे, लेकिन दूसरी पंक्ति 'एक रहेंगे तो नेक रहेंगे' पूरी तरह सकारात्मक है। योगी ने यह नारा किस सोच और गणित के साथ दिया या फिर यह उनके मुंह से निकली परिस्थितिजन्य सहज अभिव्यक्ति थी, कहना मुश्किल है। लेकिन अगर वो चाहते तो दूसरी पंक्ति को पहले स्थान पर और पहली पंक्ति को दूसरे स्थान पर रख सकते थे। इससे वो राजनीतिक खलबली नहीं मचती, जो उनके इस नारे से हुई है। वैसे भी आंदोलनों और संघर्षों का इतिहास देखें तो नकारात्मक कहलाने वाले नारे ही लोगों को संगठित करने में ज्यादा असरकारी साबित होते हैं। इसका कारण इसमें जनमानस में छिपे भय और आक्रोश का राजनीतिक सामाजिक दोहन होता है। भले ही उसका अंतिम परिणाम कुछ भी हो।

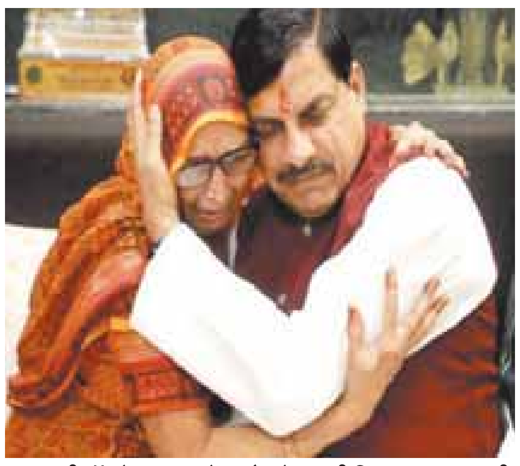

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उज्जैन में स्व. श्री शिव शंकर रावल की माता जी को ढाँढस बंधाया।

उप राष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ के साथ राज्यपाल श्री पटेल एवं मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने अखिल भारतीय कालिदास समारोह में विभूतियों को किया सम्मानित।

भिंड में क्वारी नदी के किनारे पेड़ से लटके मिले प्रेमी जोड़े के शव

भिंड (नप्र)। मंगलवार दोपहर फूफ क्षेत्र के कनावर पुल के पास क्वारी नदी किनारे प्रेमी जोड़े का शव पेड़ से लटका मिला। युवक-युवती ने दुपट्टे से पेड़ से फांसी लगाई। मृतक युवक सिनोद जाटव ऊमरी के नहटौली गांव का रहने वाला है। जबकि युवती लाली जाटव औरैया जिले के दिवियापुर तहसील के हरचनपुरा की रहने वाली है। मृतक सोमवार को घर से अपनी पत्नी पूजा का आधारकार्ड अपडेट कराने की बात कहकर निकला था। मृतक गुजरात के कच्छ में पानीपूड़ी का धंधा करता था।

मतदान आज, बुधनी, विजयपुर उपचुनाव के लिए रवाना हुआ मतदान दल

5.31 लाख वोटर करेंगे दो नए विधायक चुनने के लिए वोट, कड़ी सुरक्षा के निर्देश

भोपाल (नप्र)। प्रदेश के बुधनी और विजयपुर विधानसभा क्षेत्रों में 13 नवंबर को होने वाले मतदान के लिए मंगलवार सुबह मतदान दल रवाना हुआ। ये दल कड़ी सुरक्षा के बीच ईवीएम के साथ मतदान केंद्रों पर पहुंचेंगे और मतदान की तैयारियों की व्यवस्था करेंगे। इन दोनों सीटों पर चुनाव के लिए करीब 2800 कर्मचारियों और अधिकारियों की ड्यूटी लगाई गई है। दोनों ही सीटों पर कुल 5,31,616 मतदाता अपने मताधिकार का उपयोग कर नए विधायक चुनेंगे। दोनों जिलों में जिला निर्वाचन अधिकारी और कलेक्टर आज अपनी निगरानी में मतदान दलों को रवाना करेंगे। मंगलवार सुबह विजयपुर विधानसभा उप चुनाव के लिए मतदान दल निर्वाचन सामग्री के साथ मतदान केंद्रों के लिए रवाना हुआ।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव तुलसी शालिग्राम विवाह में हुए शामिल, कहा

यह दिन सभी सनातनियों के लिए गौरव का दिन

- श्री हरि और माँ तुलसी से प्रदेशवासियों के सुख-समृद्धि और खुशहाली के लिए की प्रार्थना

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव देवउठनी ग्यारस पर मालवीय नगर युवा सदन में तुलसी शालिग्राम विवाह में शामिल हुए।

आज का दिन हम सभी सनातनियों के लिए गौरव का दिन है। उन्होंने श्री हरि और माँ तुलसी से प्रदेशवासियों के जीवन को सुख, समृद्धि और खुशहाली से परिपूर्ण बनाए रखने की प्रार्थना की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने माता तुलसी की मंत्रोच्चार के साथ पूजा कर धूप, सिंदूर, चंदन, पुष्प अर्पित कर नैवैद्य का भोग लगाया। इस अवसर पर विधायक श्री रामेश्वर शर्मा विशेष रूप से उपस्थित थे।

उल्लेखनीय है कि देवउठनी ग्यारस भगवान श्री विष्णु के 4 महीने की निद्रा से जागरण का प्रतीक है। यह त्यौहार कार्तिक शुक्ल ग्यारस तिथि को मनाया जाता है। इस दिन भगवान विष्णु और माता तुलसी की पूजा की जाती है और उनके विवाह का आयोजन किया जाता है। देवउठनी ग्यारस के दिन विशेष मंत्रों का जाप कर भगवान विष्णु और माता तुलसी की आराधना कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया जाता है।

ट्रायल कोर्ट में होगी शिवराज, वीडी, भूपेंद्र सिंह की पेशी

विवेक तन्खा मानहानि मामले में सुप्रीम कोर्ट से राहत नहीं; पक्षकारों से 4 हफ्तों में मांगा जवाब

जबलपुर (नप्र)। कांग्रेस नेता और राज्यसभा सांसद विवेक तन्खा की मानहानि मामले में केन्द्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीडी शर्मा और पूर्व मंत्री भूपेन्द्र सिंह को सुप्रीम कोर्ट से राहत नहीं मिल सकी है। शिवराज सहित तीनों नेताओं को मामले में ट्रायल कोर्ट में पेश होना होगा।

तीनों नेताओं ने अपने खिलाफ दायर मानहानि का मामला खारिज करने की मांग करते हुए सुप्रीम कोर्ट में याचिका लगाई थी। सुप्रीम कोर्ट ने ज़िरह सुनने के बाद विवेक तन्खा सहित सभी पक्षकारों को नोटिस जारी कर 4 हफ्तों में जवाब तो मांगा, लेकिन शिवराज, वीडी शर्मा और भूपेन्द्र सिंह को चाही गई राहत नहीं दी।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि तीनों के खिलाफ बेलेबल वारेंट की ज़रुरत नहीं है, लेकिन ये तीनों नेता अपने वकीलों के साथ ट्रायल कोर्ट में पेश हों। बता दें कि अपने खिलाफ मानहानि का मामला खारिज करने की शिवराज, वीडी और भूपेन्द्र सिंह की मांग हाल ही में जबलपुर हाईकोर्ट ने भी खारिज कर दी थी। जिसके बाद तीनों ने सुप्रीम कोर्ट की शरण ली है। विवेक तन्खा ने तीनों नेताओं पर ओबीसी विरोधी होने के बयान पर मानहानि का दावा लगाया था।

बहरहाल सुप्रीम कोर्ट के आदेश से अब साफ है कि शिवराज सिंह चौहान, वीडी शर्मा और भूपेन्द्र सिंह को ट्रायल कोर्ट के पिछले आदेश के मुताबिक कोर्ट में पेश होना पड़ेगा।

उज्जैन में पटाखा दुकानों में लगी आग

आगर रोड स्थित सामाजिक न्याय परिसर में की घटना, बाइक सहित दो दुकानें खाक

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन में बीती रात करीब दो बजे आगर रोड स्थित सामाजिक न्याय परिसर में लगी पटाखा दुकानों में आग लग गई। आग की सूचना पर पहुंची फायर ब्रिगेड ने आग पर तत्काल काबू पालिया। लेकिन तब तक दो पटाखा दुकानें और एक बाइक जलकर ख़ाक हो चुकी थी।

दिवाली के मौके पर लगी पटाखा दुकानों में से कुछ दुकानदार छोटी दिवाली (देवउठानी एकादशी) पर्व तक दुकानें संचालित कर रहे थे। मंगलवार को लोग खरीदारी करने आते इससे पहले देर रात दुकानों में आग लग गई। फायर ब्रिगेड कर्मी अंकित राजपूत ने बताया कि सोमवार-मंगलवार की दरमियानी रात दो बजे आग की सुचना पर पहुंची टीम ने जल्द ही आग पर काबू पा लिया। सम्भवतः आग शॉर्ट सर्किट की वजह से लगी है।

शिव अभिषेक के साथ शुरू हुआ जन्मशताब्दी समारोह

पद्म विभूषण स्व. सुंदरलाल पटवा की जन्म जयंती पर सुल्तानपुर, औबेदुल्लागंज में हुए विभिन्न कार्यक्रम

रायसेन। पूर्व मुख्यमंत्री पद्म विभूषण स्व. सुंदरलाल पटवा के जन्म शताब्दी वर्ष में सोमवार को उनकी जन्म जयंती पर जिले में विभिन्न आयोजन सम्पन्न हुए पूर्व मंत्री भोजपुर विधायक सुरेंद्र पटवा एवं भाजपा नेता कार्यकर्ताओं की मौजूदगी में सुबह भोजेश्वर महादेव के अभिषेक के साथ जन्म शताब्दी समारोह की शुरुआत हुई। इसके उपरांत सुल्तानपुर में स्व सुंदरलाल पटवा की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं श्रद्धांजलि का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। औबेदुल्लागंज में शहीद स्मारक का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर नेताओं एवं कार्यकर्ताओं ने स्व पटवा को याद करते हुए अपने संस्मरण सुनाए।

सांसद शिवराज ने अपने गुरु को किया याद

रायसेन विदिशा संसदीय क्षेत्र के सांसद शिवराज सिंह चौहान ने स्व पटवा को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए सोशल मीडिया पर अपने भाव व्यक्त किए। सांसद श्री चौहान ने कहा कि वह मेरे लिए गुरुतुल्य थे। उनका सारा जीवन भारत माता के चरणों की सेवा करते गुजरा है। जनसंघ और फिर भारतीय जनता पार्टी की जड़ें मध्यप्रदेश में जमाने में उनका अतुलनीय योगदान रहा है। वह सही अर्थों में प्रदेश की जनता के दिलों पर राज करते थे। शिवराज ने अपने भाव में बताया कि वह जन जन के नेता थे। उन्होंने अपने पैरों से अविभाजित प्रदेश को नापा था और पदयात्रा कर जनता को जोड़ा था। प्रशासनिक क्षमता के धनी पटवा जी ने पहले 29 दिन मुख्यमंत्री रहकर जो काम किया था, उसी से प्रभावित होकर 90 में फिर भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी। सांसद शिवराज सिंह चौहान ने अपने पोस्ट में लिखा कि वह भारत में किसानों की कर्ज माफी का कदम उठाने वाले पहले नेता थे। ग्रामीण सड़कों का जो विचार बाद में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना में बदला उसके जनक भी स्व. सुंदरलाल पटवा थे। मध्यप्रदेश उनके बिना अधूरा है। मैं उनके चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं।

1942 से 51 तक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ता व विस्तारक रहे स्व. पटवा

पूर्व मुख्यमंत्री स्व. पटवा 1942 से 51 तक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ता व विस्तारक रहे। सन् 1948 में संघ पर लगे प्रतिबंध के कारण उन्होंने 6 माह की जेल यात्रा भी की। 1951 से वे जनसंघ के संस्थापक सदस्य व सन् 1980 से भाजपा के संस्थापक सदस्य रहे। मध्यप्रदेश विधानसभा के सदस्य के रूप में 1957 व 1962 में मनासा से 1977 में मंदसौर, 1980 में सीहोर और 1985 से लेकर 1998 तक भोजपुर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने 20 जनवरी 1980 से 17 फरवरी 1980 तक 28 दिन के लिए फिर सन 1990 से 1992 तक 28 माह के लिए प्रदेश के मुख्यमंत्री का दायित्व संभाला। वे सन् 1997 से 1998 तक छिंदवाड़ा, और 1999 से 2004 होशंगाबाद सांसद रहे। सन 1962 से 67 तक स्व श्री पटवा विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष के मुख्य सचेतक भी रहे। वे नेता 1980 से 85 तक मप्र विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष रहे। उन्होंने 1980 से 1985 तक एवं 1986 से 90 तक दो बार प्रदेश भाजपा अध्यक्ष का दायित्व भी संभाला। सन् 1999 से 2001 तक वे अटल सरकार में केन्द्रीय पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री रहे। स्व पटवा ने 1984 में 2200 किमी की पदयात्रा जगदलपुर से झाबुआ तक की। वर्ष 1994 में राजगढ़ जिले के ग्रामीण अंचल की पदयात्रा भी स्व श्री पटवा ने की। 28 दिसम्बर 2016 को उन्होंने नश्वर देह त्यागी। 13 अप्रैल 2017 को मरणोपरांत उन्हें पद्मविभूषण से सम्मानित किया गया।